स्विस परिवार रॉबिंसन

जोहन डेविड वाईस

इंडियन प्रेस
1961

इंडियन प्रेस, किशोर सीरीज़

स्विस परिवार का राबिन्सन्

स्विटज़रलैंड के प्रसिद्ध लेखक के उपन्यास Swiss Family Robinsion का हिंदी अनुवाद

अनुवादक

श्री देवेन्द्रकुमार शुक्ल

सम्पादक

डा० नवलबिहारी मिश्र, बी० एस-सी०, एम० बी० बी० एस०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस (पब्लिकेशन्स), प्राइवेट, लिमिटेड

इलाहाबाद

१९६१

प्रकाशक
बी० एन० माथुर,
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस), प्राइवेट, लिमिटेड,
इलाहाबाद।

मुद्रक
अमलकुमार बसु,
इंडियन प्रेस, (प्राइवेट) लिमिटेड,
वाराणसी-शाखा।

अध्याय १

लगातार छः दिनों तक तूफान का प्रकोप रहा। फिर भी उसकी भयंकरता घटने के स्थान पर बढ़ती ही जाती थी। तूफान की भँवर में हम लोग अपने मार्ग से भटककर दक्षिण पूर्व की ओर बह चले थे। उस समय पर अपनी स्थिति का अनुमान तक करना असम्भव जान पड़ रहा था।

तूफान के भयंकर थपेड़ों से जहाज के पाल चिथड़े-चिथड़े हो गये थे उसमें कई स्थान पर छेद हो गये थे और उसमें पानी आ रहा था। यात्रियों और माझियों ने अपनी रक्षा ईश्वर पर छोड़ दी थी। मेरे चारों बच्चे अपनी माता के साथ खड़े काँप रहे थे। उनसे मैंने कहा :—"मेरे बच्चो! ईश्वर हम लोगों की रक्षा कर सकता है। परन्तु यह तभी संभव है जब हम लोगों पर कृपा करने की इच्छा हो। हम सब अपने को ईश्वर के आधीन समर्पित कर दें। यदि उसकी ऐसी ही इच्छा होगी तो स्वर्ग में मिलेंगे।"

मेरी स्त्री रो रही थी। मेरे इन शब्दों से प्रभावित होकर साहस करके अपने आँसू पोंछ डाले जिससे बच्चे हतोत्साह न हों। उसके बाद घुटने टेक कर हम ईश्वर की वंदना करने लगे। अचानक ही जहाज के लोगों ने 'जमीन, जमीन' का शोर किया। उसी समय

जहाज को इतना भारी झटका लगा कि उसकी लकड़ियाँ चरचराने लगीं। वायु के प्रबल झकोरों से लहरों के थपेड़े ऊपर आने लगे। ऐसा जान पड़ने लगा कि जहाज दो चट्टानों के बीच में चला गया है।

"सर्वनाश! नावें उतारो।" किसी ने निराश स्वर में चिल्ला कर कहा। संभवत: यह आवाज कप्तान की थी इसने हम लोगों पर वज्र पात सा किया। चिल्लाते हुये बच्चे मेरी गोद में आ गिरे मैंने उनको सान्त्वना देने का भरसक प्रयत्न किया और कहा :— "शान्त रहो मेरे बच्चो! शान्त रहो। ईश्वर हम लोगों को इस दुर्घटना को सहने की शक्ति दे। मैं स्वयं ऊपर जा रहा हूँ और देखूँगा कि क्या बचाव का कोई ढंग शेष नहीं है।"

बड़ी कठिनाइयों के बाद जब मैं जहाज के डेक पर पहुँचा तो देखा परिस्थिति उतनी बुरी नहीं जितना मैंने सोची थी। जहाज से किश्तियाँ उतारी जा चुकी हैं और उन पर नाविक बैठकर दूर जा चुके हैं केवल एक किश्ती शेष थी जिसको उतारने का प्रयत्न किया जा रहा था यह देखकर मुझे दु:ख अवश्य था कि जाने वालों को हम लोगों का स्मरण भी न था।

मैंने उच्च स्वर से पुकारा परन्तु वायु के झकोरों ने तथा सागर की उत्तंग तरंगों के गर्जन ने मेरी आवाज उन तक पहुँचने न दी मैं उस टूटे हुये जहाज पर ही छोड़ दिया गया।

हमको यह जानकर कुछ सान्त्वना मिली कि जहाज के आगे का भाग जल से ऊपर कुछ उठा हुआ है और हमारे कमरे की पहुँच के बाहर है। इस तूफान में भी थोड़ी दूर पर एक उजाड़ नीचा तट दिखाई पड़ रहा था। एक बार मुझे फिर हिम्मत हुई। मैं अपने परिवार के पास वापस आया और उनसे कहा :—"साहस न छोड़ो जहाज का कुछ भाग अब भी पानी में डूबा नहीं है

अवश्य ही कल समुद्र का चढ़ाव कुछ कम हो जावेगा और हम लोग किनारे पहुँच सकेंगे।"

मेरी बात से बच्चों का डर कम हो गया। मेरी पत्नी ने सब बातें सुनकर कहा :—"हमको यह भयानक रात तो यहीं काटनी है इसके लिये हम लोगों को कुछ खा पी लेना चाहिये।"

रात्रि हो आयी। वह भयानक तूफान और भी तीव्र होता जा रहा था प्रत्येक क्षण हम लोगों को यह भय था कि किसी भी समय जहाज के टुकड़े-टुकड़े हो सकते हैं।

मेरी पत्नी ने कुछ भोजन तैयार किया। बच्चों ने उसको खा लिया और अपने-अपने बिछौने पर सो गये। इसके पश्चात् मैं पत्नी के साथ भविष्य के विषय में बातचीत करने लगा। मेरा सबसे बड़ा पुत्र फ्रिट्ज अभी तक नहीं सोया था। वह इस शोच-नीय गंभीर परिस्थिति को समझ चुका था। हम लोगों की बात चुपचाप सुन रहा था। उसने कहा :—"पिताजी! यदि माताजी और बच्चों की सुरक्षा का कोई उपाय हो जाय तो हम आप तैर कर भी पार हो सकते हैं।

मैंने कहा :—"तुम्हारा विचार बड़ा ही अच्छा है हम लोग अवश्य प्रयत्न करेंगे। जहाज पर कितने ही ढोल और खाली पीपे हैं इनकी सहायता से हम अपना मतलब बना सकते हैं।"

इन तीनों ने घूम-घूमकर तमाम आवश्यक सामग्री, चाकू, लोहा तथा चकमक पत्थर तथा कुछ रस्सियाँ आदि भी पेटियों में एकत्र कीं। फ्रिट्ज बहुत रात गये श्रमित होकर सोने चला गया था। हम पति-पत्नी ने सारी रात ईश्वर की वंदना में ही व्यतीत कर दी।

सबेरा होते-होते हम लोगों को एक नया जीवन मिला। कारण कि तूफान समाप्त हो रहा था। डेक पर जब गया और देखा कि हवा का वेग घटता जा रहा था—सागर का जल भी नीचा होता जा

रहा था। रक्तवर्ण सूर्य वृत्ताकार रूप में उदय हो रहा था तथा क्षितिज भी तीव्रता के साथ निर्मल होता जा रहा था।

मैंने पत्नी और बच्चों को डेक पर बुलाया। उन्होंने आकर देखा कि जहाज पर केवल हम ही लोग थे। बच्चे अकेले के कारण चिल्ला पड़े :—"मल्लाह कहाँ हैं? वे कहाँ चले गये? अब क्या होगा और कैसे बचेंगे?"

मैंने कहा :—"मेरे बच्चो! वे लोग अपना कर्तव्य छोड़कर भाग गये। उन्होंने हमारी रक्षा पर कोई भी ध्यान न दिया। परन्तु जो सबका रक्षक है उसने हम लोगों की रक्षा की है। हमको ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिये जो अभी तक हमें नहीं भूला है।"

फ्रिट्ज ने उत्साहित होकर कहा :—"मैं तो तैरकर पार हो सकता हूँ।" अर्नेस्ट उससे छोटा था वह इस पर सहमत न हुआ। उसने कहा :—"एक छोटी किश्ती बनायी जाय।" मैंने समझाया एक तो किश्ती बनाने में समय अधिक लगेगा और दूसरे यह सब सामग्री छोटी नाव पर कैसे जायगी।"

अर्नेस्ट बारह वर्ष की अवस्था का लड़का था। परन्तु आलसी तथा कायर था। इसीलिये उसने तैरने की योजना का विरोध किया।

हम लोग डेक पर चारों ओर देखने लगे। कि कोई वस्तु हमारे उपयोग की है अथवा नहीं। सब लोग कुछ न कुछ खोजने में लग गये। मैं गोदाम में गया और वहाँ की आवश्यक वस्तुयें साथ में ले जाने के लिये एकत्रित करने लगा।

फ्रिट्ज जहाज के शस्त्रालय में गया और बंदूकें और पिस्तौलें, बारूद और गोलियाँ साथ में ले जाने के लिये एकत्रित करने लगा अर्नेस्ट ने बढ़ई का कार्य सँभाला।

सबसे छोटे छः वर्ष के छोटे बच्चे फ्रैंक ने मछलियों के काँटों का बक्स ढूँढ़ निकाला। फ्रिट्ज और अर्नेस्ट उसको चिढ़ाने लगे परन्तु मैंने मना कर दिया। मैंने उसकी बुद्धि की प्रशंसा की

क्योंकि सम्भव है कि हम लोगों को मछलियाँ पकड़कर जीवन निर्वाह करना पड़े।

मेरे तीसरे मेधावी होनहार पुत्र जैक की आयु दस वर्ष की थी। कप्तान के कमरे का द्वार खोलकर उसमें जा पहुँचा। उस कमरे में उसे दो कुत्ते मिले जो उसे देखकर दुम हिलाने लगे।

उसी समय मेरी पत्नी ने मुझसे आकर कहा :—"कि जहाज में एक गाय, एक गधा, दो बकरियाँ, छ: भेड़ें, एक सुअर को बच्चा सहित देखा है। उसने उन्हें जीवित रहने भर को केवल खाना और पानी दिया। इन दीन पशुओं ने दो दिवस से कुछ नहीं खाया था। बच्चों ने कहा:—"यह कुत्ते तट पर शिकार करने में सहायता देंगे।"

मैंने उत्तर दिया :—"तुम यहाँ तक ठीक हो। किन्तु तुमने यह विचार नहीं किया कि हम लोग भूमि तक पहुँचेंगे कैसे ?"

उन्होंने उत्तर दिया:—"अच्छा हम लोग नाँद में बैठकर पार हो जायेंगे। तालाब में अक्सर यह खेल खेला है।"

मैंने हँसकर कहा: —"बहुत ठीक। कभी-कभी बच्चों के मुँह से भी योग्यता की बात निकल जाती है।"

हम लोग कुल्हाड़ी और कीलें लेकर काम में लग गये। टीन के बड़े-बड़े ढोलों को बीच से काट दिया और इस प्रकार से आठ नादें तैयार हो गईं जिन्हें एक में बाँधकर शान्त समुद्र में कुछ दूर तक खेकर ले जायी जा सकती थीं। परन्तु जब यह बेड़ा बनकर तैयार हो गया तो देखा गया कि यह इतना भारी था कि हम सब मिलकर इसको उठाकर पानी में न उतार सके।

फिट्ज और जैक ने एक लकड़ी का लट्ठा नीचे डाल कर उसको स्थान से खिसकाना प्रारंभ किया। एक शिरा को रस्सी से बाँध-कर जब खींचा गया तो पानी तक ले जाने में कोई बाधा न रह गई।

इतना सब करते-करते मैंने देखा कि सायंकाल निकट आ रहा था। अतः हम लोगों को फिर भी एक रात्रि उस टूटे जहाज पर बिताने के लिये बाध्य होना पड़ा। शीघ्र ही कुछ भोजन तैयार कर लिया गया और उसके पश्चात् सबने, पानी में उतरने लायक बच्चों ने कपड़े पहन लिये। बच्चों को तो इसमें बड़ा मजा आया पर मेरी पत्नी ने कुछ हिचकिचाहट अनुभव की। पर आवश्यकता देखकर उसने भी स्वीकार किया। मैंने उसके इस वेष की प्रशंसा की तथा आश्वासन देकर सोने के लिये विदा करते हुये कहा—"कि कल तक सब ठीक हो जायगा। उस रात्रि में कोई घटना न घटी।"

अध्याय २

सवेरे जब हम जगे तब भी हमारी चिन्ताओं में कमी न थी। प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद मैंने अपने बच्चे से कहा:—"हम लोग अब ईश्वर पर भरोसा करके जा रहे हैं और कहीं न कहीं सुरक्षा का स्थान ढूँढ़ लेंगे। पहले हमको इन दीन पशुओं को खिलापिला देना चाहिये। कई दिनों के लिये भोजन उनके लिये रख देना ठीक होगा। जब भूमि पर पहुँच जायेंगे तो इनकी रक्षा का प्रबन्ध कर लेंगे।

यदि तुम लोग तैयार हो तो द्वीप पर ले जानी वाली सभी वस्तुएँ एकत्रित करें।"

सबसे पहले हमने बन्दूकें, बारूद, तीन पिस्तौलें, कुछ बारूद तथा गोलियाँ तैयार करने का साँचा बेड़े पर रक्खा। फिर सबने एक-एक झोले भोजन-सामग्री भर ली। मैंने एक पात्र, कुछ गोश्त, विस्कुट, चाकू तथा मछली पकड़ने की बंसी भर ली। एक तंबू भी रख लिया। कुछ वस्तुएँ मुझे विवश होकर वहीं छोड़ देनी पड़ीं।

हम लोग दैव के सहारे बेड़े पर चढ़े और यात्रा के लिये तैयार हुए। उसी समय मुर्गियों की दुख भरी ध्वनि सुनाई पड़ी। मैंने विचार किया इन मुर्गियों को साथ लेना अच्छा होगा। कुछ बतखें और कबूतर साथ ले लें। "क्योंकि यदि हम उनको न खिला सकें तो वे ही हमें खिलायेंगे।" इसलिये दस मुर्गियाँ दो बतखें, कुछ कबूतर साथ ले लिये। तब तक एक बड़ा झोला लिये हुए मेरी पत्नी दिखाई दी। साथ में छोटा बच्चा फैंक भी था उसने झोला बाद में रख दिया। मैंने उस ओर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया।

मैंने बेड़े की रस्सी काट दी और वह भूमि की ओर चल पड़ी। ज्वार पहले से अब आधा रह गया था। पृथ्वी थोड़ी ही दूर पर दिखलाई पड़ रही थी बच्चे उसे ध्यान से देखने लगे। और उत्कंठित होने लगे परन्तु अधिक समय तक उनका प्रयास व्यर्थ ही रहा।

बेड़ा पहले तो दूसरे स्थान पर चक्कर काटने लगा, अन्त में मैंने उसे चलाने का ठीक तरीका जान लिया। बेड़े की पहली नाद में पानी दूसरी में छोटा फ्रैंक और तीसरी में फ्रिट्ज थे। मध्य की दोनों नादों में बंदूक आदि सामग्री थी। अन्य में भोजन-सामग्री आदि थी। छठीं नाँद में जैक था तथा सातवीं में अर्नेस्ट। हम में से प्रत्येक तैरने के लिये कमर में खाली बोतलें बाँधे हुए था। कुत्ते बेड़े पर नहीं आ सकते थे इसलिये वे साथ-साथ तैरने लगे। उनमें से एक अंग्रेजी कुत्ता था और दूसरा स्पेन की नस्ल का था।

समुद्र शीघ्रता के साथ शान्त होता जा रहा था। आकाश बादलों से रिक्त हो रहा था और सूर्य का प्रकाश तेज पड़ गया था। ज्वार के बहाव के साथ हमारा बेड़ा सुगमता के साथ बहता चला जा रहा था। हम लोग हाथ जोड़कर ईश्वर की उपासना में लग गये।

एकाएक तट दिखलाई पड़ने लगा। हम लोगों को इस तट पर कुछ नवीनता का आभास होने लगा। फ्रिट्ज की भी दृष्टि तीव्र थी। वह ताड़ आदि वृक्षों का अन्तर बतलाने लगा। अर्नेस्ट पेटू था। नारियल देखकर प्रसन्न होने लगा। उसने कहा कि यह उन नारियलों से बड़े और अच्छे हैं जिन्हें उसने योरोप में देखा था।

छोटा बच्चा जोर से चिल्लाया—"कितने बढ़िया होंगे।"

बच्चों में यह बातचीत हो रही थी कि कप्तान की (दूरदर्शक) दूर्बीन लाना भूल जाने के लिए मैं पछताने लगा। जैक ने अपनी जेब से एक छोटी सी दूर्बीन निकालकर दी। मैंने उसकी सहा-

यता से दूरी तक भूमि देखकर ठीक जगह पर बेड़ा लगाने का विचार किया।

किनारे-किनारे बत्तखों आदि के चलने के चिह्नों के सहारे से मैं किश्ती लेकर चला और वक्र-तट नीचा तथा जब उतरने के योग्य था वहीं पर बेड़ा रोक दिया। सभी जो कोई भी तैरने योग्य थे कूद पड़े केवल फ्रैंक को सहायता देनी पड़ी।

फ्रैंक चिल्लाया—"पिता जी नारियल"

उन्होंने मुस्कराकर उत्तर दिया—"हाँ तुम एक-एक करके नारियल ले सकते हो।"

उसने तालियाँ बजाते हुए कहा:—"मैं बहुत खुश हूँ।" मेरी पत्नी ने उसे गले लगा लिया उसकी आँखों से आँसू टपक पड़े। फ्रैंक की प्रसन्नता देख सभी को आनन्द हुआ।

कुत्ते भूमि पर कूदकर भूँकने लगे, बत्तखें, मुर्गियाँ खुश हो गयीं। तमाम छोटी-छोटी समुद्री चिड़ियाँ हम लोगों के आस-पास उड़ने लगीं।

मेरा पहला कर्तव्य सर्वशक्तिमान ईश्वर के समक्ष झुककर उसकी आराधना करना था जिसने मेरी सब प्रकार से रक्षा की।

मैंने अपने बच्चों को गले लगाया। पत्नी ने मधुर मुस्कान के साथ कहा: ईश्वर बड़ा कृपालु है।"

सबसे पहले मैंने रात्रि व्यतीत करने के लिए उचित स्थान ढूँढ़ा। एक तम्बू लगाकर रस्सी पर दूसरा ताना छोड़ करके उसके सिरे नीचे खूँटियों से बाँध दिये। फ्रिट्ज ने एक ओर भारी पत्थर रखकर तम्बू का एक सिरा दबा दिया और दूसरी ओर रात्रि में स्वच्छ वायु प्राप्त करने के लिए खुला छोड़ दिया।

उसके बाद मैंने बच्चों से कहा कि वे अधिक से अधिक सूखी घास एकत्रित करें। उसी पर हमारा बिस्तर लगने लगा। उसी समय मैंने एक अँगीठी भोजन के लिए तैयार कर ली। पत्थरों

और कुछ सूखी लकड़ी के खण्डों की सहायता से आग तैयार कर ली।

मेरी पत्नी ने उस अँगीठी पर एक जल से भरा हुआ पात्र रख दिया। और शीघ्र ही पत्नी ने छोटे फ्रैंक की सहायता से सायंकाल का भोजन तैयार कर लिया।

सभी जो इसी बीच में फ्रिट्ज बन्दूकें लेकर नदी के तट की ओर चल दिया। अर्नेस्ट ने सोचा कि इस उजाड़ प्रदेश में शिकार कहाँ? अतः वह समुद्र के किनारे-किनारे चल दिया। जैक सीपों की खोज में चला। मैं सोच ही रहा था कि क्या नाव नदी में हल्का बोझा लेकर चल सकती है अथवा नहीं। इतने में जैक के चिल्लाने की आवाज मेरे कानों में पड़ी, मैं कुल्हाड़ी पकड़े हुए उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़ा। मैंने देखा कि वह घुटनों तक पानी में घुसा खड़ा था। और उसे झींगा मछली ने पकड़ रक्खा था। पिता जी, पिता जी, कहकर वह चिल्ला रहा था। मुझको एक भयंकर जीव ने पकड़ लिया है।" उसकी ध्वनि में भय का सम्मिश्रण था।

"अच्छा है, उसको यहाँ ले आओ।"

"मैं नहीं आ पाऊँगा उसने मुझको पकड़ लिया है।"

"तो मैं क्या करूँ?" हँसते हुए मैंने कहा। मैं सोच रहा था कि आक्रमणकारी इस समय कहाँ। फिर भी मैं उसकी सहायता के लिए तुरन्त ही दौड़ पड़ा।

ज्योंही जल में घुसा मत्स्य अपनी रक्षा के लिए भागा।

उसके भागने से जल में लहरें उत्पन्न हो रही थीं। उन्हीं को लक्ष्य करके मैंने केकड़े को पकड़ लिया। कुल्हाड़ी का वार करके और बाहर खींचकर डाल दिया। जैक से मैंने उसे ले चलने को कहा।

जैक उसको पकड़ कर उसकी मा के पास ले चलने को उत्सुक था। उसने उसे दोनों हाथों में कस कर पकड़ लिया। केकड़े में अभी जान थी। उसके प्रहारों से फ्रैंक फिर चिल्लाने लगा। किन्तु जब उसने उसको हँसते हुए देखा तो एक पत्थर उठाकर उसे निर्जीव कर दिया और साहस कर-करके उसको उसकी मा तक उठा ले गया।

"फ्रिट्ज कहाँ है, ? माँ, माँ! फ्रैंक! अरे अर्नेस्ट! मैंने एक केकड़ा पकड़ा है। देखो फ्रैंक! तुम दूर रहना नहीं तो यह तुमको काट खायगा।" वे सबके सब इसके विशाल शरीर का निरीक्षण करने लगे।

जैक ने कहा, "देखो यह कितना बड़ा है। इसने अपने पंजों से मुझको कस कर पकड़ लिया था। मैंने सोचा यह काट कर मेरे दो टुकड़े कर डालेगा। लेकिन तब तक पिताजी ने सहायता कर दी।"

मैंने कहा, "ओ डींग मारने वाले छोटे बच्चे। यदि मैं तुम्हारी सहायता के लिये न पहुँच जाता तो तुम उसके शिकार बन जाते। अतः तुम्हारी कीर्ति वास्तविकता के आधार पर नहीं खड़ी है।"

अर्नेस्ट उसको देख कर उत्कंठा से कहा कि इसे उसी बर्तन में रख दो जिसमें गोश्त बन रहा है। परन्तु उसकी मा ने इन्कार करके, अलग ही बनाने का निश्चय किया।

मैंने जैक को उसी मछली का पंजा पुरस्कार में देने का वादा किया।

इसी बीच में अर्नेस्ट ने उसकी खोज बतलाई। लेकिन कहा वह खाने की वस्तु है परन्तु मैं पैर भींगने के डर से ला न सका।

जैक ने कहा, "वहाँ कोई खास बात नहीं है" मैंने भी देखा है। वे सीपें हैं। सीप मुझे अच्छे नहीं लगते। मेरा शिकार देखो।"

अर्नेस्ट ने कहा, "नहीं कौन जानता है वहाँ घोंघे भी हो सकते हैं। वहाँ अधिक गहराई भी नहीं है।"

मैंने कहा, "अच्छा मेरे छोटे से दार्शनिक भी जाओ। और को ले आओ। वे हम लोगों के सायंकाल के भोजन काट देंगे। तुम उनको ले क्यों नहीं आये ? इस आपत्ति काल में प्रत्येक को जितना संभव हो सके उपयोगी होना चाहिये। तुम पैर भींगने के डर से क्यों नहीं ले आये ? देखो, इतनी ही देर में धूप ने हमारे और जैक के वस्त्र सुखा दिये।"

अर्नेस्ट ने कहा, "मैंने पहाड़ की चट्टानों के बीच कुछ नमक देखा है जान पड़ता है कि वह समुद्र से वहाँ इकट्ठा हो गया है।"

"बिल्कुल ठीक है" मैंने कहा:—"परन्तु तुम यहाँ बातें बनाने के बजाय उसे क्यों नहीं लाये" ?

अर्नेस्ट एक झोला भर ले आया परन्तु उसमें इतनी मिट्टी मिली हुई थी कि वह बेकार था। मैं डाटने लगा परन्तु उसकी माँ ने संकेत किया और वह उस नमक को सोते के पानी में साफ कर लाया। नमक बनते हुए भोजन में छोड़ दिया गया।

"समुद्र के जल से क्या नमक नहीं बन सकता ?" जैक ने पूछा—

अर्नेस्ट ने देखा कि यह बहुत कड़ुआ होता है।

मैंने उस कथन की पुष्टि करते हुए कहा कि उसमें ऐसे पदार्थ मिले रहते हैं जो रवा तैयार करने पर ही दूर होते हैं।

तब तक मेरी पत्नी ने कहा:—"भोजन तैयार है किन्तु फ्रिट्ज वापस नहीं आया और हमलोग बिना चम्मच आदि के खाना खायेंगे कैसे ?

मैंने कहा, "कि यह तो सारस और लोमड़ी की दावत रही।"

अर्नेस्ट ने कहा, हम लोग नारियल के दो-दो टुकड़े काट कर उसको चम्मच की भाँति प्रयोग कर सकते हैं।

फ्रिट्ज ने कहा, "नारियल भी हमको ढूँढ़ना ही है। इसलिये कुछ उससे भी अच्छा क्यों न ढूँढ़ लें।"

"मैं जानता हूँ" अर्नेस्ट ने कहा:—"सीप की प्रार्थना क्यों न कर ली जाय ?"

"यह विचार अच्छा है" हमको चम्मच के लिये सीप ढूँढ़ लेनी चाहिये। जैक पानी में बगैर पैर भींगने के भय के बैठ गया और बड़ी-बड़ी सीपें निकाल कर अर्नेस्ट के सामने फेंकने लगा। फ्रिट्ज पैंट में हाथ डाले हुए टहलता आया।

"तुम कुछ नहीं पाया ?" मैंने पूछा, "बिल्कुल कुछ नहीं" उसने उत्तर दिया परन्तु तब तक जैक ने उसकी चोरी देख ली और कहा कि, "इसके पास सीपें हैं।" फ्रिट्ज ने गर्व की साँस लेकर बहुत सी सीपें मेरे सामने रख दीं। मैंने उसके इस कार्य की प्रशंसा की, परन्तु कहा कि "तुम झूठ क्यों बोले ? असत्य कभी मजाक में भी मत कहो। और न झूठी कहानी ही कहा करो क्योंकि यह भी झूठ बोलने में शामिल है।"

फ्रिट्ज बड़ा दु:खी हो गया।

उसने कहा कि नहीं, उस पर उसने कुछ नारियल देखे हैं। नदी के दूसरी तरफ बड़ा हरा-भरा चरागाह है। हम लोगों को इस सूखे और निर्जन स्थान में पड़ा रहना चाहिये।

"धैर्य धरो" मैंने कहा:—"सब कुछ धीरे-धीरे होगा।" कल हम लोग देखेंगे कि क्या कर सकते हैं ? यह बतलाओ क्या तुमने हमारे पिछले साथियों को देखा है। उसने कहा:—"नहीं वहाँ आदमी कोई नहीं दिखलाई पड़ता। केवल एक जीवधारी पशु देख पड़ता है। वह है सूअर जो समुद्र के तट तक घूम रहे हैं। परन्तु यह सूअर एक विभिन्न प्रकार की नस्ल के हैं। मैं उनको सूअर की भाँति कहने की अपेक्षा खरगोश की भाँति कहना उचित समझूँगा। कभी-कभी घास पर टहलते हैं और कभ-कभी सीधे बैठकर अगले हाथों से मुँह धोते हैं। कभी-कभी जड़ें खोदते हैं। मैं उसको जीवित ही कहना चाहता हूँ।

अर्नेस्ट ने कहा, "मैंने उस पशु को देखा है। वह सूअर नहीं है क्योंकि उसका चमड़ा कोमल है और इसके अतिरिक्त उसके सूअर जैसे दाँत भी नहीं हैं। मेरा विचार है कि यह वही पशु है जिसको हमलोग इतिहास में अगौली के नाम से पढ़ चुके हैं।

फ्रिट्ज ने चिल्लाकर कहा, "ओ हो इन प्रोफेसर साहब की बात सुनिये, परन्तु मुझे विश्वास है कि यह भूल रहे हैं।" मैंने कहा, "अर्नेस्ट ठीक कहता है। इतने उतावले न बना करो। मैं स्वयं इसका ज्ञान नहीं रखता लेकिन चित्रों में देखा है कि यह छोटे जंगली सूअर की भाँति का होता है और यह अमेरिका का पशु है। वृक्ष की खोह में रहता है और बड़ा ही घरेलू जानवर है। खाने में बड़ा जायकेदार होता है।

अब हम सब लोग अगौली के विषय में विवाद कर रहे थे तो देखा जैक चाकू से सीप खोलने का प्रयास कर रहा था। परन्तु वह सफल न हो रहा था। मैं उसके इस प्रयास पर हँसा और एक सीप अग्नि पर रख दी वह तुरन्त ही अपने प्रसरण गुण के कारण खुल गयी।

मैंने कहा, "बच्चो ! अब तुम उसको खा सकते हो। मैंने एक उठाकर खा ली। इस पर बच्चे आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगे। अर्नेस्ट ने एक बड़ी सीप दिखाकर रख दी थी। उससे वह चम्मच का काम लेने लगा।

मैंने कहा, "बड़े स्वार्थी हो"

उसने उत्तर दिया, "जहाँ से मैं लाया हूँ, ऐसी सीपें बहुत सी हैं।"

मैंने कहा, "यही तो कारण है कि मैं तुम पर दोषारोपण कर रहा हूँ कि तुम सदैव अपने लिये सोचते हो। इसलिये इसकी प्रतिकार में तुमको यह दण्ड दिया जायगा कि तुम्हारा भोजन कुत्ते को दे दिया जाय। अब तुम प्रतीक्षा करो।"

यह सुनकर उसने शान्त मुद्रा से अपने आगे का सब भोजन कुत्तों के सामने रख दिया, उन्होंने बड़े प्रेम से खाया। लेकिन कुत्तों का इतने भोजन से क्या होता था।

खाड़ी के दूसरी ओर कुत्तों की दृष्टि गई तो वे अगौली देखकर भूँकने लगे। और उस ओर दौड़ पड़े। बच्चों ने भी देखा। फ्रिट्ज ने अपनी बंदूक से कुत्ते पर इतनी जोर से वार किया कि बंदूक की नली टेढ़ी हो गई। इस भूल पर मैंने फ्रिट्ज को काफी डाटा कि आँखों में आँसू भर आये। उसके पिता ने भूल के दण्ड में कुत्तों को बिस्कुट खिलाने की आज्ञा दी। कुत्ते बिस्कुट खाने से पहले फ्रिट्ज के हाथ चाटने लगे तब फ्रिट्ज पश्चाताप करके कहने लगा कि हम इन छोटे पशुओं के प्रति कितने निर्दयी होते हैं।

मैंने उत्तर दिया, "मेरे प्यारे बच्चे, क्रोध सदैव शैतान होता है, इसको कभी मत भूलो।"

हम लोगों का भोजन समाप्त हुआ। सूर्य अस्ताचल, की ओर चले गये। बतखें और चिड़ियाँ चारों तरफ आकर एकत्रित होने लगीं। मेरी पत्नी ने अनाज के कुछ दाने झोले में जहाज से ले आई थीं। इन पक्षियों के आगे बिखेर दिया। मैंने उसकी बुद्धि की प्रशंसा की। कबूतर चट्टानों के छेदों में चले गये। बतखें नरकुल आदि में जा छिपीं। हम लोग बिस्तर पर चले गये। पहले सब लोगों ने झुककर संध्या-काल की ईश्वर की प्रशंसा की यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि वहाँ संध्या हुई ही नहीं। हमें एकाएक रात हो गई।

मैंने कहा, "यह एक विचार करने की बात है कि हम लोग भूमध्य रेखा से अधिक दूर नहीं हैं।"

संध्या वातावरण में सूर्य की किरणों विकीर्ण होती हैं। यहाँ किरणें एक दम सीधी पड़ती हैं। इस लिये विकीर्ण कम होता है।

वे दो खण्ड जो भूमध्य रेखा के इधर-उधर कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में है विषवत रेखा की अपेक्षा शीघ्र ही अँधेरे में आ जाते हैं।

यद्यपि दिन काफी गर्म था पर रात्रि में ठंढ थी। पहले मेरी स्त्री और बच्चे सो गये। फिर मैं भी निद्रा देवी की गोद में पहुँच गया।

भूमि पर यह मेरी प्रथम रात्रि बिना किसी दुर्घटना के व्यतीत हो गई।

— —

अध्याय ३

भोर की ध्वनि ने हमको प्रातःकाल ही जगा दिया। मैंने अपनी पत्नी की राय लेकर आज की दिनचर्या निश्चित की। क्या जहाज पर के हमारे कोई साथी बचे हैं ? सबसे पहले हमने उन्हीं की खोज का निश्चय किया। यह भी सोचा गया कि इसके बाद उन्हीं के स्वामी निवास-स्थान तथा भावी कार्य-क्रम पर विचार किया जायगा।

मेरी पत्नी सहमत हो गई। इस यात्रा में परिवार के सब लोगों को भाग लेने की आवश्यकता न थी। इसके लिये पत्नी, अर्नेस्ट और फ्रैंक के साथ वहीं ठहरी रही तथा फ्रिटज को साथ लेकर मैंने यात्रा की तैयारी की। फ्रिटज को इसलिये साथ लिया क्योंकि वह बड़ा ही दृढ़ और साहसी था।

मैंने उससे शीघ्र ही प्रातःकाल का नाश्ता तैयार करने को कहा, और स्वयं बच्चों को जगाने लगा। मैंने जैक से उसकी झींगे के बारे में पूछा जिसे वह छिपा रक्खा था। वह उसे निकाल लाया।

मैंने कहा, "वाह !" तुम अपनी स्वार्थ की बातों में बड़े होशियार बन जाते हो वास्तव में वही लोग प्रसन्न रहते हैं जो अवसर आने पर दूसरों को लाभ पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। जो हो, अब झींगे के पंजे हम लोगों की यात्रा के लिये रख दो।

वे प्रसन्न होकर बकरी के बच्चों की भाँति कूदने लगे। "ओ हो ! घूमने जायेंगे, घूमने जायेंगे। अब हम सब साथ-साथ जायेंगे।"

मैंने कहा, "इस समय सबका जाना असंभव है। हम और फ्रिट्ज किसी भी खतरे का सामना कर सकते हैं परन्तु तुम नहीं। इसलिये तुम अपनी माँ के साथ यहीं रहो। मैं तुम लोगों की रक्षा के लिये कुत्ता और भरी हुई बन्दूक छोड़े जाता हूँ।

जैक ने शान्ति पूर्वक वह मछली हम लोगों के लिये रख दी। परन्तु अर्नेस्ट कहने लगा, "जैक मछली में क्या रक्खा है? हम राबिन्सन क्रूसो की भाँति इससे भी अधिक नारियल इकट्ठा करेंगे।

मैंने फ्रिटज से सामान रखने के लिये एक झोला तथा एक बंदूक और एक कुल्हाड़ी साथ में रखने के लिये कहा।

अपने साथ एक जल की बोतल और कुछ बिस्कुट रख लिये। तथा पिस्तौल साथ में ले ली।

मैं तैयार हो रहा था कि मेरी पत्नी ने आकर कहा, "नाश्ता तैयार है"। हम सबने साथ-साथ जलपान किया। फ्रिटज ने कहा कि धूप तेज होने के पूर्व ही हम लोगों को चल देना चाहिये। लेकिन मैंने कहा, "इतनी जल्दी न करो मैं एक बात भूल गया हूँ।"

फ्रिटज ने कहा, "क्या माता और भइया की कुशल ज्ञात करनी है।"

अर्नेस्ट ने कहा, "नहीं—हम लोगों ने ईश्वर की प्रार्थना नहीं की।"

मैंने कहा, "बिल्कुल ठीक। जिसकी कृपा के लिये हम जीवन भर ऋणी रहते हैं। उस ईश्वर को भूल जाने के लिये सदा तत्पर हैं। अब इससे अधिक किस अवसर पर उससे कृपा याचना करेंगे?" जब हम लोग प्रार्थना करने लगे तो जैक प्रार्थना में गड़बड़ करने लगा। मैंने जोर से डाट दिया और कहा, "इस प्रकार गंभीर बातों का मजाक उड़ाने की चेष्टा न करो। तुम्हारी इस धृष्टता का

दण्ड यह है कि तुम हम लोगों के साथ प्रार्थना नहीं कर सकते। दूर भाग जाओ।"

मैंने देखा कि जैक मेरी डाट से घबड़ा कर एकान्त स्थान पर ईश्वर के समक्ष झुककर रोता हुआ अपनी इस भूल की क्षमा-याचना कर रहा है। फिर हम लोगों के पास आया और मुझसे क्षमा माँगने लगा। मैंने उससे कहा, "ईश्वर की क्षमा पर विश्वास करो।" और उन बच्चों को माँ के साथ सावधानी से रहने की आज्ञा दी। फिर हम लोगों ने अपनी बन्दूकें ले लीं।

कुछ दूर तक हम सब साथ-साथ चले। जब पत्नी तथा अन्य बच्चों को वापस जाने का समय आया तब हमें अधिक खेद नहीं हुआ क्योंकि हम यह नहीं जानते थे कि इस अज्ञात देश में क्या-क्या भय उपस्थित हो सकेंगे। उन लोगों की बोली हमें तब तक सुनाई पड़ती रही जब तक कि नदी के कल-कल नाद ने उसमें बाधा नहीं पहुँचाई।

जब हम लोग एक चश्मे के निकट पहुँचे तो देखा उसका तट बड़ा ऊँचा था। नदी के पार लम्बी-लम्बी घास थी उससे होकर हम दोनों किनारे-किनारे फिर चल पड़े। पीछे से एक गुर्राने की आवाज सुनकर हम लोग भयभीत हो गये। फ्रिट्ज ने बन्दूक कंधे से लगाई। तब देखा कि घास चीड़ता हुआ मेरा कुत्ता था। जो कि हम लोगों से अलग होने के दुख से दौड़ आया था। मैंने अपने स्वामि-भक्त कुत्ते को बड़ा प्यार किया। और फ्रिट्ज की बड़ी प्रशंसा की जो कि बेवकूफी से बड़ी जल्दी गोली न छोड़ी थी। मैंने कहा, "तुमने देखा! मनुष्य की लालसायें कितनी भयंकर शत्रु हैं। कल क्रोध आज भय। कौन परिस्थिति अब उपस्थित हो जायेगी इसका अनुमान नहीं हो सकता।"

हम लोग इस प्रकार की गपसप करते हुये समुद्र तट पर आ गये। देश के प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन किये। चारों ओर अपने

जहाजी स्वयं दीपों के बहकर आने के लक्षण ढूँढ़ते रहे। तट पर की बालू में यह चिह्न ढूँढ़े किन्तु असफल रहा।

फ्रिट्ज ने कहा कि हम लोग बन्दूकों की आवाज करें यदि वह यहाँ कहीं शरण लिये पड़े होंगे, सुनकर समझ लेंगे।

मैंने कहा, "बात तो ठीक है। यदि हमारे साथी इस प्रकार से मिल सके। परन्तु यदि कहीं जंगली जातियाँ आवाज सुनकर एकत्रित हो जायेंगी तो बड़ा बुरा होगा।"

फ्रिट्ज ने कहा, "और इसके अतिरिक्त हम लोगों को उन व्यक्तियों की खोज में इतने कष्ट क्यों पड़े। उन्होंने हम लोगों को इतनी कठोरता के साथ त्याग दिया था।"

"मेरे बच्चो!" मैंने उत्तर दिया, "इसके बहुत से कारण हैं। पहली बात तो यह है कि मनुष्य का यह धर्म नहीं, बुराई के बदले बुराई का बदला दे। इसके अतिरिक्त वे लोग हमारे लिये समय पड़ने पर सहायक सिद्ध होंगे। और इन सबके बाद बात यह है कि उन लोगों को हमारी सहायता की आवश्यकता पड़ रही होगी। क्योंकि उन्होंने जहाज से अपने लिये कुछ भी नहीं लिया है।" इस पर फ्रिट्ज कहने लगा, कि "हम समुद्र तट पर उनके लिये कब तक यात्रा करते रहेंगे? चलिये हम लोग जहाज पर बन्द पशुओं की सहायता करें।

मैंने कहा, "जब किसी के सामने बहुत सी आवश्यकतायें एक साथ आवें तो सबसे बड़ी की पूर्ति पहले होनी चाहिये। छोटे पशुओं से मनुष्य का जीवन कहीं अधिक महत्त्व रखता है। इसलिये पहले उनकी सहायता का विचार होना चाहिये।"

धूप तेज होती जा रही थी। अतः हम दोनों एक छाया दार स्थान पर विश्राम के लिये रुक गये। पास ही एक छोटा चश्मा बह रहा था। भाँति-भाँति की चिड़ियाँ वृक्ष की टहनियों में झूल-झूलकर अपने मधुर कण्ठ से चहक रही थीं।

वृक्ष की शाखाओं पर बन्दरों को झूलते हुये देखकर तुर्क (कुत्ता) कूदने और भूँकने लगा। फ्रिट्ज उठकर उस दृश्य की ओर बढ़ा। उसके पैर भूमि पर पड़ी हुई किसी रेसेदार वस्तु से उलझ गये और वह गिर पड़ा। उसे उठाकर उसने पूछा। "यह किसी बड़े पक्षी का घोंसला तो नहीं है।"

मैंने हँसते हुये कहा, "घोंसला अरे यह नहीं पत्ता है।" परन्तु फ्रिट्ज ने कहा, "इसी प्रकार के घोंसले तो वृक्षों पर पक्षियों ने बना रक्खे हैं।"

मैंने कहा, "बिलकुल ठीक है! यह आवश्यकता नहीं कि प्रत्येक गोड़ वस्तु घोंसला हो। क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि नारियल के ऊपरी झिल्ली के भीतर रेसे होते हैं। यदि तुम इसे तोड़ोगे तो इसमें गरी दिखाई पड़ेगी।" फ्रिट्ज ने तोड़कर देखा। और कहा, "मैं पहले सोचता था कि नारियल के अन्दर दूध भरा रहता होगा।"

मैंने कहा, "कि तुम ठीक कहते हो यदि तुम अधपके नारियल का फल तोड़ो तो देखोगे कि उसमें दूध है परन्तु फिर धीरे-धीरे यह दूध सूख जाता है। और गरी रह जाती है।"

यदि पका नारियल भूमि पर गिरता है तो काल-क्रम से उसका अंकुर बाहरी आवरण देखकर भूमि में प्रविष्ट हो जाता है और नारियल का पौधा तैयार हो जाता है।"

नारियल के निचले भाग में देखो। तीन छिद्र दिखलाई पड़ते हैं। यहाँ आवरण अधिक घना नहीं है। और इस स्थान से इसमें आसानी से छेद किया जा सकता है।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही थी कि लड़का मेरे इस वक्तव्य को ध्यान से सुन रहा है और प्रकृति की रचना को समझने के लिये उत्कंठित है।

इधर-उधर फैली हुई लताएँ काँट-छाँट कर मैंने रास्ता बनाया। फ्रिट्ज निरन्तर प्रश्न पर प्रश्न करता जा रहा था और मैं उत्तर दे

रहा था। इस प्रकार प्रकृति के इतिहास की विशद व्याख्या होती जा रही थी।

फ्रिट्ज और हम, दोनों ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते थे, फ्रिट्ज का आश्चर्य भी बढ़ता जाता था। हम लोग दूध प्राप्त करने के लोभ से एक कच्चे नारियल की खोज में व्यग्र थे। अन्त में एक मिल ही गया। उसका पानी पीकर तथा गरी खाकर हम फिर ताजगी से आगे बढ़ चले। धीरे-धीरे हम लोग फिर तट पर आ गये।

फ्रिट्ज ने पूछा, "पिता जी वह किस चीज के वृक्ष हैं। जिससे तीव्र गंध आ रही है।"

"चलो हम देखें।"

निकट जाकर देखा वे लौंग तथा अन्य मसाले के वृक्ष थे। हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई कि इन्हें डालकर अपना भोजन अधिक स्वादिष्ट बना सकेंगे। तूँबे के फल से तश्तरी, प्याले और बोतलें बना लेंगे। जंगली लोग इन्हें पानी उबालने तथा खाना बनाने के काम में भी लाते हैं। फ्रिट्ज ने पूछा जंगली लोग इसमें भोजन कैसे बनाते हैं। क्या यह जल नहीं जाता ?"

नहीं। कारण यह है कि वे लोग इसको अग्नि के संपर्क में नहीं आने देते।

फ्रिट्ज ने कहा, "मेरी समझ में नहीं आया। क्या किसी प्रकार का जादू करते हैं क्या ?" मैंने उत्तर दिया, "नहीं, जादू या टोना कुछ नहीं।"

जो बात आदमी समझ नहीं पाता, उसको वह जादू अथवा टोना कहने लगता है।

"वे तूँबी को बीच से काटकर उसमें एक हत्था लगा लेते हैं। और फिर जिस चीज को पकाना चाहते हैं, पानी भरकर उसमें रख देते हैं। तब गरम किये हुए लाल-लाल पत्थर के टुकड़े डालते

जाते हैं जब तक भोजन पक नहीं जाता। और उस प्रणाली से फल को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचते।"

"उसने कहा कि मौका मिलने पर मैं भी ऐसा करके देखूँगा।"

मैंने कहा, "ठीक है। कोलम्बस के मित्रों की भाँति अंडों को उसकी कोर पर खड़े करने की कल्पना करो। कभी-कभी यह छोटी-छोटी बातें अनुसंधान में बड़ी कठिन प्रतीत होती हैं।"

फ्रिट्ज एक फल चाकू से काटने का प्रयत्न किया परन्तु उसके चाकू की धार पलट गई। उसने कहा, "यह देखने में बड़ा कीमती प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में बड़ा कड़ा है।" तब मैंने जेब से एक रस्सी निकाली और उसको फल के चारों तरफ लपेटकर चाकू के सहारे दो भागों में काट दिया।

फ्रिट्ज ने कहा, "इसकी बोतलें किस प्रकार तैयार की जाती हैं?" मैंने कहा कि एक सिरे पर सूराख करके तैयार कर लेते हैं। परन्तु कैसे करते हैं? उसकी गर्दन असली बोतल की भाँति कैसे बन सकती है?"

मैंने कहा, "कि कच्ची दशा में जंगली लोग उसको बाँध देते हैं। वह उसी बँधी हुई दशा में बढ़ता है और इस प्रकार बोतल का गला भी बन जाता है।"

फ्रिट्ज ने उस फल के चम्मच और प्याले बनाना प्रारम्भ किया। वह प्रसन्नता से बोला—"प्याले, तश्तरी!! क्या मा इनको देखकर प्रसन्न नहीं हो? फ्लैंक के लिए एक छोटी तूँबी ले ली।"

जब उसका काम पूरा हो गया, तो फ्रिट्ज ने एक बिस्कुट निकाला। थोड़ा सा गोश्त लिया और ताजा पानी लेकर कुत्ते को खिलाया। वह अपने छोटे स्वामी पर प्रसन्न हो गया और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उसके हाथ चाटने लगा।

चार घंटे लगातार चलने के बाद हम लोग एक छोटे से क्षेत्र में पहुँचे जो समुद्र से सटा हुआ था। इस क्षेत्र में एक विचित्र पहाड़ी थी। उस पर चढ़कर हमने देखा कि वह भूमि की माप लेने के लिए उपयोगी थी। इसकी चोटी से प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त रमणीक दिखलाई देता था।

समुद्र के तट पर प्रकृति सुन्दरी के हाथों से सजाये हुए वृक्षों की पंक्तियाँ बड़ी रमणीक थीं।

फ्रिट्ज ने कहा, "जगह तो रहने लायक है। जहाज के अन्य लोग भी अगर साथ होते तो बड़ा काम बनता पर आप और दाता जी के होने से हमारा काम कोई रुकेगा नहीं।"

"हम लोग आदम और हव्वा से तो अधिक संख्या में हैं। कौन जानता है कि हम लोग किस राष्ट्र के जन्म दाता बन जायँ।"

फ्रिट्ज उच्च स्वर से पिता जी, पिता जी कहकर मेरे कण्ठ से लिपट गया। बोला हम लोग अब आपसे और माता जी को साधारण भीगें माँग-माँगकर परेशान करेंगे। और जब बड़े हो जायेंगे तो आपकी किस्मत कठिनाइयों का सामना करेगी।

मैंने बच्चों को फिर गले लगाकर कहा, "ईश्वर तुम्हें धन्यवाद है कि तुमने मुझे ऐसा लड़का दिया।"

मैं ताड़ के वृक्षों के पास होते हुए लम्बी-लम्बी घास में चलने लगे। भय थी कि कहीं साँप आदि पर पैर न पड़ जायँ। इसलिए तुर्क (कुत्ते) को साथ रक्खा और घास में उगी हुई एक छड़ी तोड़ ली। तोड़ते समय हाथ में चिपचिपा सा द्रव लग गया। चखने पर मालूम हुआ जिसे हम घास कहते थे, गन्ना था। बार-बार चखकर देखने पर यह विश्वास दृढ़ होता गया।

मैं अपनी खोज फ्रिट्ज को नहीं बताना चाहता था कि यह आविष्कार स्वयं करें। ज्योंही वह आगे बढ़ने लगा मैं एक छड़ी

अपनी रक्षा के लिए तोड़ने को कहा। उसने गन्ना तोड़ा और उससे उसके दो टुकड़े कर दिये। उसके दोनों हाथ रस से भर गये। उसने उसको बिना कुछ कहे हुए चखकर देखा और बोला—"पिता जी यह ईख है। इसको चखिये। यदि कुछ गन्ने घर लिए चलें तो भाई और माता जी बड़े प्रसन्न होंगे।" एक गन्ने को तोड़कर वह चूसने लगा। यहाँ तक कि रस उसकी ठोंढ़ी से होकर बहने लगा। मैंने कहा—"फ्रिट्ज यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो इतनी जल्दी न मानता।" उसने कहा—"मैं बड़ा प्यासा था और रस स्वादिष्ट।"

मैंने कहा कि, "तुम्हारी प्यास एक शराबी की भाँति है। उसकी भी प्यास बढ़ती जाती है और वह शराब को स्वादिष्ट अनुभव करने लगता है।"

"कुछ गन्ने एकत्रित करके साथ क्यों न ले चलो ?"

मैंने कहा, "मुझे किसी प्रकार का एतराज नहीं परन्तु इतनी दूर तक ले चलने के लिए क्या यह बोझ नहीं हो जायँगे ?"

फ्रिट्ज ने अच्छे-अच्छे गन्ने छाँटकर एक बण्डल बना लिया। वृक्षों के एक कुंज में हम भोजन के लिए बैठ गये। वहाँ बन्दरों का समूह था। जो मेरे आने से डर गये। और कुत्ते के भूँकने से वृक्ष पर चढ़कर दाँत पीसने लगे।

फ्रिट्ज ने बन्दूक कंधे पर रख ली और गोली चलाना चाहता था कि मैंने रोक दिया, उनको हानि पहुँचाना उचित नहीं। यही बन्दर तुम्हारे लिए उपयोगी हो सकते हैं।

फ्रिट्ज ने आश्चर्य से कहा, "उपयोगी किस प्रकार ?"

मैंने कहा, "तुम देखोगे। अपने सिर का ध्यान रखना। यह हम लोगों को नारियल देंगे।"

मैंने कुछ पत्थर एकत्रित कर लिए और उन बन्दरों पर फेंकना शुरू किया। उन लोगों ने इसके उत्तर में ऊपर से नारियल फेंकना प्रारम्भ कर दिया।

फ्रिट्ज हँस पड़ा। और उसने बहुत से नारियल एकत्रित कर दिये। चाकू से नारियल के सिरे पर छिद्र करके दूध निकाल लिया और उसमें गन्ने का रस मिलाकर पिया जो कि अत्यन्त स्वादिष्ट प्रतीत हुआ।

तुर्क ने बची हुई मछली खाकर संतोष किया। मैंने कुछ नारियल लिये। फ्रिट्ज ने गन्ने का बोझ कंधे पर रक्खा। इस प्रकार हम दोनों परिवार का आनन्द लेने वापस चल दिये।

———

अध्याय ४

फ्रिट्ज को बोझा भारी लगने लगा। थक कर वह एक कंधे से दूसरे कंधे पर बराबर बदलने लगा। फिर इस बंडल को उसने बगल में दबाया। और अन्त में थोड़ी दूर बाद जमीन पर डाल कर खड़ा हो गया। हाँफते हुए कहने लगा, "मैं नहीं सोचता था कि एक गन्ने का बोझा इतना भारी होगा। मैं इसको घर अवश्य ले जाना चाहता हूँ ताकि माता और भाई भी इसका स्वाद ले सकें।"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज धैर्य धरो और साहस करो। यह बोझ हल्का हो जायगा क्योंकि हम लोग अभी घर जाने के पहले कुछ गन्ने फिर चूसेंगे। मैंने कहा, चूसने से जो गन्ने बचें उन्हें जब लेकर चलो तो एक कंधे पर गन्ना रख लो और दूसरे पर बंदूक। इस प्रकार बोझ संतुलित हो जायगा।

हम लोग चले जा रहे थे और गन्ना चूसते जाते थे।

फ्रिट्ज ने कहा, "पिताजी! यह तर्कीब बड़ी सुन्दर है मैं भी ऐसे ही चूसना शुरू करूँगा।" उसने प्रयत्न किया परन्तु जरा सा भी रस चूस न सका।

आखिरकार उसने कहा, "क्या कारण है? मैं जरा सा भी रस न चूस सका। यद्यपि यह सब रससे भरे हुए हैं।"

"कदाचित् तुम इसको ठीक प्रकार से नहीं चूस रहे हो।"

फिर उसने कहा, "ओ हो अब मैं समझ गया। यदि मैं एक छिद्र बनाऊँ और इसमें वायु जाने दूँ तो यह रस निकाल देंगे।"

उसने गन्ने की गाँठ के निकट एक छिद्र बनाकर रस चूस लिया। इस प्रकार उसका बोझ हल्का हो गया। परन्तु जिन गन्नों का रस चूस लिया गया था उनको भी वह ले जाना चाह रहा था।

मैंने कहा, "ये चूसे हुए गन्ने केवल ईंधन के काम आ सकते हैं। थोड़ी ही देर में इनका बचा हुआ रस सूर्य की गर्मी से सिरका बन जायगा। इसलिये इस व्यर्थ बोझ को ढोकर हैरान मत हो। शेष को ले चलो वही काफी होंगे।"

फ्रिट्ज ने कहा, "अच्छी बात है न सही गन्ने का रस। दूध से भरी हुई बोतल ही ले चलूँगा।

मैंने कहा, बिलकुल बेकार। नारियल का रस भी तुम देखोगे कि सिरके में बदल जायगा।" उसने कहा, "बड़ी विचित्र बात है अभी दे दूँगा।" बोतल की कार्क खोलने लगा तो वह तुरन्त ही उछल गई। बोतल से झाग की तरह दूध निकलने लगा।

मैंने कहा, "देखो न मेरे कथन की शीघ्र ही पुष्टि हो गई। इसे अधिक न पीना फौरन नशा चढ़ जायगा।"

चिल्ला पड़ा, "पिताजी, देखो तो यह खट्टा तो है ही। स्वाद बिलकुल शराब सा है।"

मैंने कहा, "यह एक प्रकार का रासायनिक परिवर्तन है। नारियल के दूध में, गन्ने के रस में तथा जल में शहद मिले हुए द्रव में कुछ समय तक गर्मी में रक्खे रहने से स्वतः हो जाती है। और अधिक समय तक रक्खे रहने से यह खट्टे सिरके में बदल जायगा। तूँबी के बने-हुए बर्तन और प्यालियाँ डालीं जिनको मैंने जाते समय अपने तूँबी के बर्तन बालू में गाड़ कर रख दिये थे, अब उन्हें निकाल कर झोले में रख लिये। उसी समय कुत्ते ने बन्दरों पर आक्रमण कर दिया। मना करने पर भी उसने एक बंदरिया मार डाली। उसका बच्चा माँ को मृत देख कर चिल्लाने लगा।

फ्रिट्ज यह देखकर उसको पकड़ने के लिये अपना बोझा फेंक कर दौड़ पड़ा। पर बच्चा कूदकर पेड़ पर चढ़ गया। और हाथ न लगा। अन्त में एकाएक वह फ्रिट्ज के कंधों पर आ बैठा। फ्रिट्ज डर गया।

मुझे फ्रिट्ज के डरने पर तथा उस छोटे बन्दर के गुर्राने और दाँत पीसने पर हँसी आ रही थी। परन्तु डरने की बात नहीं थी। क्योंकि यह बन्दर का बच्चा अपनी मा की मृत्यु के बाद फ्रिट्ज से अपने शत्रुओं की शरण चाह रहा था।

मैंने कहा, "जानवरों के स्वभाव में एक विचित्रता होती है। यह अपनी मा से पृथक् होकर तुमको अपने पिता के स्थान पर चुन चुका है। देखगे कि तुम कहाँ तक इस बोझ को सँभाल सकोगे।"

मैंने विचार करता हूँ कि बन्दर यह समझ गया कि मैं एक अच्छा लड़का हूँ। और इसकी इसके शत्रुओं से रक्षा करने के योग्य हूँ। परन्तु यह मेरे बाल नोच रहा है। जरा आप पकड़ लो।

मैंने उसको प्यार से अपनी गोद में ले लिया। उसको कुछ खाने को दे दिया। और छोटे बच्चे की तरह लाड़ प्यार करने लगा।

मैंने कहा, "ओ छोटे पशु मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ? भूखे निर्धन परिवार में एक और सदस्य की संख्या बढ़ाने से डर लगता है।"

परन्तु फ्रिट्ज ने इसको ले चलने के लिये कहा, उसने कहा मैं इसकी देख-रेख स्वयं करूँगा। मैं इसको नारियल का दूध पिलाऊँगा। बाद को जहाज पर वाली गाय का दूध दूँगा। मैं इसके स्वभाव की सहायता से तरह-तरह की जड़ी बूटियाँ खोज लूँगा। यदि यहीं छोड़ देंगे तो यह बेचारा मर जायगा।

मैंने कहा, "बहुत अच्छा फ्रिट्ज मैं तुम्हारे इस उदार चरित्र से तथा बुद्धिमानी के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हूँ। लेकिन ध्यान रखना इसकी देख-रेख में लापरवाही न करना" उधर तुर्क बंदरिया का शरीर नोच-नोच कर खा रहा था। मैंने इस अवसर पर उसको

छोड़ना खतरनाक समझा क्योंकि वह उस दिन भूखा ही रह गया था।

बन्दर का बच्चा कूद-कूद कर फ्रिट्ज के कंधे पर चढ़ गया। मैंने गन्ने का बोझा उठाया और मुश्किल से लगभग आधा मील चले थे कि तुर्क आ गया और फ्रिट्ज के पीछे-पीछे चल दिया।

फ्रिट्ज ने एक रस्सी से कुत्ते को बाँध दिया और बन्दर को उसकी पीठ पर बैठाकर कहने लगा—"तुमने इस बच्चे को अनाथ बनाया है। और तुम्हारे भूँकने के भय से इसकी मा गिर कर मर गई। मैंने तुमको क्षमा कर दिया। परन्तु यह छोटा बच्चा है। अतः इसको भविष्य में प्यार करने का और सहायता करने की मेरे सामने प्रतिज्ञा करो। क्योंकि यह बहुत छोटा है इसके पुरस्कार के रूप में मैं तुमको स्वादिष्ट गोश्त का सोरवा खिलाऊँगा।"

तुर्क दैन्यता से फ्रिट्ज के पैर सूँघने लगा। मैंने सोचा कि वह मेरा कहना समझ गया है। बड़ी नम्र नजर से वह बन्दर के बच्चे की तरफ देखने लगा। मुझको यह सब कृत्य देखकर हँसी आ रही थी।

मैंने फ्रिट्ज से कहा, अब डेरे पर वापस चलो। वहाँ तुम्हारे भाई देखकर प्रसन्न हो जायेंगे।

फ्रिट्ज ने कहा, "इसको देखकर जैक बहुत पसन्द करेगा क्योंकि वह भी इसकी तरह दाँत पीसता है।"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज ऐसा अपने भाई के लिये मत कहो। अगर तुमको आपस में प्रेम भाव से रहना है तो भाइयों का मजाक उड़ाना बुरा है। इस प्रकार की व्यर्थ की हँसी बुरी है। मैं तुमसे ऐसी आशा नहीं करता।"

फ्रिट्ज शान्त होकर के मेरी बात सुनता रहा।

अमेरिका की खोज के अवसर पर स्पेन निवासियों ने वहाँ के मूल निवासियों के साथ जैसी निर्दयता का व्यवहार किया था उसका हाल बतलाते हुए मैंने फ्रिट्ज को दया का उपदेश दिया।

फिर मैंने फ्रिट्ज को बन्दरों के विषय में अपना पूर्ण अनुभव बतलाया।

इस प्रकार धीरे-धीरे बातें करते हम उस चश्मे के निकट तट पर आ गये जिसको हम लोगों ने प्रातः काल पार किया था। डेरे पर का कुत्ता हम लोगों को देखकर भूँकने लगा। बन्दर का बच्चा डर कर फिर फ्रिट्ज के कंधे पर आ गया। तुर्क सोते में कूद कर तैर कर पार हुआ और हम लोगों के आने की सूचना देने पहुँच गया।

उसके थोड़ी देर बाद ही मेरे छोटे-छोटे बच्चे एक-एक करके दौड़ आये और मुझको सुरक्षित वापस आते हुए देखकर प्रसन्न होकर ताली पीट-पीट कर हँसने और कूदने लगे। हम लोग भी झटपट उस पार पहुँच कर एक दूसरे के गले से लग गये। बच्चे यह न जान पाये कि हम क्या-क्या लाये हैं। बच्चे बन्दर का बच्चा देख-देखकर खुश हो रहे थे।

उन्होंने फ्रिट्ज से पूछा, "बन्दर! जिन्दा बन्दर! तुम इसको कैसे पकड़ लाये? हम लोगों को बड़ा मजा रहेगा। वे लम्बी-लम्बी छड़ियाँ क्या हैं? और वे बड़े-बड़े कटोरे कैसे हैं? जो पिताजी लिये आ रहे हैं।"

और फिर प्रश्नों पर प्रश्नों की झड़ी लग गई जिनका उत्तर देना असंभव प्रतीत हो रहा था।

जब सब शान्त हो गये। मैंने कहा, "मेरे बच्चो! मैं तुमको देखकर फिर बड़ा प्रसन्न हूँ। ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये। मैं तुम लोगों के लिये सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ लाया हूँ। परन्तु

हमारा असली काम पूरा नहीं हुआ। हम अपने बरबाद जहाज के साथियों को ढूँढ़ न सके।"

मेरी पत्नी ने कहा, "ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी। ईश्वर की यही बड़ी कृपा है कि हम लोग सकुशल एक स्थान पर हैं। तुम्हारी अनुपस्थिति में मैं कितनी रोई? और कितनी चिन्तित रही? तुम्हारे सुरक्षित वापस आने के लिये मैं ईश्वर से प्रार्थनाएँ करती रही। अच्छा अब आप यात्रा की हाल बतलाइये।"

जैक ने मेरी बंदूक ले ली। अर्नेस्ट ने नारियल ले लिये और फ्रैन्क ने तूंबियों के बर्तनों पर अधिकार जमाया। मेरी पत्नी ने सामान का झोला ले लिया। फ्रिट्ज ने बन्दर तुर्क की पीठ पर बैठा दिया।

फ्रिट्ज ने कहा, "अर्नेस्ट! वे जो तुम लिये चल रहे हो, नारियल हैं।" वह खुशी से उछल पड़ा और घर की ओर चल पड़ा।

अर्नेस्ट ने पूछा, "ये छड़ियाँ क्या हैं? इन्हें कहीं डाल दूँ?"

फ्रिट्ज ने कहा, "नहीं, नहीं फेंकना नहीं" मैंने कहा, "यह ईख है। आओ मैं तुमको इसके चूसने का ढंग समझाऊँ।"

"क्या यह गन्ने हैं?" वे सब चिल्ला-चिल्लाकर फ्रिट्ज के चारों तरफ नाचने लगे। और जब तक उसने चूसने का ढंग न बतला दिया, उन्होंने शान्ति न लेने दी।

उनकी माँ यह सब आश्चर्य की बातें देखकर पूछने लगी कि, "ये सब वस्तुएँ कैसे मिलीं?" तब मैंने उसको सभी बातें समझाई। और अन्य सामग्री भी उसके सामने रख दी। प्लेट और चम्मचों को देख वह बड़ी प्रसन्न हुई। क्योंकि यह सब वास्तविक उपयोगिता की वस्तुएँ थीं।

जब मैं अपने तम्बू में पहुँचा तो देखा कि वहाँ पर भोजन तैयार रक्खा है। और हम लोगों की प्रतीक्षा कर रहा था। आग पर एक

ओर मछली पक रही थी। और दूसरी ओर कुछ सीप की एक पतेली उबल रही थी। उसके पीछे की ओर खाने का अन्य सामान पक रहा था। और ऊपर एक बर्तन में सोरवा पक रहा था। मैंने कहा, "बच्चो ! ऐसा ज्ञात होता है तुम लोगों ने मेरी अनुपस्थिति में काफी परिश्रम किया है। अरे यह मुर्गावी तो मैं जीवित रखना चाहता था, इसको क्यों मार डाला।

मेरी पत्नी ने उत्तर दिया, "आप निश्चिन्त रहें यह वह पक्षी नहीं है। उसे अर्नेस्ट ने आज जंगल से पीछा करके पकड़ा था। और यह मछलियाँ फ्रैंक ने पकड़ी थी।

मेरा छोटा बच्चा चिल्लाकर कहने लगा, "पिताजी, यह पेंगुइन है। इसे मैंने छड़ी से मारा है।

मैंने कहा, "इसके चोंच और पंजे कैसे थे।" उसने बतलाया, इसका पंजा जाल की भाँति था और उसमें चार उँगलियाँ थीं। और इसकी लम्बी और चिपटी चोंच थी। मैंने इसकी गर्दन और सिर रख छोड़े हैं। यह उसी चित्र की भाँति है जो मैंने पुस्तकों में देखा था।

मैंने उत्तर दिया, "मेरे बच्चे, बिलकुल ठीक है। देखो यह पढ़ने में कितना लाभ होता है।" छोटे असहाय बन्दर के बच्चे को नारियल का दूध पिला दिया जाय। फिर मेरी पत्नी ने तूंबी के बर्तनों में भोजन परोस दिया। सबने एक साथ बैठकर पेट भर खाया और ईश्वर को उसकी कृपा के लिये धन्यवाद दिया। बादको सबने अपने अनुभवों का क्रमानुसार वर्णन किया। फ्रिट्ज ने बोतल खोली जिसमें नारियल का दूध भर लाया था देखा तो सब सिरका बन गया था।

मेरी पत्नी मे सूखी घास का बिस्तर लगाया और हम लोग शाम की प्रार्थना के बाद सोने के लिये डेरे के अन्दर घुसे। फ्रिट्ज ने बन्दर के बच्चे को एक कोने में बिठा दिया। बतखें और मुर्गी

अपने यथोचित स्थान पर पहुँच गई। हम लोग थकावट के कारण शीघ्र ही सो गये। ऊँघ ही रहे थे कि मुर्गी की चिल्लाहट और कुत्ते के भूँकने ने जगा दिया। मैं झट दौड़ पड़ा। सब अपनी-अपनी बन्दूकें लेकर निकल पड़े। मैंने देखा कि मेरे दोनों कुत्तों को गीदड़ों के एक समूह ने घेर लिया है जिसमें तीन या चार को कुत्ते मार भी चुके थे। और शेष चारों तरफ से एक वृत्त में दौड़ रहे थे।

मैंने जोर से कहा, "फ्रिट्ज ! हम दोनों को साथ-साथ गोली भरनी चाहिये। ठीक निशान लगाओ। गोली से दो मर कर बालू पर गिर पड़े। कुछ आहत होकर गिर पड़े और शेष भाग गये। हम लोग फिर तंबू में चले गये। परन्तु फ्रिट्ज एक गीदड़ को पहचानने के लिये, और अपने भाइयों को दिखाने के लिये तम्बू में घसीट लाया। शेष को बिला और तुर्क ने नोच-फाड़कर खा डाला। हम फिर सोने लगे, और रात्रि शान्ति से व्यतीत हुई।"

अध्याय ५

भोर की ध्वनि सुन कर मैं जग पड़ा और अपनी पत्नी को जगाकर आज के कार्यक्रम पर विचार किया।

मैंने कहा, "मैं आपत्तियों से परेशान हूँ और मेरा साहस समाप्त हो रहा है। अपने बरबाद जहाज और साथियों को नहीं भुला पा रहा हूँ।"

बड़े धैर्य के साथ मेरी पत्नी ने उत्तर दिया, "सब ठीक हो जायगा। प्रत्येक बात धीरे-धीरे उचित परिस्थितियों में आ जायगी।" अन्त में तय हुआ कि वह तट पर ही कल की भाँति छोटे बच्चों के साथ रहेगी। और मैं फ्रिट्ज के साथ फिर कल की भाँति खोज करने जाऊँगा।

"उठो, उठो"! कहकर मैंने बच्चों को जगाया। दिन फैल चुका है। हम लोगों को बहुत कार्य करना है। दिवस की सफलता प्रातःकाल उठने पर निर्भर रहती है। हमको विस्तर पर पड़े हुए सूर्य को देख कर लज्जा करनी चाहिये। बेचारे बच्चे बड़ी अनिच्छा से जगे और जमुहाने लगे तथा अपनी बाँहें फैलाकर फिर धूप में अलसाने लगे।

प्रार्थना के बाद लड़के भूख, भूख चिल्लाने लगे। मैंने ढूँढ़ा परन्तु उस समय तक कुछ तैयार न था केवल सूखे और कड़े बिस्कुट उन लोगों को दिये। दोनों कुत्ते बिल, और तुर्क पास में शान्त बैठे थे। मैंने देखा कि उन दोनों के गलों में गीदड़ के दाँतों के घाव थे।

मेरी पत्नी ने उनके घावों पर पट्टी बाँध दी और वे मेरे हाथ चाटने लगे। मैं फ्रिट्ज को साथ लेकर फिर बाहर चल दिया और

बच्चों से कह दिया कि वे माँ के साथ रहें और उसकी आज्ञा उल्लंघन न करें। अबकी बार फ्रिट्ज ने नादों से एक बेड़ा तैयार किया। हमने एक झंडा समुद्र तट पर अपने सीमों के संकेत के लिये गाड़ दिया। पत्नी ने चलते समय अनुरोध किया कि हम लोग रात्रि में वापस अवश्य आवेंगे क्योंकि उसके साथ में छोटे-छोटे बच्चे थे।

हम दोनों ने अपने साथ केवल बंदूकें और गोलियाँ तथा कुछ भोजन-सामग्री ली। और चल पड़े। फ्रिट्ज ने अपने साथ बन्दर के बच्चे को ले लिया। हम लोग बड़े खेद के साथ अपने परिवार से अलग हुए। पानी में हमारा बेड़ा बह चला। उस उजाड़ जहाज के निकट बेड़ा जैसे ही पहुँचा वैसे ही फ्रिट्ज ने झटपट डेक पर दौड़कर उन दीन पशुओं का निरीक्षण किया। मैं भी उसके साथ लगा चला गया। हम लोगों ने देखा कि वे पशु हम लोगों की अनुपस्थिति में भी भूखों नहीं मरे हैं। फ्रिट्ज ने गाय दुही और दूध पीकर बन्दर का बच्चा खीसें निकालने लगा।

जानवरों को कुछ ताजा जल पिलाकर हम लोगों ने भी कुछ अपने खाने का प्रबन्ध करना ठीक समझा।

फ्रिट्ज ने कहा, "अब शीघ्र ही हम लोगों को अपनी यात्रा में लग जाना चाहिये।" मैंने कहा, "क्यों?" उसने कहा, "वायु प्रतिकूल दिशा की ओर बहने वाली है। उसका हल्का झोंका ऐसा मालूम कर रहा है। अतः वह हमारी यात्रा में बाधक बन जायगी।"

मैंने देखा कि वापस होते समय समुद्र की धारा प्रतिकूल पड़ेगी। साथ के सामान से नाव भी बोझिल हो जायगी।

इसलिये मैंने, नाव खेने के लिये लग्गी और पतवार तैयार करके ठीक रख लिये। फिर बेड़े में पतवार फिट करके उसे देखा। वहाँ कोई गड़बड़ी न थी।

जहाज पर बन्दूकें और कारतूसें काफी संख्या में थीं। सब प्रबन्ध समाप्त करके आवश्यक सामग्री मैंने बेड़े पर रखनी प्रारम्भ की। इनके सिवा छुरी, काँटे, चम्मच, चाकुएँ और भोजन के समय व्यवहार करने का अन्य सामान भी हमने साथ रक्खा।

तब तक फ्रिट्ज़ कहीं से बहुत कंबल ढूँढ़ लाया। एक आलमारी में गंधक, दियासलाई के डिब्बे मिल गये। कुछ रस्सियाँ भी नाव में भर दीं। भार बहुत हो गया था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि नाव जल में डूब जायगी। कम से कम खेकर ले चलना कठिन ही हो रहा था।

हम दोनों ने अपने-अपने शरीर को कार्क के जैकिट कस लिये। इन आशाओं में रात्रि बड़ी जल्दी हो जाती है। चट्टान पर आग जल रही थी जिससे प्रतीत हो रहा था कि घर पर कल्याण है। हम लोगों ने जहाज की लालटेनें लेकर जला दीं ताकि लोग समझ लें कि हम यहाँ सकुशल हैं। दो बंदूकों की आवाजें करके उन्होंने अपनी कुशल की सूचना दी।

ईश्वर की स्तुति के बाद हम लोग थक कर सो गये।

——

अध्याय ६

दूसरे दिन प्रात:काल को मैं दूर्बीन से अपने तट पर के तम्बुओं को देखा। जिनमें कि मेरे छोटे-छोटे बच्चे मौजूद थे। फ्रिट्ज ने प्रात:काल का नाश्ता तैयार कर रहा था। इसी बीच में मेरी पत्नी खेमे के बाहर आई परन्तु मैंने पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार झण्डा ऊँचा किया जो यह प्रदर्शित करता था कि हम लोग यहाँ ठीक प्रकार से हैं। उधर से भी झण्डों का संकेत मिला। मैं तुरन्त समझ गया वहाँ सब प्रकार की कुशलता है। मैंने कहा, "फ्रिट्ज अभी हम लोग टूटा हुआ जहाज नहीं छोड़ेंगे। इन बेचारे पशुओं को कुछ खाने का प्रबन्ध कर दिया जावे। और किसी उपाय से उनको तट पर पहुँचा दिया जावे तो अच्छा रहेगा।"

फ्रिट्ज ने कहा, "अच्छा, क्या हम लोग कोई दूसरा बेड़ा उन्हें तट तक पहुँचाने के लिये नहीं तैयार कर सकते हैं ?" मैंने कहा, "गधे, और गाय आदि को नाव पर ले जाना बड़ा मुश्किल है। यदि इस बकरी और भेंड़ को ही पार कर सकें तो बहुत है।

मैंने कहा, "सूअरों को जल में उतार दीजिये तो तैर कर पार हो जायेंगे। परन्तु बकरी और भेड़ों के लिये क्या होगा ?" फ्रिट्ज ने कहा, "इनको तैरने के जैकेट पहना दिये जायँ, और वे मछली की भाँति तैरकर पार हो जायेंगे।"

मैंने उत्तर दिया, "बहुत अच्छा। देखा जाय। आओ जल्दी करो।" अत: एक भेंड़ को जैकेट पहनाकर पानी में डाल दिया। पहले तो वह डूब गई। मेरा मस्तिष्क भय और आशा की तरंगों में डूबने उतराने लगा। फिर एकाएक ऊपर आ गई और तैरने लगी। परन्तु कुछ देर बाद थमकर शान्त हो गई। फ्रिट्ज ने

एक रस्सी फेंक कर नाव पर फिर वापस घसीट लिया। वहाँ आकर फिर प्रसन्न हो गई।

अन्त में सोच-विचार कर प्रत्येक जानवर की पीठ के अगल-बगल मैंने दो-दो पीपे बाँध दिये। और उन्हें पानी में उतार दिया। इसके बाद शीघ्रता से नाव की रस्सियाँ काट दीं और झट पशुओं के झुण्ड में पहुँच कर सबकी रस्सियाँ आसानी से पकड़ लीं। और नाव के सहारे सबको पार खींचता हुआ चल दिया।

यद्यपि पशुओं का यह समूह हमारे बेड़े की गति में बहुत बाधा उत्पन्न कर रहा था फिर भी लगभग पन्द्रह मिनट में काफी दूरी हम पार कर गये मैं अपनी सफलता का गर्व करता हुआ थककर बैठ रहा फ्रिट्ज उस छोटे बन्दर से खेलता हुआ तट की ओर निहारता रहा।

परन्तु मेरे सभी प्रयास निष्फल हो जाते यदि फ्रिट्ज की तीव्र आँखें भयंकर खतरे को न देख लेतीं एकाएक वह चिल्ला उठा, "पिताजी, वह देखो एक विशालकाय मछली हम लोगों पर हमला करने आ रही है।" मैंने कहा, "शीघ्र तैयार हो जाओ और फायर करो" फ्रिट्ज ने बड़ी सावधानी से गोली मारी कि उस भयंकर शत्रु के सिर में लगी। वह पानी के नीचे चला गया और बार-बार सतह पर आ आकर भेंड़ पर झपटने की चेष्टा करता रहा। उसका खून जल के ऊपर दिखाई पड़ रहा था।

मैंने कहा, "तुम बड़े चतुर हो, इस प्रकार के जीवों को गोली से घायल करना बड़ा कठिन होता है। यह मछली जल के ऊपर तभी आती है जब कोई वस्तु खानेवाली सतह पर दिखलाई पड़ती है। मैंने फिर से बंदूकों को भर लेने के लिये कहा ताकि आगामी का मुकाबिला किया जा सके।"

धीरे-धीरे मेरी नाव तट के निकट पहुँच गई। जानवरों की रस्सियाँ काट दी गईं। वे दौड़-दौड़ कर भूमि पर पहुँच गये। बेड़ा ऊपर के पहले के स्थान पर बाँध दिया गया।

"मेरे परिवार का कोई भी सदस्य दिखाई न पड़ा। मैं चिन्तित हो गया पर तब तक एक खुशी की आवाज मेरे कानों में पहुँची और मेरी पत्नी आश्चर्य कर रही थी कि पशु यहाँ तक कैसे पहुँच सके।"

मैंने कहा, "यह फ्रिट्ज की बुद्धि का चमत्कार है। इसके लिये मैं फ्रिट्ज को धन्यवाद देता हूँ।" छोटा फ्रैंक नाव पर मन्डी लगी हुई देखकर प्रसन्न हो रहा था। वे लोग नाव की इस प्रकार की सजावट देख-देखकर प्रसन्न हो रहे थे। फिर अर्नेस्ट दौड़ कर गधे पर सवार हो लिया और उसको तेज दौड़ाने के लिये पीटने लगा। भेंड़ों और बकरियों को जैकेट पहने हुए देखकर सभी लोग हँस रहे थे। मैं जब जैक को नाव से उतारने लगा तो देखा कि वह पीली पेटी कसे हुए है। और दो पिस्तौलें लटकाये है। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

मैंने पूछा, "यह कहाँ पाया?" उसने कहा मैंने स्वयं तैयार किया है। कुत्तों को देखिये"। कुत्ते भी उसी प्रकार की पट्टी गले में बाँधे हुए थे।

मैंने कहा, "शाबाश! तुमने बड़ा अच्छा काम किया।"

जैक ने कहा, "सब मैंने बनाया है, माताजी ने केवल सीने में सहायता दी है।"

नीचे उतरने पर फ्रिट्ज ने कहा, "बड़ी बदबू आ रही है।" मैंने कहा, वह गीदड़ मैदान में पड़ा सड़ रहा है। इसने इस स्थान का वायुमण्डल दूषित कर दिया है। अतः इसको दूर फेंक दिया जावे।" परन्तु फ्रिट्ज ने कहा, "जिन लोगों ने इसका चमड़ा लिया है, वे ही फेंक आयेंगे।" जैक की ओर देखकर कहा।

मैंने उत्तर दिया, "यह तो ठीक है। परन्तु जैक ने बड़ा अच्छा काम किया है।

परन्तु मैं देख रहा हूँ कि जैक ही इसको बड़ी घृणा से देख रहा है।"

जैक ने कहा, "यह संभव है कि यह पेटी ही बदबू दे रही जो कि हमने गीदड़ के चमड़े से ही बनाई है। परन्तु जब यह सूख जायगी तो इसकी बदबू दूर हो जायगी।"

मैंने कहा, "हम लोगों को इतना नाजुक नहीं बनना चाहिए। जैक तुम नाक दबाकर खड़े हो जाओ।" सभी बच्चे बड़े जोर से हँस पड़े। और कहने लगे—"जैक नाक दबाओ, जैक नाक दबाओ।"

परन्तु जैक वहीं इधर-उधर टहलने लगा। मैंने कहा, "यह गीदड़ समुद्र में फेंक दो।"

भोजन के पहले ही हमने ढूँढ़-ढूँढ़कर पशुओं को जैकेट और रस्सियों से मुक्त कर दिया।

इस कार्य में अधिक समय नहीं लगा। सूअर अकेला था। ज्योंही छुटा, भाग गया। अर्नेस्ट ने कुत्तों को ललकार दिया। वे कान पकड़कर उसे वापस ले आये। शेष पशुओं को बन्धन मुक्त करके हम खेमें को वापस आ गये। मेरी पत्नी भोजन तैयार किये हुए हम लोगों की प्रतीक्षा कर रही थी। आज हम लोगों के पास तश्तरियाँ थीं। और प्लेट तथा चिम्मच थे। काँटे थे और चाकू थे। ठाठ के साथ सब सामग्री थी। मक्खन था और बिस्कुट थे। सबने आनन्द से भोजन किया। बतख, मुर्ग, गाय, सूअर, भेंड़ें आदि हम लोगों के चारों तरफ भोजन की प्रतीक्षा में खड़े थे। बतखें निकट के तालाब में जाकर तैरने लगीं और वहाँ से छोटे-छोटे कीड़े पकड़कर खाने लगीं।

इसके बाद पत्नी से मार्ग-घटनाएँ बतलानी प्रारम्भ कर दी।

अध्याय ७

"आज सबेरे तुम्हारा संकेत पाने के बाद मैंने नाव पर से बच्चों को छाया पार पहाड़ी पर एकत्र देखा था।"

मेरी स्त्री ने कहना आरम्भ किया—"यह तम्बू हम लोगों ने गलत खड़ा कर दिया है। इसके अन्दर सूर्य की किरणें सीधे चली आती हैं। और इसे गर्म कर देती हैं। इसलिए हम लोगों ने छाया और ठंढक के लिए सभी बच्चों के साथ दूसरे स्थान पर जाने का विचार किया था। कोई स्थान रुकने के उपयुक्त नहीं मिल रहा था। धीरे-धीरे हम उस चट्टान की ओर चल पड़े। साथ तुर्क और बिल थे। तुर्क आप के साथ उधर जा चुका था। इसलिए उसने मेरे लिए पथ-प्रदर्शक का काम किया। और हम लोग शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच गये जहाँ से होकर आप ने नदी पार की थी।"

हम लोगों ने भी नदी पार करने की कोशिशें कीं। अब उस पार जाना चाह रहे थे। मुझे खतरे का अंदेशा था क्योंकि मेरे साथ दो छोटे-छोटे बच्चे थे।

अर्नेस्ट बड़ी आसानी से नदी पार कर गया। तब मैंने छोटे फ्रैंक को अपनी पीठ पर लाद लिया। और शीघ्र ही पार कर गया। जैक नदी को कूद कर पार कर गया। और हम लोगों के साथ जा मिला। हम सब ने अपनी बोतलें पानी से भर लीं और चल पड़े। वहाँ पहुँचकर प्राकृतिक दृश्य देखकर मेरा हृदय प्रफुल्लित हो उठा। हम लोग शीघ्र ही एक छायादार घाटी में प्रवेश कर गये।

उस घाटी की लम्बी-लम्बी घास बड़ी कठिनाई से पार कर उस पार पहुँचे। तब तक जैक ने एक साफ मार्ग ढूँढ़ निकाला। और उस पर होकर हम लोग समुद्र तट की ओर चल पड़े।

एकाएक हम लोगों ने गुर्राने की आवाज सुनी। एक बड़ी भारी चिड़िया घास में से सिर उठा कर झाँक रही थी। दोनों लड़कों ने अपनी-अपनी बंदूकें कंधों से लगा लीं। लेकिन जब तक वे फायर करें पक्षी लक्ष्य से दूर हो गया।

अर्नेस्ट ने कहा, "क्या खूब !" उसने अपनी बंदूक फिर से बगल में लेते हुए कहा, "क्या बतावें आज मेरी छोटी रायफल मेरे साथ नहीं है।"

मैंने कहा, "तुम गोली मार सकते थे यदि वह पक्षी तुम्हारे लिये पन्द्रह मिनट तक प्रतीक्षा करता रहता।"

मैंने कहा इन पक्षियों पर फायर करने के लिये दृष्टि की तीव्रता और मस्तिष्क की सावधानी आवश्यक है।

जैक ने कहा, "कदाचित् यह इंगलिश पक्षी थी।"

फ्रैंक ने कहा, "वास्तव में इंगलिश पक्षी ही है। क्योंकि इसके पर इतने बड़े-बड़े हैं।"

अर्नेस्ट ने कहा, "यह आवश्यक नहीं है सभी बड़े पंखों वाले पक्षी इंगलिश नहीं हैं।"

मैंने कहा, "इसे मैंने घोंसले से उड़ाया है। चल कर देखें और तब निश्चय हो जायगा।"

जैक तेजी से आगे बढ़ा तब तक बड़ी-बड़ी घास से एक तीसरा पक्षी उससे स्पर्श करता हुआ उड़ गया। लड़का आश्चर्य में पड़ गया। किसी लड़के ने निशाना नहीं लगा पाया।

मैंने कहा, "तुम लोग कितने सुस्त शिकारी हो ? मैं समझता हूँ कि तुम्हें अपने पिता से अभी और शिक्षा लेने की आवश्यकता है।"

अर्नेस्ट ने शीघ्र ही घोंसला ढूँढ़ लिया और हम लोगों ने जाकर देखा कि कुछ अंडों के टुकड़े पड़े हुए थे। जिनमें से बच्चे उड़ चुके थे।

अब अर्नेस्ट ने कहा, "फ्रैंक क्या यह इंगलिश पक्षी हो सकता है ? इंगलिश अपना घोंसला कभी जमीन पर नहीं बनाते। और उनके बच्चे दौड़ नहीं सकते। इसलिये यह दूसरे प्रकार के पक्षी हैं।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि यह बस्टाई पक्षी हैं यह हलके भूरे रंग का होता है। और पंखों पर भूरे रंग के चिह्न होते हैं। चोंच के इधर-उधर मूछें होती हैं, इस प्रकार की बातचीत करते हुए हम लोग काफी मार्ग पहुँच गये। उस स्थान पर बहुत सी छोटी-छोटी चिड़ियों के झुण्ड हम लोगों के चारों तरफ उड़ने लगे।"

लड़के प्रसन्न हो रहे थे और गोली भरने के लिये तैयार हो रहे थे। परन्तु मैंने यह कह कर रोक दिया कि वे वृक्ष इतने ऊँचे हैं जहाँ यह पक्षी बैठे हुए हैं कि फायर बेकार हो जायगी। मैं स्वयं नहीं समझ पा रहा हूँ कि किस जाति के वे वृक्ष हैं ? मैंने कभी नहीं देखे। कुछ दूर और दस वृक्षों का समूह खड़ा था। वे आकाश से बातें कर रहे थे। जड़ें पृथ्वी के ऊपर खुली हुई थीं। मुख्य जड़ वृक्ष को रोके थे और अन्य छोटी-छोटी जड़ें थीं।

जैक ने एक जड़ की मोटाई नापी। सबसे पतले स्थान को उसने रस्सी से लपेट कर नापा। परिधि चौतीस फीट थी। भूमि से वृक्ष की शिखा की ऊँचाई एक सौ पचास फीट से कम नहीं जान पड़ती थी। छाल मोटी और शाखाएँ लम्बी-चौड़ी और छायादार थीं। पत्तियाँ चपटी और घनी थीं। चारों ओर बड़ी-बड़ी घास थी। झाड़ी आदि नहीं थी और स्थान निवास के उपयुक्त जान पड़ता था।

"हम लोगों ने वहाँ बैठकर सायंकाल का नाश्ता करना उचित समझा। साफ जल का चश्मा बह रहा था। हरी-हरी घास खड़ी थी। उस स्थान का दृश्य ताजगी दे रहा था। कुत्ते इधर-उधर घूम रहे थे—बिना कुछ खाये हुए ही शान्तिपूर्वक आकर पैरों के पास लेट कर सो गये।"

"इस सुन्दर स्थल से मैं अपने को किसी ओर हटा न सकी। आगे भी न आ सकी। तुरन्त ही मैंने अपने तम्बुओं को वापस जाने को सोचने लगी।"

"समुद्र की लहरों द्वारा लायी हुई बहुत-सी वस्तुओं में से मैंने कुछ सुन्दर वस्तुएँ छाँट लीं। कुत्ते तालाब से कुछ सीपें निकाल कर खा चुके थे।"

मैंने कहा, "बच्चो देखो, भूख हमको कितना उद्यमी बना देती है। कुत्तों की भूख ने उनको स्वयं भोजन ढूँढ़ने के योग्य बना दिया।"

"देखो जैक कुत्ते हम लोगों की तरफ भूँक रहे हैं।" जैक ने अपनी पिस्तौल सँभाल ली। मैंने कहा, "जैक यह हम लोगों पर हमला नहीं कर सकते। तुमको यदि अपने पर पिस्तौल उठाते हुए देखेंगे तो वे लोग तुम पर झपट पड़ेंगे।"

जैक ने कहा, "फ्रैंक! तुम शान्त रहो। मैं तुमको या कुत्तों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाना चाहता। मेरे प्यारे फ्रैंक मैंने केवल यह मजाक किया था।"

हम लोग घर की ओर जा रहे थे। समुद्र तट पर मैंने बिल को बालू खोदते देखा। वह कुछ खा भी रहा था। उसे देखकर अर्नेस्ट प्रसन्नता से चिल्लाने लगा।

"माताजी! यहाँ पास ही कछुए और उनके अंडे हैं।" फ्रैंक ने कहा, "कछुए हैं? और अंडे हैं? क्या कछुए खरगोश होते हैं?" इस पर सब हँस पड़े। मैंने कहा, "यह खाने में बड़े अच्छे होते हैं। आओ इनको बचा लें।"

मैं बिल को उसके भोजन से दूर करने में असमर्थ थी। फिर भी हम लोगों ने बारह अंडे बचा लिये तब मैंने समुद्र की ओर देखना शुरू किया। देखा कि समुद्र में एक नाव बड़ी तेजी से भूमि की ओर चली आ रही थी। फ्रैंक ने सोचा शायद कुछ

जंगली लोग हम सब को मार डालने के लिये आ रहे होंगे और तब हम लोग घर की ओर जल्दी-जल्दी चल पड़े और आकर आप से मिल गये।"

यह आज की हमारी यात्रा रही। मैंने अपने रहने का स्थान चुन लिया है। वहाँ रमणीक सुन्दर-सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं और भूमि उपजाऊ प्रतीत होती है।

मैंने कहा, "क्या उन वृक्षों के नीचे रहने का स्थान चुना है ? यदि तुम जैसा बता रही हो वैसा है तो बड़ा ही सुन्दर है। परन्तु उनपर रात्रि निवास के लिये या तो गुब्बारे तैयार करने पड़ेंगे या पंख लगाने पड़ेंगे।

उसने कहा, "तुम जितना चाहो हँस सकते हो। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग उन वृक्षों की शाखाओं पर लट्ठे डाल कर रहने के योग्य बना सकती हैं।" क्या तुमने योरूप में ऐसा नहीं देखा है। उदाहरण के लिये उस कृषक की झोपड़ी लीजिये, जो हमारे पुराने मकान के पास थी जिसमें अपने रहने का ढंग इसी प्रकार निकाला था और जिसको लोग "राबिन्सन क्रूसो" की झोपड़ी कहा करते थे।"

मैंने कहा, "बिल्कुल ठीक, यह कठिन काम करने का विचार हम लोग धीरे-धीरे करेंगे।"

तब तक रात्रि हो गई। बातचीत समाप्त हो गई। हम सब लोग ईश्वर प्रार्थना के लिये एक स्थान पर एकत्रित हुए। रात्रि कुशल से बीती और सबेरे हम लोग सूर्य की किरणों के साथ उठ पड़े।

अध्याय ८

मैंने पत्नी से कहा, "कल स्थान बदलने के सम्बन्ध में मैंने तुम्हारी राय सुनी। परन्तु मेरा ख्याल है कि ऐसे कार्यों में जल्दी नहीं करनी चाहिये। पहली बात तो यह है कि हम ईश्वर द्वारा दिया हुआ स्थान क्यों छोड़ दें।

यहाँ एक ओर समुद्र रक्षा करता है और दूसरी ओर यह विशाल चट्टान है। जिसे हम आसानी से पार कर सकते हैं। यहाँ हमको सभी प्रकार की सुविधाएँ हैं। हम अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ नष्ट जहाज से लाये हैं।"

मेरी स्त्री ने कहा, "यह सब ठीक है लेकिन मेरा कहना है कि यहाँ दिन में इतनी तेज धूप होती है कि बैठना कठिन हो जाता है। आप फ्रिट्ज के साथ घूमने चले जाते हैं और जहाँ स्वादिष्ट फल और छाया मिलती रहती है। परन्तु मैं इस गर्म तम्बू ही में बच्चों को लिये पड़ी रहती हूँ। अतएव इस स्थान पर बच्चों के स्वास्थ्य का बड़ा भय रहता है। आपने जो सुरक्षा की बात की वह भी नहीं है। गीदड़ों ने हम लोगों को जान ही लिया है। किसी दिन शेर और चीते भी आ पहुँचेंगे। जब आप बाहर चले जाते हैं तो मैं बड़े भय में पड़ी रहती हूँ।" मैंने उसको गले लगाते हुए कहा, "अच्छा तुम मेरे विचारों के प्रतिकूल जा रही हो।"

उसने कहा, "पुल बनाइये। भारी बोझ गधा और गायें ढो ले चलेंगी। हम सब पैदल चलकर वहाँ पहुँच जायेंगे।"

मैंने कहा, "उन पर सामान लादने के पहले यह आवश्यक है कि जीन और काठी का प्रबन्ध कर लें। अच्छा तुम यह सब ठीक करो। मैं पुल ठीक करने जाता हूँ। यह तो सदैव काम देगा।"

मैं अपने काम में लग गया। जगाकर लड़कों से साथ चलने के लिये कहा।

प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद सब चल पड़े। फ्रिट्ज ने अपने छोटे बन्दर को बकरी का दूध पिलाया। और उसको अपने आप थन से दूध पीना सिखाया। यह देखकर जैक गाय के नीचे जाकर दूध पीने लगा। और चिल्लाकर फ्रैंक से कहने लगा, "क्या तुम फ्रैंक इतना नहीं कर सकते हो ? दूध बड़ा स्वादिष्ट है।" हम लोगों ने उसको बछड़े कहकर चिढ़ाना शुरू कर दिया।

जैक लज्जित हो गया। उसकी मा ने एक बर्तन लिया और गाय तथा बकरी से दूध दुह कर एक प्याला बच्चों को दिया। शेष को भविष्य के लिये अच्छी प्रकार से रख छोड़ा।

तब तक मैंने अपनी नाव जहाज पर से पुल बनाने का सामान लाने के लिये तैयार कर ली। नाश्ता करके साथ अर्नेस्ट और फ्रिट्ज को लेकर चल दिया। हमारी नाव तीव्रता के साथ आगे बढ़ी। पानी की धारा की सहायता से वह सुगमता के साथ चली जा रही थी। तब तक एक स्थल पर कुछ पक्षियों के झुण्ड उड़ते हुए दिखलाई पड़ने लगे। वे ऊपर नीचे की ओर झुण्डों में उड़ रहे थे।

फ्रिट्ज ने उन पर फायर की। परन्तु यह न जान सका कि कितने मरे और किस स्थान पर जाकर गिरे।

थोड़ी देर बाद वह चिल्ला उठा कि चिड़ियाँ विशालकाय मछली को खा रही हैं।

मैंने देखा कि एक मरी हुई विशाल मछली पड़ी हुई है। जिसका आधा भाग समुद्र के अन्दर है और आधा बाहर पड़ा हुआ है। चिड़ियाँ उसको खाने में ऐसी लगी हुई थीं कि मेरे पहुँचने पर भी एक भी उड़कर न भागीं। हम लोगों ने सोचा कि इतनी बड़ी मछली को समुद्र के बाहर कौन खींच लाया।

अर्नेस्ट ने फ्रिट्ज से कहा, "देखो यह वही शार्क मछली है। जिसे तुमने कल गोली से मारा था। क्योंकि उसके सिर में तीन गोलियों के निशान बने हुए हैं। फ्रिट्ज ने कहा, "ठीक है मैंने कल तीन गोलियाँ रायफल से मारी थीं।"

मछली लगभग बीस फीट लम्बी थी। मैंने कहा इसका चमड़ा उतार लेना चाहिये।

फ्रिट्ज ने शिष्मी चाकू से तथा अर्नेस्ट ने बन्दूक में लगी हुई किर्म से चमड़ा निकाला। नाव पर रख लिया।

हम लोग वापस हो रहे थे तब तक मार्ग में समुद्र तट पर लहरों द्वारा लाये हुए लट्ठे और तख्ते दिखलाई पड़े। मैंने अपनी नाव से बाँध लिया। बिना किसी विशेष परिश्रम के हम लोग खाड़ी में पहुँच गये और वहाँ से आसानी से खुले समुद्र में पहुँच गये।

फ्रिट्ज उस शार्क का चमड़ा सुखाने लगा। अर्नेस्ट उन पक्षियों की देख-रेख करने लगा जिन्हें वह तट से पकड़ लाया था।

"पिताजी इस मछली के चमड़े को हम लोग क्या करेंगे?" मैंने कहा, "यह चमड़ा बड़ा दृढ़ होता है। लोग इससे अच्छा-अच्छा सामान तैयार करते हैं। इसको "शाग्रीन" कहते हैं। इसे चिकना करके पालिश कर लेना चहिये।" आखिरकार हम लोग खाड़ी में पहुँच गये।

तट पर परिवार के लोग दिखलाई नहीं पड़े। और न कोई खतरे ही की सूचना हम लोगों को मिली। मेरी पुकार चट्टानों द्वारा प्रतिध्वनित होने लगी।

मेरी पत्नी दोनों छोटे बच्चों को लिये हुए शीघ्र ही पहुँच गई। वे अपने-अपने रूमालों में कुछ बाँधे हुए थे। फ्रैन्क अपने कंधों पर मछली का जाल टाँगे हुए था। उन्हें इतनी जल्दी मेरे वापस आने पर आश्चर्य हुआ। जैक ने शीघ्र ही अपना रूमाल खोल दिया। वह पानी से अच्छे-अच्छे केकड़े पकड़ लाया था। खुलते

ही वे बड़ी तेजी से इधर-उधर घूमने लगे। लड़के दौड़कर उन्हें पकड़ने लगे और हँस-हँसकर खेलने लगे। मैंने लगभग इनमें से दो सौ को भाग जाने दिया।

"देखिये इनके पंजे कितने बड़े-बड़े हैं ?"

मैंने पूछा, "यह खजाना किसने खोज लिया ? कदाचित् जैक तुमने इनकी ईजाद की है।"

उसने कहा, "नहीं पिताजी इनको फ्रैंक ने ढूँढ़ा और उसने माताजी से बतलाया। फिर हम लोग जाल लेकर गये और इन सबको पकड़ ले आये।"

मैंने कहा, "आज हम लोगों का भोजन बड़ा बढ़िया होगा। जरूरत से अधिक को नदी में छोड़ दो।"

हम लोग नाव का सामान नीचे उतारने लगे। बड़े-बड़े लकड़ी के तख्ते और लट्ठे उतारने में हमें बड़ी कठिनाई पड़ रही थी। फिर भी जैसे-तैसे खींचकर ले गये। और पुल की सामग्री एकत्रित करने लगे। चट्टान के निकट चश्मा सकरा था। तट पर लट्ठे गाड़कर उनपर पुल का आकार एक बेंड़ा लट्ठा रखकर बना लिया।

केवल प्रश्न यह था, "कि क्या यह तख्ते लम्बाई में नदी के एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँच जायेंगे या नहीं ? इस बात की नाप आँखों से देखकर नहीं की जा सकती थी फिर कैसे नाप ली जाय ?"

अर्नेस्ट ने कहा, "माताजी के पास एक पतली सुतली है। हम उसके एक सिरे पर पत्थर बाँधकर दूसरी ओर फेंक देंगे। और फिर दूसरी ओर के तट से अपनी ओर खींच लेंगे। तो इसकी वास्तविक चौड़ाई ज्ञात हो जायगी।" इस प्रकार लगभग नदी की चौड़ाई अट्ठारह फीट निकली। फिर विचार किया गया कि पुल नदी की धारा के इधर-उधर कम से कम तीन फुट तक निकला रहना

चाहिये और इस प्रकार से लगभग चौबीस फीट लम्बा पुल तैयार करना है।

अब प्रश्न यह था कि इन भारी लट्ठों और तख्तों को नदी की एक ओर से दूसरी तरफ तक कैसे बिछायें। हम लोग विचार करते रहे। परन्तु किसी निश्चित निष्कर्ष पर न पहुँच पाये। सायंकाल का भोजन तैयार था। हम लोग खाने के लिये चल दिये। और सोचा कि भोजन करते समय इन विषयों पर विचार करेंगे।

बड़े चाव से भोजन किया। तब उसने काँटों की सहायता से सिला हुआ एक सुन्दर झोला दिखाया। मैंने उसकी कला की प्रशंसा की, जिससे वह प्रसन्न हो गई।

शीघ्रता से भोजन समाप्त किया गया। क्योंकि हमें बहुत काम करना था।

मैंने पहले पृथ्वी से चार फुट ऊँचाई पर तख्ते रख दिये। और उन्हें रस्सी से बाँध दिया। और फिर हमने रस्सी के दूसरे सिरे पर पत्थर बाँधकर उस पार फेंक दिया। फिर उस ओर जाकर एक वृक्ष पर गरारी लगाकर उस पर रस्सी चढ़ा दी। और तख्तों वाली रस्सी गाय और गधे से बाँधकर उस पार खींचा। इनके द्वारा बड़े-बड़े लट्ठे और तख्ते नदी के इस पार से उस पार तक पहुँच गये। मैंने उसको उपयुक्त स्थान पर डाल दिया।

सन्ध्या निकट आ रही थी। अभी हमको दूसरा लट्ठा आर-पार रखना था। अब जान पड़ता था कि पुल तैयार हो जायगा।

हम लोग डेरे को वापस गये। और खाना खाया। सायंकाल की प्रार्थना के बाद अपने-अपने बिस्तर पर पहुँच गये।

—— ——

अध्याय ६

मेरी पहली आज्ञा यह थी कि लड़के कल की भाँति मूर्खता के साथ पुल पर न दौड़ें। क्योंकि यह दौड़ना खतरनाक है।

इसके बाद हम लोगों ने प्रार्थना की और अन्त में प्रातःकाल जलपान के बाद चलने की तैयारी होने लगी।

मेरी पत्नी ने कहा, "पशुओं को यहाँ नहीं छोड़ना चाहिए। अन्यथा यह सब भटक जायेंगे।" इसलिए मैंने गधे पर फ्रैंक को बैठा दिया। कारण कि वह बहुत तेज न चल सकता था। मैंने कहा कि सामग्री ढोने में कोई कठिनाई नहीं पड़ेगी। हम लोग वापस आकर दुबारा सामान ढो ले जायेंगे।

मैंने अपने पशु एक स्थान पर एकत्र किये। गधे और गाय के ऊपर मेरी पत्नी द्वारा मिले हुए झोलों में आवश्यक सामान भर कर रख दिया। एक खाली टीन गधे की पीठ पर कसकर उसमें फ्रैंक को बैठा दिया। ताकि वह दौड़ने पर नीचे न गिरे। अन्य लड़के बतखों और मुर्गियों को पकड़ने के लिए उनके पीछे दौड़ रहे थे। परन्तु असफल होकर खाली हाथ वापस आये।

मेरी पत्नी ने कहा, "ठहरो, मैं उनके पकड़ने की विधि समझाऊँगी।"

उसने कहा, "देखो जो मस्तिष्क की अवहेलना करके शान्ति के प्रयोग से कार्य पूर्ण करना चाहते हैं वे कार्य में सफलता जल्दी नहीं प्राप्त कर सकते।"

उसने खुले हुए तम्बू में कुछ अनाज के दाने और कुछ बिस्कुट के टुकड़े फेंक दिये। यह देखकर मुर्गियाँ और कबूतर दौड़-दौड़कर आ गये। जब सब चिड़ियाँ इकट्ठा हो गई तब तम्बू का दरवाजा बन्द

कर दिया। और सभी चिड़ियाँ पकड़ लीं। जैक धीरे-धीरे तम्बू के चारों ओर लोमड़ी की भाँति लूस लगाकर चिड़ियों के पकड़ने के फेर में घूमने लगा। एक-एक करके सभी चिड़ियाँ पकड़ ली गयीं। मैंने उन सबको पकड़-पकड़कर एक टोकरी में भरकर गाय की पीठ पर रख दिया। और उसके ऊपर से एक कपड़ा डाल दिया।

चलने की तैयारी हो जाने पर धूप में खराब होनेवाली कुछ सामग्री हमने तम्बू ही में छोड़ दी। और उसे अच्छी तरह रख दिया। अन्त में हमारा करवां चल पड़ा। हमने झोले में कारतूस भरकर रख लिए थे। और बन्दूकें साथ थीं। फ्रिट्ज और उसकी माँ सबसे आगे चले। और उसके पीछे गाय, फिर गधा और उसके पीछे जैक बकरी पर बन्दर बैठाये चला जा रहा था। कुत्ते इधर-उधर दौड़-दौड़कर चल रहे थे। शेष सामग्री और फ्रैंक मेरे साथ था।

मेरी स्त्री ने कहा, "हम लोगों का यह निवास-स्थान इतना सुन्दर रहेगा कि हम थकावट भूल जायेंगे।" मैंने सर्वप्रथम यही विचार रक्खा।

इसलिए यदि कोई दोष होंगे तो उसकी जिम्मेदारी मेरे ऊपर डाली जायगी।

मैंने उत्तर दिया, "कहीं का हो हम लोग तुम्हारा अनुसरण करेंगे क्योंकि तुम कुछ भी केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं करती हो बल्कि परिवार का विशेष ध्यान रहता है।" धीरे-धीरे हम लोग पुल के निकट पहुँच गये और पार जाने का विचार करने लगे। धीरे-धीरे पुल पार किया, परन्तु उस पार पहुँचने पर सभी जानवर हरी-हरी घास देखकर शान्त न रह सके और दौड़-दौड़कर चरने लगे।

हम लोग थोड़ी ही दूर चले थे कि देखा घास के मैदान में एक जगह कुत्ते भूमि खुरेद-खुरेद कर भूँक रहे हैं। ऐसा मालूम होने लगा कि कदाचित् कोई जंगली जानवर उन्हें चोट पहुँचाना चाहता है।

फ्रिट्ज इस आवाज की ओर बंदूक लेकर दौड़ पड़ा और डरपोक अर्नेस्ट मा की बगल में छिपने लगा। जैक पीठ पर बंदूक बाँधे हुए भाई के साथ दौड़ पड़ा। मैं स्वयं लड़कों को खतरे से बचाने के लिये चला। तब तक जैक चिल्लाकर कहने लगा, "पिता जी, जल्दी आइये बड़ी भारी साही है।" मैं दौड़ पड़ा और देखा जब कुत्ते उस पर वार करते थे तो वह गोल होकर लुढ़क जाती थी। कुत्तों ने पंजों के द्वारा आक्रमण किये। परन्तु उसने अपने शरीर के काँटे फुलाकर उनकी चोटें निष्फल कर दीं।

बिना किसी प्रकार की सोच-बिचार के जैक ने गीदड़ के चमड़े वाली पेटी से पिस्तौल निकाल कर उस साही के सिर में गोली मार दी। वह मरकर गिर गई।

फ्रिट्ज ने ईर्ष्या से कहा, "जैक तुम बड़े मूर्ख हो, अगर कहीं निशाना चूक जाता तो तुम हममें से किसी को मार देते या घायल कर देते।"

जैक ने कहा, "मैं तुम लोगों को मार कैसे देता जब तुम लोग पीछे हो और कुत्ते एक तरफ हैं।"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज! तुम निशाना न लगा सके इसलिये भेड़िये और भेड़ की भाँति जैक को व्यर्थ डाटते हो।" मेरे बच्चो! तुम अपने को सरल बनाने की कोशिश करो। यद्यपि जैक अभी बहुत प्रौढ़ नहीं है। फिर भी उसने अपने कार्य में सफलता प्राप्त की।

जैक पुकार कर कहने लगा, "माता जी! देखो मैंने यह साही एक ही गोली में मार डाली। अर्नेस्ट तुम भी देखो। पिता जी कह रहे थे कि यह खाने में बहुत अच्छी होती है।"

माँ ने उसके बहादुरी के कार्य को हृदय से स्वीकार किया।

अर्नेस्ट ने उसका परीक्षण किया और बतलाया कि इसके खरगोश और गिलहरी की भाँति ही बड़े-बड़े दाँत हैं और इसके छोटे-छोटे कान मनुष्य की तरह हैं।

हमने कुत्तों के घावों पर पट्टियाँ बाँध दी बच्चे अपने शिकार देखने में लगे रहे।

जैक ने डींग मारते हुए कहा, "क्या वास्तव में मैंने इसको मार दिया है ? देखिये ! इसके सिर पर कड़ी खाल है और काँटेदार बाल हैं।"

मैंने कहा, "तुम क्या करना चाहते हो ? इसको साथ ले चलो न या यहीं छोड़ दोगे।"

जैक ने कहा, "मैं इसे साथ अवश्य ले चलूँगा।" मैंने जैक से पूछा, "क्या तुम इसके निकट जाने में डर नहीं रहे थे। अगर यह अपने काँटे तुम्हें चुभा देता तो ?"

जैक ने कहा, "मैं यह समझ ही नहीं पाया था मैं इनको केवल कोयला से बाल समझता था।" मैंने कहा, "देखते हो कुत्ते घायल हो गये।" उसने कहा, "ठीक है, कुत्तों ने अपने आपको उसके ऊपर फेंक दिया था। अगर कुछ दूर रहते तो इतनी चोट न खाते।"

मैंने कहा, "जैक ! तुम बड़े वीर हो और तुम चतुरता से अपने साथियों की रक्षा कर सकते हो।"

मैंने चलते समय साही को एक कपड़े में लपेट कर गधे की पीठ पर डाल लिया।

कठिनाई से हम लोग लगभग सौ गज ही गये होंगे कि गधे ने चौंक कर रस्सी तोड़ ली और बड़े जोर से आवाजें करने लगा। तथा भाग पड़ा। मैंने कुत्तों को ललकार दिया। वे दौड़कर उसको आगे बढ़ने से रोक दिया। उस पर से फ्रैंक गिरते-गिरते बच गया।

फ्रैंक ने कहा, "पिता जी ! हम कितना अच्छा दौड़े।" मैंने कहा, "फ्रैंक ! तुम धन्यवाद के पात्र हो कि तुम उछल कर गिर नहीं पड़े। इस मूर्ख गधे से भविष्य में क्या आशा की जाय। मुझे आश्चर्य होने लगा।"

मैंने देखा कि गधे की पीठ पर लिपटे हुए वस्त्र को फाड़ करके साही के दो काँटे गधे की पीठ में चुभ गये हैं। मैंने उस पर दोहरा कपड़ा लपेट दिया। और गधे के भागने का कारण समझ कर फिर आगे चल पड़ा।

फ्रिट्ज अपनी बंदूक कंधे पर रक्खे हुए सबसे आगे तेजी से चला जा रहा था। वह साही न मार सका इसलिये कोई दूसरा शिकार करके अपने निशाने का प्रदर्शन करना चाहता था। तब मार्ग में अन्य किसी प्रकार की घटना के बिना हम अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँच गये।

अर्नेस्ट चिल्लाकर कहने लगा, "ये वृक्ष कितने सुन्दर हैं ? और कितने बड़े हैं ?"

मैंने स्वीकार किया कि मेरी पत्नी वास्तव में ठीक कह रही थी। यहाँ इतने बड़े-बड़े वृक्ष हैं। जिनके विषय में मैं कभी सोच भी नहीं रहा था। इन चिकने तने वाले वृक्षों पर जंगली जानवर क्या ? रीछ भी नहीं चढ़ सकते। और हम लोग यहाँ बिलकुल सुरक्षित रहेंगे।

वहाँ पहुँचकर मैंने जानवरों की टाँगें एक दूसरे से रस्सी द्वारा बाँध दी। ताकि वे इधर-उधर न जा सकें। फिर चिड़ियाँ स्वतंत्र कर दीं। वे इधर-उधर चुँगने लगीं।

अब वृक्ष के ऊपर रहने का स्थान बनाने का प्रश्न सामने आया। जब तक मैं पत्नी से इस विषय में राय लूँ। फ्रिटज ऊपर चढ़ गया। कुछ समय बाद ही मैंने बंदूक की दो आवाजें सुनी।

थोड़ी ही देर बाद फ्रिट्ज एक लकड़बग्घे की पिछली टाँगें पकड़े खींचे लिये आ रहा था। मेरे सामने लाकर परीक्षण के लिये उसने इसको उलट दिया।

मैंने कहा, "बहादुर फ्रिट्ज ! तुमने यह बड़ा भारी कार्य किया है। यह यदि यहाँ जीवित अवस्था में बना रहता तो बड़ी ही हानि पहुँचाता। अब इसका चमड़ा निकाल लो जो बड़ा ही उपयोगी है। उसने चमड़े से अपने लिये एक पेटी और शेष से कटारों के कमान तैयार कर लिये। काँटे, चाकू और चम्मच रखने के लिये एक झोला भी तैयार कर लिया।"

जैक ने भी साही के चमड़े के ऐसे ही सामान तैयार किये। और कुत्तों की जंगली जानवरों से रक्षा के लिये उस काँटेदार चमड़े के कवच तैयार कर लिये।

यह दोनों चमड़े के कार्य में लग गये। अर्नेस्ट भोजन बनाने का स्थान ठीक करने लगा। और फ्रैंक जलाने के लिये सूखी लकड़ियाँ एकत्रित करने लगा।

अर्नेस्ट शीघ्र ही खाली हो गया और हम दोनों पत्थर इकट्ठे कर करके चूल्हे का प्रबन्ध करने लगे। उसने मुझसे पूछा, "क्या ये चौड़ी पत्ती वाले बालवट के वृक्ष हैं ?"

मैंने कहा, "एक जैसी पत्तियों वाले सब पेड़ एक ही जाति के नहीं होते। देखो यह पत्तियाँ ऊपर पीलापन लिये हुए हैं और नीचे की ओर भूरा रंग है। ऐसा बालवट के वृक्ष में नहीं होता। मैंने याद दिलाया कि इस प्रकार की लताओं से घिरे हुए बड़े-बड़े आकार के अंजीर के पेड़ होते हैं।"

अर्नेस्ट ने कहा, "विश्वास करता हूँ आम समुद्र तट पर निचली भूमि में उत्पन्न होते हैं।"

मैंने कहा, "बच्चो तुम ठीक कहते हो, परन्तु यह बात काले आम के लिये लागू होती है। भूरे और लाल आम के

लिये यह बात आवश्यक नहीं है। जो बहुत ऊँचे और बड़े-बड़े नहीं होते।"

जब हम लोग यही बातें कर रहे थे कि फ्रैंक कुछ चण के लिये गायब हो गया था। वह मुँह में तथा हाथों में कछ भर कर लाया था। कहने लगा, "कितनी सुन्दर यह वस्तु मैं ढूँढ़ लाया।"

उसकी माँ ने उसको डाँटा और कहा, "जिन फलों को तुम पहचानते नहीं, उन्हें मत खाया करो। क्या पता वे जहरीली हों।" निरीक्षण करके देखा गया वे अंजीर थे।

फ्रैंक ने कहा, "यह हजारों की संख्या में मैदान की घास पर पड़े थे। और चिड़ियाँ तथा जानवर उन्हें खा रहे थे। मैंने समझ लिया कि यह अंजीर है। और जहरीले नहीं हैं।"

मैं फ्रैंक की भूल पर क्रोधित नहीं हुआ। परन्तु सभी बालकों को आज्ञा दी, कि वे "बिना पहचाना हुआ कोई फल न खावें। वे अनजान फल हानिप्रद हो सकते हैं। केवल उन फलों को खा सकते हो जिनको चिड़ियाँ-बन्दर खाते हों।

अर्नेस्ट ने पूछा, "लेकिन नारियल के लिये क्या करें। मैंने कहा, "अपने आकार और कड़े छिलके से वह आसानी से पहचाना जा सकता है?"

सभी लड़के फ्रैंक से अंजीर माँगने लगे। फिर वे जड़ पर बैठे हुए बन्दर के बच्चे के पास गये। उसे भी अंजीर दिया। उसने पहले इन फलों को सूँघा और फिर विचित्र प्रकार से खाने लगा। लड़के उसके खाने का ढंग देख-देखकर ताली पीटने लगे और उछल-उछल कर हँसने लगे। तब तक देखा कि मेरी गृहलक्ष्मी जी आग जलाकर सांयकाल का भोजन तैयार करने लगीं। फ्रिट्ज लकड़बग्घे का चमड़ा अलग कर चुका था। और फिर वह जैक की सहायता के लिये साही में लग गया।

लकड़बग्घे का चमड़ा उतरते ही कुत्तों ने खा लिया। साही पकाकर के हम लोगों के खाने का सामान तैयार किया गया।

जब मेरी पत्नी भोजन तैयार कर रही थी मैंने साही के काँटे लिये। आलपीनें आग पर तपाकर चुभाना शुरू कर दिया। इस प्रकार सुइयाँ तैयार होती थीं। उन्हें पाकर मेरी पत्नी बहुत प्रसन्न हुई। फिर मैं पेड़ पर चढ़ने के लिये सीढ़ी तैयार करने लगा। और रस्सियाँ ढूँढ़ने लगा।

मैंने पेड़ की जड़ों के निकट पत्थर इकट्ठे करने शुरू कर दिये। परन्तु हम वृक्ष पर चढ़ने में बहुत अभ्यासी न थे इसलिये उस दिन के लिये यह कार्य स्थगित कर दिया।

——

अध्याय १०

भोजन के बाद मैंने पत्नी से कहा, "कि हम लोग पेड़ की शाखाओं पर विस्तर लगाने में आज असमर्थ रहे। अतः आज एक दिन के लिये भूमि पर सोना पड़ेगा। कल गधों तथा गायों की सहायता से हम लट्ठे इत्यादि लाकर शाखाओं पर आसन बना लेंगे। साही के काँटों की सुइयाँ बना दी थीं। उससे मेरी पत्नी सिलाई का कार्य करने लगी।"

समुद्र तट पर अर्नेस्ट ने बाँस के झाड़ देखे। पास ही नरकुल और बेत भी थे। काट कर तीन या चार फीट के टुकड़े कर लिये और एक-एक बोझ बना कर ले चले।

बन्दूकें साथ में लेना हम लोगों का अभ्यास सा बन गया था। साथ में बिल भी था। वह हम लोगों के आगे-आगे चलता जाता था और हम लोग सावधानी से उसके पीछे-पीछे चलते थे।

'बिल' थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि एकाएक रुक कर गुर्राने लगा। अकस्मात् उस स्थान से पर फड़फड़ा कर 'फ्लैमिन्गो' चिड़ियाँ उड़ पड़ीं। फ्रिट्ज सदैव सतर्क रहता था उसने गोली चलाई आहत होकर कई चिड़ियाँ गिर पड़ीं। मैं एक घायल पक्षी की ओर दौड़ पड़ा जो चोट खाकर भाग रहा था। बड़ी दौड़ करने के बाद उसे पकड़ने में समर्थ हुये।

मैं चिल्लाकर कहने लगा, "पकड़ लिया, पकड़ लिया।" "मैं भी एक सुन्दर पक्षी पा गया।" कहता हुआ फ्रिट्ज भी दल-दल से बाहर आ गया और हम लोग साथ-साथ अपने निवास-स्थान की ओर चल पड़े।

जीवित पक्षी मेरे साथ देख कर बच्चों की प्रसन्नता की सीमा न रही। वे कहने लगे, "क्या इसको चोट अधिक लगी है? क्या इन्हें हम लोग पाल सकते हैं? क्या यह मेरी पालतू चिड़ियों के साथ जीवित रह सकती है?"

मैंने कहा, "फ्लैमिंगो चिड़िया पाली जाती है और शीघ्र ही पालतू हो सकती है। अतः हम लोग इसके जख्म ठीक करके पालेंगे।"

कठिनाई इस बात की थी कि यह पक्षी छोटे-छोटे मछलियाँ और कीड़े खाता है। जिन्हें प्राप्त करना कठिन था।

अर्नेस्ट ने कहा, "यहाँ के निकट के तालाब में पर्याप्त छोटी-छोटी मछलियाँ और सीपें हैं जिनको जैक पकड़कर इन्हें खिला सकता है।"

हम तीनों आदमी बेत और नरकुल के बोझ लेकर चिड़ियाँ लादकर चल दिये। हम लोग जब अपने परिवार के बीच पहुँचे, तब प्यार से हमारा स्वागत हुआ। सबने समुद्री चिड़ियाँ फ्लैमिंगो, देखकर प्रसन्नता प्रकट की। परन्तु मेरी पत्नी ने नहीं। कारण कि वह सोच रही थी कि इसका भरण-पोषण बड़ा दुष्कर रहेगा।

परन्तु मैंने उस पक्षी को देखा उसके एक पंख में गोली का घाव था और दूसरे में बिल के दाँतों का मैंने अपनी कैंची से थोड़ा सा मांस काट दिया और रुधिर निकाल दिया। फिर उनपर मक्खन नमक, शराब और सूअर की चर्वी से तैयार किया हुआ मरहम लगा दिया और एक पत्थर से चश्मे के निकट बाँध दिया। ताकि जब तक यह ठीक न हो पंख न हिला सके।

जिस पेड़ पर झोपड़ी बनाकर अपना अस्थायी निवास बनाना था, उसकी ऊँचाई नापने के विषय में बच्चों में बड़ा विवाद चल रहा था।

मैंने एक वेत लेकर अपनी एड़ी से आँखों तक की उँचाई के बराबर नापकर काट लिया। और उसको पेड़ से कुछ दूरी पर गाड़ दिया। फिर उसकी उँचाई से दुगुना लम्बा वेत लेकर पेड़ और पहले वेत में के बीच में गाड़ दिया और एक रस्सी लेकर एक त्रिभुज बनाकर फिर गणितशास्त्र की सहायता से उँचाई ज्ञात कर ली।

बच्चों ने पूछा, "पिताजी यह उँचाई किस प्रकार ज्ञात की?"

फ्रिट्ज ने योरुप में रेखा-गणित पढ़ी थी। वह समझ गया और एक गंभीर साँस लेकर कहने लगा।

"मैं समझता हूँ कि पेड़ की उँचाई उस दूसरे धागे के बराबर है जो कि तने से बँधा हुआ है।"

मैंने कहा, "बिल्कुल ठीक है। जब तुम समय पाना तो अपने भाइयों को यह सिद्धान्त समझा देना जिनपर कि यह गणना आधारित है।"

जैक ने कहा, "हम नीचे वाली शाखा की उँचाई नहीं समझ सकते।"

मैंने उत्तर दिया, "मैं यह भी जान सकता हूँ। अगर तुम उस रस्सी की नाप ले जो दूसरे वेत से बँधी हुई है। तो तुम समझ जाओगे।"

जैक ने कहा, "यह बड़े आश्चर्य की बात है। पेड़ की उँचाई जितनी हम लोग समझते थे उससे कहीं अधिक है।"

मैंने कहा, "अब अस्सी फीट लम्बी रस्सी होनी चाहिये। जिससे हम पेड़ पर पहुँचने के लिये सीढ़ी बना सकें। फ्रिट्ज और अर्नेस्ट ने सभी रस्सियों के टुकड़े जोड़ने के लिये कहा। मैं बैठ कर बाँस का धनुष तथा वेत को काट-काटकर तीर बनाने शुरू कर दिये। समुद्री चिड़ियों के पंख निकट लगा दिये ताकि वे हवा को चीरकर लक्ष्य तक पहुँच सकें।"

मैं अपना कार्य समाप्त ही कर रहा था कि सभी बच्चे इकट्ठे होकर चिल्लाने लगे और कहने लगे, "धनुष, धनुष पिताजी। पहले मैं चलाऊँगा।"

मैंने तीरों से सीसा लगाते हुये कहा, "बच्चो धैर्य धरो। यह हँसी की चीज नहीं है बल्कि बड़े काम की है।"

मैंने पत्नी से थोड़ी सी रूई माँगी उसने अपने हाथों से सिले हुये झोले में लाकर दे दिया।

फ्रिट्ज ने दो सौ अस्सी फुट लम्बी रस्सी जोड़कर तैयार कर दी। मैंने एक तीर से निचले सिरे से तागा बाँध दिया। तागे के निचले सिरे से रस्सी बँधी हुई थी। तागे की मदद से रस्सी ऊपर चढ़ गई। पेड़ के निचले हिस्से की वास्तविक उँचाई चालीस फुट मिली जैसा हमने गणना से निकाली थी।

अब हम लोगों ने रस्सी से सीढ़ी बनानी प्रारंभ कर दी। सौ फुट की रस्सी लेकर उसको दो बराबर भागों में बाँट दिया। फिर अर्नेस्ट दो-दो फुट लम्बे बाँस के टुकड़े काटने लगा और जैक ठीक कर मेरे पास लाने लगा। फ्रिट्ज और हम दोनों ने उन टुकड़ों के दोनों सिरे क्रमानुसार एक-एक रस्सी से बाँधते गये।

मेरी पत्नी यह देखकर आश्चर्य करने लगी कि सीढ़ी कितनी जल्दी तैयार हो गई।

एक रस्सी से सीढ़ी का सिरा बाँधकर रस्सी को शाखा के दूसरी ओर फेंक दिया और जब वह रस्सी हमारे पास आकर लटकने लगी तब पकड़कर उसे खींचा और सीढ़ी को शाखा से सटाकर लगा दिया।

अब सबसे पहले कौन सीढ़ी पर चढ़े यह प्रश्न था? मैं जैक को पहले चढ़ाना उचित समझा क्योंकि वह बड़ा फुर्तीला था और मुझे सीढ़ी की दृढ़ता पर अभी पूर्ण विश्वास नहीं था।

जैक बिल्ली की भाँति होकर सीढ़ी पर चढ़ गया। फिर मैंने फ्रिट्ज को सावधानी से चढ़ने के लिये कहा। मैंने सबको समझाया, "कि अपने शरीर का बोझ संतुलित अवस्था में रखना आवश्यक है।"

ऊपर का भाग कसकर शाखा से बाँध दिया गया और नीचे का भाग मैंने खींचकर जड़ों से बाँध दिया ताकि यह इधर-उधर झोंका न खाने लगे। फिर मैं भी सीढ़ी पर सावधानी से चढ़ गया और पत्नी से घिर्री लेकर एक ऊँची शाखा से बाँध दिया।

अब रात्रि हो चुकी थी। चंद्रमा का प्रकाश फैल चुका था आज हम लोगों ने नित्य से अधिक परिश्रम किया था।

सब लोग पेड़ से नीचे उतर आये और तब नीचे उतरकर संतोष की साँस ली।

एकाएक मैंने देखा कि फ्रिट्ज और जैक कहीं दृष्टि से ओझल हो गये। मैं चिन्तित हो गया। परन्तु कुछ समय के बाद उनका सांध्य गीत मेरे कानों में पहुँचा। वे लोग पेड़ के ऊपर चढ़ गये थे।

यह बात मुझे अच्छी न लगी मैंने उनसे नीचे उतरने के लिये कहा और मैं जानवरों को यथोचित स्थान पर पहुँचाने तथा रात्रि में अग्नि जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी करने की आज्ञा दी। रात्रि में अग्नि जलती रहने से गीदड़ आदि आक्रमण न कर सकेंगे क्योंकि जंगली जानवर अग्नि से बहुत डरते हैं।

हम लोगों को यह प्रसन्नता थी कि कल हम सब वृक्ष पर पहुँच जायेंगे और वहाँ सुरक्षित रह सकेंगे।

मेरी पत्नी ने इस बीच भोजन तैयार कर लिया था हम लोगों ने भर पेट भोजन किया। चारों तरफ से घरेलू पशु घेरे खड़े थे। मैं देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ कि कबूतर वृक्ष की सबसे ऊपर की शाखा पर पहुँच चुके थे और मुर्गियाँ सीढ़ी के डंडों पर बैठी थीं।

मैंने पशुओं को अंजीर की जड़ों से बाँध दिया। समुद्री चिड़िया के सामने-सामने कुछ अन्न डाल दिया।

उसके बाद अपनी रक्षा के लिये पेड़ के चारों ओर आग जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी कर लीं। ताकि जंगली जानवर आक्रमण न कर सकें। लड़कों ने दिन में अंजीर इकट्ठे कर लिये थे। उन सब लोगों ने खाया।

सायंकाल की ईश्वर वंदना के बाद हम लोग सोने के लिये अपने बिस्तर पर पहुँचकर सो गये। थोड़ी देर बाद आग जला दी गई।

जब मैं निकट पहुँच रहा था तो एकाएक बन्दूक की आवाज सुनाई पड़ी। आगे बढ़े तो लड़के हमें देखकर खुशी से चिल्लाते हुये दौड़ पड़े। उन्होंने सन्दूक खोला तो उसमें और कुछ नहीं केवल किसी मल्लाह के सड़े हुए कपड़े थे।

मेरी पत्नी इन बातों से बहुत अप्रसन्न हुई कि मैं उसको बिना बतलाये चला गया था। परन्तु जब उसने वह उपयोगी सामान देखा तो उसने अपना क्रोध शान्तकर लिया और हम लोग प्रातः-काल के नाश्ते के लिये एक साथ बैठ गये।

तब लड़कों ने अपने द्वारा मारी हुई चिड़ियाँ दिखलाईं। मेरी पत्नी ने यह शिकायत की इन लोगों ने बहुत सी कारतूसें और बारूद शिकार में बर्बाद कर दी हैं कारण यह कि अपना लक्ष्य नीचा करके और थोड़ी दूरी से गलत लगाते हैं। इस प्रकार के प्रयोग से बन्दूकों का मशाला शीघ्र ही समाप्त हो जावेगा और हम लोगों के काम लायक चिड़ियाँ काफी मौजूद हैं।

मैंने लड़कों को भविष्य में इस प्रकार से मशाला बर्बाद करने से रोक दिया और कहा कि यही कारतूसें और बारूद ही हमारी रक्षा के साधन हैं और जब तक हम लोग दुबारा उस बरबाद जहाज से कारतूसें तथा बारूद ला सकें। बहुत सावधानी से और मुख्य

आवश्यकता पर ही काम में लाई जावें। उसके स्थान पर धनुष-बाण का अभ्यास करना चाहिए।

मैंने समझाया कि पेड़ की शाखा से कैराटा वृक्ष की पत्तीवाले धागा से लटकाकर तथा उस पर बाण का निशाना लगाने का अभ्यास करें।

इस बीच में पक्षियों की चिल्लाहट सुनाई पड़ी। ऐसा प्रतीत हुआ कि कदाचित् कोई लोमड़ी उनके बीच पहुँच गई है। हम लोगों ने बड़ी जल्दी की और जाकर देखा कि बन्दर एक चिड़िया को मार डालने का प्रयत्न कर रहा है। मेरी पत्नी ने झट उसको डाटकर भगाया।

फिर मैंने अपना स्लेज बनाने का प्रयत्न किया। दो टेढ़ी लकड़ियाँ लेकर उन तीन छड़ें रखकर बाँध दिया एक-एक दोनों के सिरों पर और दूसरी बीच में बाँधकर टेढ़ी लकड़ियों को ऊपर की ओर उलटकर रख दिया। यह एक बड़ी उपयोगी चीज बन गई।

मैंने पूरे दिन अपने कार्य में जोरों से लगा रहा और आँख उठाकर भी इधर-उधर नहीं देखा। कार्य समाप्त होने पर देखा कि मेरी पत्नी अग्नि तैयार करने के प्रबन्ध में लगी हुई है। आग में लोहे की सलाखें तपाकर और हथौड़े की सहायता से मैंने एक शानदार तलवार तैयार कर ली।

मैं शाम के भोजन के बाद समुद्र-तट से सामान लाने की योजना बनाई। अर्नेस्ट मेरे साथ चलने को तैयार हुआ, फ्रिट्ज परिवार की रक्षा के लिए रुक गया। हम लोगों ने अपने साथ में फ्रिट्ज द्वारा तैयार की हुई ढाल और शिकारी चाकू, बन्दूकें तथा बिल कुत्ता लिया और चल पड़े। तुमको घर की रक्षा के लिए ही छोड़ दिया।

स्लेज गाड़ी लेकर हम दोनों समुद्र के किनारे-किनारे चले, क्योंकि घास पर स्लेज को लेकर चलना कष्टप्राय था। थोड़े ही समय के बाद हम गन्तव्य स्थान पर पहुच गये।

हम लोगों ने गाड़ी पर बारूद, बन्दूकें, मक्खन के डिब्बे की पनीर आदि लादना शुरू कर दिया।

उसी समय मैंने नहाने का प्रबन्ध सोचा और विचार किया कि टहलने के बाद स्नान करना बड़ा आनन्दप्रद रहेगा।

इसलिए मैं सेफ्टी खाड़ी में पहुँचा। देखा कि उसके किनारों पर दलदल था और उसमें नरकुल जमे खड़े थे। एक ओर छोटी-छोटी कंकरीली चट्टानों की शृंखला थी जो कि स्नान के बहुत उपयुक्त थी और समुद्र के अन्दर दूर तक चली गई थी। खाड़ी सब ओर से पूर्ण तथा सुरक्षित थी।

मैंने पूर्ण आनन्द के साथ उस सुरक्षित खाड़ी में स्नान किया। मैंने सुना कि अर्नेस्ट बड़े जोर से चिल्ला रहा है। "पिता जी देखो एक बड़ी भारी मछली मुझे खींच ले जाना चाहती है।" मैं यह आवाज सुनकर तेजी के साथ उसकी ओर दौड़ पड़ा।

मैंने उस मछली को बड़ा जोर लगाकर खींचा। यह देखकर अर्नेस्ट ने अपनी कुल्हाड़ी से उसके सिर पर चोट की। मैंने देखा कि वह लगभग पन्द्रह फुट लम्बी थी। हम उसको घर लाने के प्रबन्ध में लग गये।

मैंने कहा, "शाबाश मेरे बेटे! इस बार तुमने बड़े पुरुषार्थ का कार्य किया। हम लोगों के लिए कुछ दिन के लिए खाने का प्रबन्ध हो गया।"

मैंने पूछा, "अर्नेस्ट! यह मछली तुमने कैसे पायी?"

"उसने बताया कि मैं अपने साथ मछली पकड़ने का कोटा ले आया था। पहले छोटी-छोटी मछलियाँ मिलीं फिर इस बड़ी

मछली ने इस पर आक्रमण किया। तब मैंने चिल्लाना शुरू कर दिया।"

मैंने मछली को ध्यान से देखा, यह सेमन मछली थी ऋतु गर्म थी इसलिये मैंने उसको साफ किया तथा उस पर नमक लगा दिया। ताकि सुरक्षित दशा में पहुँच सके।

जब तक मैं इस प्रबन्ध में था अर्नेस्ट समुद्र में स्नान करने चला गया। मैंने कुछ नमक इकट्ठा कर लिया और सभी आवश्यक सामान लेकर स्लेज पर लादकर चलने के लिये तैयार हो गया।

हम लोग लगभग आधा मार्ग पार कर आये थे कि बड़ी धारा में आते ही बिलने बड़े जोर से भूँकना शुरू कर दिया। सामने एक बड़ा जानवर दिखाई पड़ रहा था जो कूद-कूद कर दौड़ रहा था।

हम लोगों को देखकर वह इधर-उधर को तथा हमारी ओर दौड़ने लगा। मैंने एक फायर की परन्तु जल्दी के कारण से निशाना चूक गया। अर्नेस्ट ने देखा कि वह पशुबिल की दृष्टि से ओझल होकर लम्बी घास में छिपकर लेट गया।

तब तक अर्नेस्ट ने गोली मार दी। वह मरकर नीचे गिर गया। उसका आकार भेंड़ का जैसा था और पूँछ चीते जैसी लम्बी थी। उसका चमड़ा और आँख चूहे की जैसी थीं। उसके कान खरगोश की भाँति बड़े-बड़े थे पंजे बड़े थे। और गिलहरी की भाँति के थे। इसके पीछे के पैर बड़े-बड़े और दृढ़ थे।

मैं बड़ी देर तक उसकी ओर ध्यान से देखता रहा। परन्तु यह न जान सका कि यह कौन सा पशु है ? अर्नेस्ट कुछ समय तक विचार के बाद चिल्ला पड़ा और कहने लगा यह कंगारू है।

मैंने कंगारू के चारो पैर बाँस से बाँध दिये और स्लेज गाड़ी पर लादकर उसे कसकर बाँध दिया। घर की ओर को चल पड़ा।

अर्नेस्ट इस बात पर बड़ा प्रसन्न था कि उसने अपने हाथ से बड़ा अच्छा शिकार किया जिसकी आशा भी नहीं थी।

वह कहने लगा, "सब लोग इसे मरा हुआ देखकर क्या कहेंगे ?

मैंने कहा, "मैं स्वीकार करता हूँ कि तुम्हारे हाथ दृढ़ हैं और तुम्हारी आँखें लक्ष्य वेध के लिये बहुत उपयुक्त हैं।"

मैं कहता गया, "कैप्टन कुक ने पहले-पहले इस पशु का वर्णन दिया है। इसलिये मैं तुम्हारी इस महत्व पूर्ण खोज को हृदय से स्वीकार करता हूँ।"

अर्नेस्ट ने कहा, "पिताजी ! आप इतने प्रसन्न मालूम होते हैं कि मानो आपने ही इसको अपने हाथों से मारा है।"

"इसका कारण यह है कि मैं अपने लड़कों को अपने से अधिक प्यार करता हूँ। इसलिये उनकी सफलता से मैं जितना प्रसन्न होता हूँ उतना अपनी स्वयं की सफलता से नहीं।"

जब मैं शिकारागृह पहुँचा तब सभी ने आशा और प्रसन्नता की भावना से मेरा स्वागत किया। घर के सभी लोग इस विचित्र शिकार को आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। परन्तु फ्रिट्ज शान्त था। उसे जलन थी कि अर्नेस्ट ने यह शिकार किया और मैंने कुछ नहीं। परन्तु इस अन्तर्द्वन्द्व को उसकी समझदारी से परास्त किया। और फिर उसने भी सबकी प्रसन्नता में भाग लिया।

अन्त में उसने मुस्कराते हुये कहा, "आप जब बाहर जाया करें तो मुझे भी साथ ले लें। क्योंकि मैं यहाँ बिल्कुल बेकार रहता हूँ। इसलिये अच्छा नहीं लगता।"

मैंने कहा, "हाँ, मेरे दोस्त ! यह हँसी की सभी बातें सर्वदा बहुत सुन्दर नहीं होतीं। कल मैं जहाज पर जाऊँगा तुम मेरे साथ चलना। यदि तुम कोई शिकार न मार सके तो क्या हुआ ? मैं तुम्हें घर पर तुम्हारी माता और भाइयों की रक्षा के लिये

रोकता हूँ। इस काम का भी कोई महत्त्व है। यद्यपि शिकार के लिये अभ्यस्त होना अच्छा है।

मेरे चारों तरफ से मेरे छोटे-छोटे बच्चे सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहने हुये खड़े थे। और मेरा कथन चाव के साथ सुन रहे थे। मेरी पत्नी ने समझाया कि मेरी अनुपस्थिति में उसने उस संदूक से मल्लाह वाले कपड़े निकालकर साफ किये और लड़कों को पहनाया अब वे कपड़े बड़े सुन्दर मालूम पड़ने लगे थे।

— —

अध्याय ११

रात्रि के प्रथम पहर में मैं निश्चिन्त होकर न सो सका। कारण यह था कि कहीं पत्तियाँ गिरती थीं कहीं पेड़ चरचराने की आवाज आती थी। इस प्रकार की हवाइयाँ मुझे बार-बार सतर्क कर रही थीं। धीरे-धीरे जलती हुई अग्नि की शिखायें भी शान्त हो रही थीं। मैं अपने बिस्तर से नीचे उतरा और आग ठीक करके फिर ऊपर पहुँच गया। आधी रात के बाद मैंने अपने बिस्तर से फिर झाँक कर देखा, प्रत्येक वस्तु अपनी वास्तविक स्थिति में थी। इस प्रकार रात के पिछले पहर में मुझे नींद आई।

मेरी पत्नी नीचे उतरी और गाय का दूध दुहा। फ्रैंक जैक तथा अर्नेस्ट को साथ लेकर समुद्र तट पर मकान बनाने के लिए तख्ते और लट्ठे लेने के लिये पहुँच गई।

मैं फ्रिट्ज को साथ लेकर वृक्ष के ऊपर चढ़ गया। पेड़ की शाखायें पर्याप्त मोटी थीं। घनी भी थीं। मैंने कुल्हाड़ी से बेकार शाखायें छाँट डालीं। और उन्हें मोटी डालों पर बिछा दिया। इस प्रकार के सभी प्रबन्धों में मुझे कुछ समय लग गया। तब तक मेरी पत्नी और बच्चों ने समुद्र तट से ला-लाकर पर्याप्त सामान एकत्रित कर लिया था। घिर्री की सहायता से मैंने लकड़ी के टुकड़े ऊपर पहुँचा दिये और फर्श बनाने का काम प्रारम्भ कर दिया।

इस कार्य में तथा समुद्र से लकड़ियाँ लाने में सुबह का सारा समय समाप्त हो गया। किसी ने भोजन का जिक्र ही न किया। केवल बिस्कुट खाकर ही भूख निवारण की गई।

भोजन के बाद तुरन्त ही हम लोग फिर काम में लग गये। अब हमारा हवाई मकान सुन्दर प्रतीत होने लगा। डालों की शाखाओं पर 'हैमक' बिस्तर पड़े हुये थे। मैं फ्रिट्ज के साथ नीचे उतरा। तो देखा कि कुछ तख्ते रक्खे थे, उनसे हम लोगों ने जड़ों का सहारा लेकर एक दैनिक भोजन के लिये मेज बना ली। अब मुझे कुछ थकावट का अनुभव होने लगा था। मेरी पत्नी ने भोजन तैयार किया। बच्चे कल रात की भाँति लकड़ियाँ इकट्ठी करने लगे। मैं एक स्थान पर चुपचाप बैठ गया। कुछ देर बाद अपनी पत्नी से कहा।

"प्रिये! मैंने पूरे दिन घोड़े की तरह काम किया है और बहुत थक गया हूँ, कल मैं आराम करूँगा।"

उसने प्यार से कहा, "अवश्य! कल आराम कीजिये। मैंने दिनों की गणना की है। कल रविवार होगा। एक रविवार हम लोगों ने उस रेगिस्तान में व्यतीत किया था।"

मैंने लड़कों को पुकारा तो वे तुरन्त मेरे पास आ गये। उनकी माँ ने उन्हें प्रेम से भोजन कराया।

उसी समय वह फ्लैमिंगो पक्षी भी साथ में अन्य सभी चिड़ियों को लिये हुये आ गया। वह हम लोगों से अब बिल्कुल हिल-मिल गया था। मेरा छोटा बन्दर भी अब अपनी जंगली आदतें छोड़ चुका था। और अपने दाँत पीस-पीसकर हम लोगों को हँसाता था। बच्चों से वह बिल्कुल हिल-मिल गया था। और वे उसको खिला-खिलाकर प्रसन्न किया करते थे।

मैंने दबी जबान से जब पत्नी के सामने भग्न जहाज पर से और सामान लाने का प्रस्ताव किया तो उसने बड़ा विरोध किया। मैंने कहा, "मैं तुम्हारे भय को समझता हूँ लेकिन मैं उस भ्रष्ट जहाज पर तभी जाता हूँ जब समुद्र बिल्कुल शान्त होता है और

वातावरण बिल्कुल स्वच्छ होता है। उस पर मूल्यवान वस्तुयें हैं उनको लाने के लिये ही मैं वहाँ जाया करता हूँ।

हम लोग इस प्रकार बातचीत कर रहे थे कि ऐसा आभास हुआ कि लड़के ऊँघ रहे हैं। मैंने उन्हें ऊपर चढ़ने की आज्ञा दी। सबसे पहले बड़े वाले लड़के ऊपर पहुँच गये। फिर मेरी पत्नी भी कुछ भय और हिचक के साथ गई। अब मेरी बारी आई। मैंने अपनी पीठ पर फ्रैंक को बाँध लिया और कुछ कठिनाई का सामना करके ऊपर पहुँच गया। ऊपर जाकर मैंने सीढ़ी ऊपर खींच ली।

आज रात की अपेक्षा भय कम था इसलिये आग नहीं जलाई गई। परन्तु मैंने जंगली जानवरों की रक्षा के लिये तथा कुत्तों की सहायता के लिये बंदूक भर कर रख ली। सब लोग निर्भय लेट गये तथा दिन भर थके होने के कारण आनन्द के साथ सो गये।

सूर्योदय के समय बिल्कुल ताजा होकर मैं उठ बैठा। लड़के अब बिना किसी प्रकार की आह-चाह के झूलों में सोये हुये थे।

फ्रैंक ने कहा, "आज रविवार है। हम लोग आज कविता-पाठ करेंगे।" मैंने कहा, "आज नहीं। पहले अपनी माता से अच्छी-अच्छी कवितायें याद करलो फिर उनको क्रम से पाठ किया करना। ईश्वर की वंदना के साथ कविता-पाठ अच्छा रहेगा।

मैंने अपना प्रात:काल का कार्य ईश्वर की प्रार्थना में और उसको धन्यवाद देने में व्यतीत कर दिया।

लड़कों के बीच आज के कार्यक्रम के सम्बन्ध में बहुत वाद-वाद हुआ। मैंने उन्हें भगवत् भजन में लगाने का प्रयत्न किया। तु मैंने देखा उनकी अवस्था के लिये यह स्वाभाविक न था। उनको खेलों की ओर प्रेरित किया, जैक ने मुझसे मेरा धनुष तीर अभ्यास करने के लिये माँगे। फ्रिट्ज लकड़बग्घे के ने थैला बनाने में लग गया। फ्रैंक ने बंदूक चलाने का अभ्यास

प्रारंभ किया। तबतक मैं उसके लिये छोटा धनुष और तीर तैयार करने में लग गया।

मेरे लड़के धनुष चलाना सीख लें, यह मैं हृदय से चाहता था क्योंकि मेरे पास की कारतूसें और बारूद किसी भी समय समाप्त हो सकती हैं। यदि हम लोग बाण चलाना नहीं सीखेंगे तो अपना भोजन कैसे प्राप्त कर सकेंगे।

मैंने देखा कि जंगली मनुष्यों के लड़के जो कि हमसे भी छोटे-छोटे हैं, चालीस या तीस फुट की ऊँचाई पर बैठी हुई चिड़िया अपने बाणों के नीचे गिरा देते हैं। यदि यह मेरे लड़के भी अभ्यास करें तो ऐसा ही कर सकते हैं।

मैं इस उधेड़-बुन में पड़ा था। फ्रिट्ज अपना तैयार किया हुआ चमड़ा दिखाने आया। इसी बीच में फ्रैंक और अर्नेस्ट कहीं दृष्टि से ओझल हो गये और मैं न समझ पाया कि वह किधर निकल गये।

मैंने कहा, "चमड़े को अच्छी तरह सुखा लो। फिर इसे चाकू से साफ कर लो और पानी में उबाल डालो। फिर सुखाओ तब फिर मक्खन और नमक मिलाकर साफ कर लो। यह चमड़ा चाकू और अन्य शस्त्रों की म्यान बनाने में काम देगा।"

मैं यह समझा ही रहा था कि बंदूक का शब्द कानों में पड़ा और दो चिड़ियाँ चोट खाकर मेरे सामने गिर पड़ी। तब देखा कि अर्नेस्ट पेड़ों की शाखाओं के बीच से सिर निकालकर कह रहा था "मैं आशा करता हूँ कि मेरा लक्ष्य ठीक रहा।"

तबतक अर्नेस्ट सीढ़ी से ऊपर चढ़ गया और जैक तथा फ्रि[illegible] ने भी उसका पीछा किया। मैंने कहा, "तुम लोग क्या कर[illegible] हो?" शायद अर्नेस्ट यह भूल गया कि आज रविवार है।

यह सुनकर दोनों बड़े लड़के नीचे उतर आये। मैंने [illegible] उनमें से एक चिड़िया घायल थी और दूसरी बहुत छोटी [illegible]

कबूतर था जिसको अधिकतर लोग "आरहोलन" कहा करते हैं। जो खाने में बड़ा स्वादिष्ट होता है।

जंगली अंजीर अब पकने लगे थे और उनको खाने के लिये तरह-तरह के बहुत से पत्ती आने लगे थे। मैंने सोचा अब भोजन का प्रबन्ध अपने आप हो गया।

मैंने इसी विचार से स्थान का परिवर्तन कर दिया था कि यहाँ मेरे पशुओं को और चिडियों के चरागाहों और फलों के वृत्तों से आराम मिलेगी। इसलिये मैंने अपनी पत्नी से इस बात की ओर संकेत किया। शाम को भोजन में दोनों चिड़ियाँ सहायक हुईं।

———

अध्याय १२

जब तक हम लोगों का भोजन तैयार हो रहा था। जैक अपना धनुष-बाण लिये हुये अचूक लक्ष्य भेद कर रहा था। मैं फ्रैंक के लिये छोटी कमान तैयार कर रहा था। मैंने विचार किया कि जैक अच्छा निशानेबाज है। अतः इसके लिये एक तरकस तैयार कर दिया जावे। अतः मैंने एक वृक्ष की छाल लेकर एक तरकस बना दिया।

मैं यह सब कार्य कर ही रहा था इसी बीच में फ्रिट्ज ने चमड़ा तैयार कर दिया जैसा कि मैंने समझाया था। तबतक मेरी पत्नी ने सूचना दी कि भोजन तैयार है। मैं भोजन के लिये चल पड़ा। भोजन करते समय मैंने अपने लोगों से कहा, "क्या तुम नहीं सोचते हो ? कि हमको निवास-स्थान का कुछ नाम रख देना चाहिये और इस द्वीप के विभिन्न स्थानों का यथोचित नामकरण कर देना चाहिये। जिस प्रकार से कि खोज करने के पूर्व पुरखे करते रहे हैं।

हम लोग स्थलों का नामकरण वहाँ पर हुई मुख्य-मुख्य घटनाओं के आधार पर करेंगे जिसमें जब कभी हम उस स्थान का नाम लें तो पूर्व घटना की याद हो आवे।

जैक ने कहा, "हाँ, हाँ, विचार बहुत सुन्दर हैं परन्तु यह नामकरण हम किस स्थान से प्रारंभ करेंगे ?"

मैंने कहा, "पहले वह खाड़ी ले लो जहाँ पहले बार हम इस भूमि पर उतरे थे। उसका क्या नाम रक्खेंगे ?"

फ्रिट्ज ने कहा, "उसका नाम 'सीप की खाड़ी' रक्खा जाय क्योंकि हम लोगों ने वहाँ सीपें बहुत प्राप्त की थीं।"

जैक ने कहा, "उसका नाम केकड़े की खाड़ी रक्खा जाय"

मैंने कहा, "यह नाम ठीक नहीं है।" मेरी पत्नी ने अन्त में अपना मत दिया और कहा, "उसका नाम सुरक्षित खाड़ी रक्खा जाय और उस स्थान का नाम जहाँ पर हम लोगों ने पहले तंबू लगाये थे 'तम्बू प्रदेश' होना चाहिये और उस निकट के टापू का 'शार्क द्वीप' तथा जहाँ दल-दल में फ्रिट्ज ने फ्लैमिंगो मारा था उसका नाम 'फ्लैमिंगो दल-दल' रक्खा जाय।"

मैंने कहा, "और अपने इस घर का तथा पहले वाले घर का क्या नाम रक्खेंगे।"

अर्नेस्ट इसका नाम 'पेड़ की किला' रखना चाहता था परन्तु यह नाम फ्रिट्ज के पसन्द न आया। वह इस स्थान का नाम 'ईगल का घर' रक्खा जाय, जैक इसको अंजीर नगर नाम देना चाहता था।

मैंने कहा, "तुम सब शिकारी हो और शिकरा पक्षी भी शिकारी होता है और घोंसला वृक्षों पर बनाता है इसलिये इसका नाम 'शिकरे का घोंसला' रक्खा जाय। पहाड़ी से जिस घाटी में उतरकर मैंने और फ्रिट्ज ने अपने बरबाद जहाज के साथियों की खोज की थी और किसी को भी न पाकर निराश हो गये थे 'निराशा अंतरीप' नाम रक्खा जाये और जिस चश्मे के तट पर हम लोगों पर गीदड़ों ने आक्रमण किया था उसका नाम 'गीदड़ नदी' रक्खा जायेगा।

मैंने फ्रिट्ज को चमड़ा साफ करने में सहायता दी और उसे ...ीच तुम कुत्ते की नाप का दृढ़ कोट तैयार कर लिया। उसको ...नने पर तुर्क गीदड़ों से क्या लकड़बग्घों से भी सुरक्षित हो गया।

'बिल' दूसरा कुत्ता अभी अरक्षित था तुर्क उसके साथ खेलने परन्तु बिल की पीठ पर साही के काँटों के घाव थे उनके ... एक तरफ बैठकर वह कराहने लगा। जैक ने साही के चमड़े

से एक काँटेदार कोट उसके लिये भी बना दिया। अतः वह भी जंगली जानवरों के आक्रमण से सुरक्षित हो गया।

अर्नेस्ट और फ्रैंक, फ्रिट्ज की सहायता से बाण चलाने का अभ्यास कर रहे थे। संध्या हो चली थी और दिन की गर्मी कम हो गयी थी। ठंढी हवा का आनन्द लेने के लिये हम लोगों ने टहलने का प्रोग्राम बनाया।

हमारा मत सभी ने स्वीकार किया और सब लोग हमारे पीछे-पीछे चल पड़े। फ्रिट्ज ने लकड़बग्घे के चमड़े की पेटी बाँध ली और जैक को साही के चमड़े का कवच पहना दिया गया। सब लोग एक-एक बन्दूक और बारूद लेकर चल पड़े।

जैक ने धनुष और बाण ले लिये। केवल मेरी पत्नी निःशस्त्र थी। तुर्क सतर्कता से आगे-आगे चला जा रहा था और साथ में बन्दर भी था। बन्दर अपने प्राकृतिक स्वभाव के कारण कूदकर बिल की पीठ पर चढ़ गया बिल भौंक पड़ा और बुरी तरह से उसे पटक दिया।

फ्लैमिंगो पक्षी को बच्चे क्यों चिढ़ा रहे थे? इसलिये हमारे संरक्षण में आकर कुछ क्रोध किये हुये चलने लगा।

झरने के तट का मार्ग बड़ा रमणीक था और विशाल वृक्ष की छाया में हरीतिमा का आनन्द लेते हुये हम लोग मन्द गति से चले जा रहे थे।

उसके पश्चात् हम लोग पर्वतों की उस शृंखला पर पहुँचे जहाँ छोटा-सा जल-स्रोत वक्र गति से कल-कल शब्द करता हुआ बह रहा था। उसके किनारे-किनारे चलकर हम लोगों ने वहीं लम्बी-लम्बी घास पार की और फिर गीदड़ी नदी के निकट पहुँच गये।

हमारे दाहिनी ओर चट्टान थी और बायें ओर कुछ दूरी पर समुद्र लहरा रहा था और सामने एक हरा-भरा चरागाह का मैदान था। मैदान का दृश्य अत्यन्त आकर्षक था। खोहों के इधर-

उधर फूलों के पौधे अपनी पूर्ण सजावट के साथ लताओं से लिपटे खड़े थे। ज्ञात होता था कि मानो प्रकृति सुन्दरी ने उसको अपने हाथों से सजाया है। पहाड़ी पर भाँति-भाँति के सुन्दर-सुन्दर वृक्ष खड़े थे भारतीय अंजीर थे, एलुआ था, नागफली अपनी टेढ़ी-मेढ़ी शाखा लिये खड़ा था।

जिस फल ने मुझे सबसे अधिक लुभाया था वह था 'पाइन सेब' जिसे कुछ लोग सब फलों का राजा कहते हैं।

हम सब लोग शीघ्रता के साथ उस वृक्ष के निकट बढ़ गये और सभी लोग सेव तोड़-तोड़कर खाने लगे। बन्दर का बच्चा सबसे पहिले पहुँच गया। हम वह वृक्ष पहचानते थे इसलिये निर्भीक होकर फल खाने लगे। मैंने बच्चों को अधिक खाने से रोक दिया। क्योंकि अधिक खाने से उन फलों का खट्टा रस हानि कर सकता था।

मैंने सबसे अधिक 'कैराटा' के वृक्ष को पसन्द किया वह एक मसाले का वृक्ष था। मैंने बच्चों से कहा, "देखो यह अमरूद का फूल है। बड़ा ही सुन्दर है अपने पतले डंठल पर बड़ा बोझ लिये खड़े थे।"

बच्चों ने मुँह में सेब भरे हुये कहा, "फूल किस काम का अगर फल नहीं। इन सबसे अच्छा अनन्नास होता है।"

मैंने कहा, "तुम लोग कितने लालची लड़के हो। वास्तविक आनन्द और सौंदर्य के सामने इन क्षणिक आनन्ददायक फलों के फेर में पड़े हो। जैसा कि संसार के अन्य लोग किया करते हैं। ँ तुमको अब अंतर दिखलाऊँगा। अर्नेस्ट मेरा बक्स ले आओ। ामें से चकमक पत्थर, दियासलाई और लैम्प ले आओ।"

अर्नेस्ट कुछ सूखी लकड़ियाँ रखकर लैम्प से उनको जलाने ंबन्ध करने लगा। मैंने कहा, "अर्नेस्ट! इसके जलाने में बामय लगता है और बड़ा झंझट है। देखो, मैंने एक कैराटा

की एक सूखी लकड़ी ली और इसको चकमक पत्थर से रगड़ दिया। पहले उसमें चिनगारियाँ निकलीं और फिर वह जलने लगी। लड़के यह देख आश्चर्य में पड़ गये।"

मैंने कहा, "तुम लोगों ने देखा? इस वृक्ष से केवल यही ही नहीं बल्कि और भी लाभ हैं। अपनी माँ से पूछो जब उनका तागा समाप्त हो गया था तब उसने तुम लोगों के कपड़े किस प्रकार तैयार किये थे। इस "कैरटा" की पत्तियों से हम लोगों की आवश्यकतानुकूल बड़ा अच्छा डोरा प्राप्त हो जाता है।"

मैंने एक पत्ती तोड़कर पत्नी के हाथ में दी। उसने उसमें से तागा निकाल कर लड़कों को दिखाया वे आश्चर्य से देखने लगे।

अब बतलाओ "क्या कैरटा पाइन सेब से अच्छा नहीं है जिसको तुम लोग बहुत पसन्द करते हो।"

मेरी पत्नी ने कहा, "पत्ती से तागा निकालने में समय बहुत लगता है।"

मैंने बताया, "कि ऐसा नहीं है, पत्ती को धूप में अथवा आग की आँच में सुखा लीजिये फिर बड़ी आसानी से तागा निकल आयेगा।"

फ्रिट्ज ने कहा, "कि मैं समझ गया कैरटा का वृक्ष पाइन सेब के वृक्ष से दस गुना अच्छा है। और बड़े काम का है। परन्तु पिताजी यह काँटेदार तमाम वृक्ष चारों तरफ से घेरे खड़े हैं ये किस काम के हैं। मैं नहीं समझता कि इनका क्या उपयोग है?"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज! तुम बिना विचार किये इतनी जल्द अपना निर्णय दे देते हो। यह ठीक नहीं। उदाहरण के लिये गृ ले लो। यह सूखी जलवायु में उत्पन्न होता है और इसकी प ि बहुत बड़ी-बड़ी होती हैं। अतः यह वृक्ष भूमि की भी अ अधिक वायु से अपना भोजन प्राप्त करता है।"

हम कठिनाई से बात समाप्त कर पाये थे कि लड़के अपनी जेबें गूलरों से भर लाये और खाने लगे। परन्तु देखा कि वे थूक-थूककर फेंकने लगे। मैंने जैक को बुलाया उससे एक अंजीर लिया। उसका ऊपर का तथा नीचे का भाग चाकू से थोड़ा काट दिया। फिर अँगूठे से और अनामिका के सहारे से पकड़ कर उसका हल्का पतला छिलका उतारकर फिर खाने को दिया। उन्होंने प्रेम से खाया। मैंने उनको इसी प्रकार से खाने के लिये कहा।

अपना-अपना सामान लाद-लादकर हम लोग घर की ओर वापस हो चले। मार्ग में बतखें और मुर्गियाँ चिल्ला रही थीं।

अध्याय १३

मैं जब समुद्र के तट से होकर आ रहा था। वहाँ कुछ उपयोगी सामान पड़ा हुआ था। बोझ बड़ा भारी था इसलिये मैंने तुरन्त विचार किया कि कल प्रातःकाल जबतक लड़के सोकर उठे-उठे मैं यह सामान उठा ले जाऊँगा।

सूर्य की प्रथम किरण के साथ-साथ हम और अर्नेस्ट मकान से नीचे उतर आये और शेष अपने स्थान पर सोते रहे।

मैंने अपने साथ में अपना गधा लिया और उसको एक पेड़ की शाखा में बाँध दिया। अर्नेस्ट को बहुत तड़के जगा दिया था इसलिए सुस्त था। मैंने उसको प्राकृतिक दृश्य दिखला-दिखलाकर प्रसन्न किया।

मैंने कहा, "अर्नेस्ट! तुम प्रत्येक बात को ठंढे दिमाग से सोचते हो। इसलिये तुम हम सबमें सबसे बुद्धिमान हो तुम प्रत्येक बात बड़े शान्त मस्तिष्क से सोचते हो सदैव ठीक होती है। प्रत्येक आश्चर्य होने वाली बात पर या कोई आकस्मिक घटना सामने आ जाने पर घबड़ाना नहीं चाहिये। अपितु स्थिर बुद्धि से काम लेना चाहिये। यही मानव-मस्तिष्क की विशेषता है। अच्छा बताओ अगर तुमको कोई रीछ तुम्हारे सामने आता दिखाई पड़े तो तुम क्या करोगे?"

अर्नेस्ट ने कहा, "मैं तुरन्त भाग जाऊँगा।"

मैंने कहा, "यदि रीछ तुम्हारे निकट ही है और वह तुमसे तेज दौड़ता है। तथा तुम पर मार्ग में ही आक्रमण की शक्ति रखता है तो?"

उसने बताया—"कि तब हम तुरन्त ही अपना निशाना ठीक करके गोली मारेंगे।"

मैंने कहा, "यह कोई निपुणता का कार्य नहीं। सम्भव है कि घबराहट की हालत में तुम्हारा निशाना चूक जाय और वह तुम्हारे कार्य से और चिढ़ जावे। दूसरी बात यह है कि यदि बंदूक का लक्ष्य गलत हो जाने पर जब तक तुम फिर उसको भरोगे तब तक तुमको वह फाड़कर चिथड़े-चिथड़ेकर डाल सकता है।"

उसने उत्तर दिया—"अन्त में हम भूमि पर साँस रोककर मरे हुये होने का बहाना करके लेट जावेंगे।"

मैंने कहा, "यह तुम्हारी उक्ति कदाचित् ठीक है क्योंकि ऐसा नियम है कि रीछ मरे हुये का मांस नहीं खाता।"

और तब मैं उसको बंदूक से या शिकार वाले चाकू से मारूँगा विशेषकर जब वह गफलत में पड़ जायगा।

मैंने कहा, "इस प्रकार के तुम्हारे आक्रमण इतने विशाल पशु का क्या कर सकते हैं। मैं स्वयं इसकी बहुत सुन्दर विधि नहीं जानता हूँ। परन्तु मेरे विचार से सबसे अच्छी विधि यही है कि झट गधा आगे कर दो और जब वह गधे को खाने लगे तो इसी बीच में तुम बंदूकी फायर कर सकते हो या अपने शिकार वाला चाकू उसके जबड़े में मार सकते हो।"

इस प्रकार का विवाद करते हुये हम लोग समुद्र के किनारे उन लकड़ियों के पास पहुँच गये जिनको हमें ले आना था। अपने प्रयोग में आने वाली वस्तुओं को गधे पर लाद दिया और अपने शिकार-गृह की ओर चल पड़े। सामान में बालू में गड़ी हुई एक संदूक भी थी उसे भी साथ में ले लिया।

———

अध्याय १४

प्रात:काल जगकर मैं चुपके से नीचे उतर आया तथा कंगारू का चमड़ा अलग करने लगा। कुत्ते कल शाम को कंगारू के मांस का स्वाद ले चुके थे। इसलिये वे मुझसे पहले ही आकर उसके खाने में लग गये। जब तक मैं पहुँचा वे उसका सिर फाड़ चुके थे। मैंने सावधानी से उसका मांस और चमड़ा अलग किया। इस कार्य ने मेरा पर्याप्त समय ले लिया था। अत: घर के सभी लोग नाश्ता करने के बाद नीचे उतर आये थे।

मैंने जाकर स्नान किया और कपड़े बदले। मैंने जब तक फ्रिट्ज से चलने के लिये तैयार होने को कहा तो देखा अर्नेस्ट और जैक कहीं लुप्त हो गये हैं। मुझे यह जानकर और चिन्ता हुई कि वे अपनी माता से भी बताकर नहीं गये हैं। लेकिन उसने अनुमान किया कि कदाचित् वे लोग आलू खोदने के लिये गये हुये हैं। मुझे इस उत्तर से कुछ संतोष मिला। अच्छा यह था कि वे लोग अपने साथ तुर्क को लिये गये थे। जो कि उनको आवश्यकता पड़ने पर पूरा काम दे सकता था।

इस विषय में अधिक देर तक प्रतीक्षा न करके मैं फ्रिट्ज को साथ लेकर पत्नी से बिदा हुआ और उसकी रक्षा के लिये उसके पास बिल को छोड़ दिया।

मैं बिना किसी दुर्घटना के गीदड़ी नदी के पास पहुँच गया अचानक ही मेरी दृष्टि दूसरी ओर गई। मैंने देखा कि जैक और अर्नेस्ट जोर से पुकारते चले आ रहे हैं।

मैंने उनको जोर से डाटा कि वे बगैर हम लोगों को बतलाये हुये क्यों चले गये थे और फिर उनको अपने साथ ले लिया।

परन्तु मैंने विचार किया कि इन लड़कों को साथ में लेने से उनकी माँ चिन्तित होंगी। कारण यह है कि ये लोग उसको बिना सूचित किये हुये ही चले आये थे और मैं आज वापस आने में असमर्थ पा रहा था। क्योंकि जहाज तक पहुँचने के लिये दो दिन का अवकाश आवश्यक था। एक दिन किश्ती तैयार करने में लग जायगा तब दूसरे दिन हम लोग जहाज पर पहुँच सकेंगे। इसलिये मैंने लड़कों को वापस भेज दिया।

लड़कों को समझाया कि वे अपनी माता की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें और कहा कि खाली हाथ वापस जाने से यह अच्छा है कि अपने साथ कुछ नमक इकट्ठा करके लेते जाओ। तुम लोगों के पहुँचने पर तुम्हारी माँ तुम लोगों की तरफ से और मेरी तरफ से दोनों ओर निश्चिन्त हो जायेंगी और तुम लोग यहाँ से सूर्यास्त के पहले ही पहुँच जाना।

मैंने फ्रिट्ज के पास से चाँदी की छड़ी लेकर अर्नेस्ट और जैक को दे दी ताकि वे लोग वापस जाने में विलम्ब न करें।

इनसे निबटकर मैं शीघ्र ही खाड़ी में पहुँच गया और अपनी किश्ती में फ्रिट्ज के साथ बैठकर धारा के अनुकूलता के कारण बिना किसी बाधा के उस टूटे जहाज तक पहुँच गया।

ज्योंही हम लोग पहुँचे। झटपट हमने नाव तैयार करने का सामान एकत्रित करना प्रारंभ कर दिया। हमको लगभग एक दर्जन खाली टीन के पीपे मिल गये। उन्हें मैंने लकड़ी और रस्सी से एक किश्ती के रूप में बाँध लिया और इस प्रकार शीघ्र ही हम दोनों ने एक नवीन किश्ती बना ली जो कि पहली वाली किश्ती से तिगुनी बड़ी थी।

सारा दिन इसी काम में बीत गया। हम लोगों ने पास में रक्खा हुआ थोड़ा-थोड़ा भोजन किया और अंधकार के भय से

कप्तान के कमरे में जाकर सो गये। वहाँ हम लोगों की रात्रि पूर्ण आनन्द के साथ व्यतीत हो गयी।

प्रात:काल हम लोगों ने ईश्वर की वंदना की, जिसकी कृपा से हमारी रात बिना किसी खतरे से व्यतीत हो गयी थी और फिर हम लोग सम्पूर्ण शक्ति से अपनी किश्ती खोजने में लग गये।

मैंने कप्तान के कमरे से ताले जंजीरें आदि ले लिये और उनको नाव पर लाद लिया। फिर कमरे में जाकर देखा। दो बक्स दिखाई पड़े। दो अन्य बक्स मिले। एक में शस्त्रादि का सामान तथा दूसरे में बढ़ई का सामान था।

कप्तान का कमरा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं से भरा हुआ था। वहाँ सोने की घड़ियाँ, अंगूठी आदि रक्खी हुई थीं। उनको उठाया और सब सामान नाव पर लाद दीं। फिर देखा कि जहाज पर कुछ योरोप के फलों के छोटे-छोटे पौधे रक्खे हुए थे वे सेव, नासपाती, लीची और चेस्टनेट के थे। उनको घर पर लगाने के लक्ष्य से उठाकर नाव पर लाद दिया। ये वृक्ष मैंने अपनी प्यारी मातृ-भूमि के ही देखे थे।

उसके बाद फिर अन्य कमरों में जाकर देखा तो मुझे कुछ-कुछ लोहे के लट्ठे, कुछ गाड़ी के पहिये और चक्की वाले पत्थर, कुल्हाड़ी, बसूला, हल, जंजीरें और कुछ मक्का तथा अन्य अनाजों के भरे हुये बोरे प्राप्त हुये। लगभग मुझे प्रत्येक वस्तु जो कि एक योरोप के निवासी को मिली।

नवीन देश में पहुँचने पर आवश्यक होती है मिल गई। मैंने यह सब सामान नावों पर लाद लिया। परन्तु हम लोग बोझ अधिक होने के भय से बहुत असमंजस में पड़ गये कि क्या साथ में ले चलें और क्या यहीं छोड़ दें।

हम लोगों ने देखा कि एक ओर तो हम सब सामान नहीं ले जा पा रहे हैं दूसरी ओर कोई वस्तु वहीं पर छोड़ना भी नहीं चाह

रहे हैं। क्योंकि वह सामग्री किसी भी समय टूटे जहाज पर पड़े हुये नष्ट हो सकती है। अन्त में हमने प्रत्येक आवश्यक वस्तु नाव और किश्ती पर लाद दी। साथ में एक पतवार और लग्गी तथा रस्सी लेकर चले।

वायु हम लोगों के अनुकूल थी तथा समुद्र शान्त था और काफी दूर तक हम लोग बिना किसी खतरे के पहुँच गये। तब तक फ्रिट्ज ने कुछ दूरी पर एक बोझ सा उलटता-पलटता देखा। मैंने दूर्बीन से देखा कि एक कछुआ उस सतह पर थपेड़े ले रहा था।

नाव चली जा रही थी तब एक हरहराहट की आवाज सुनाई पड़ी। अचानक नाव में एक झटका लगा। तब तक फ्रिट्ज चिल्ला उठा, "पा गया, पा गया।" मैंने मुड़कर देखा तो मजबूत रस्सी में काँटा लगाकर कछुए को फ्रिट्ज ने फाँस लिया था और वह नाव को अपने साथ किनारे खींचे जा रहा था।

मैं कुल्हाड़ी लेकर रस्सी काट देने के लिये दौड़ा। परन्तु फ्रिट्ज ने उत्सुकता से ऐसा करने से मुझे रोक दिया और आश्वासन दिया कि यदि जरा भी धोखा होगा तो मैं स्वयं रस्सी काट दूँगा।

इस प्रकार वह कछुआ हम लोगों को एक खतरनाक स्थान पर खींच ले गया। मैं यह डर रहा था किसी चट्टान से जाकर न टकरा जावें। कदाचित् वह जानवर मुझको जमीन पर खींच ले जाना चाहता था। मैंने यह देखकर अपनी बल्ली सीधी की। वायु के वेग ने नाव का गति रोध किया, तब कछुआ भूमि की ओर तैर चला। हम लोगों ने देखा कि हम किनारे से लगभग सौ गज की दूरी पर ही थे। और भाग्यवश वहाँ कोई चट्टान भी नहीं थी। हमने नावका निरीक्षण किया परन्तु वह बिल्कुल सीधी थी। उसके बाद रस्सी के सहारे से उसने हमें किनारे तक पहुँचा दिया था और अब भूमि पर रेंगकर कहीं भाग जाना चाहता था मैंने निकट पहुँच

कर उसके सिर पर कुल्हाड़े की चोट दी। वह गिर गया मेरी नाव जिस किनारे से जाकर लगी थी वहाँ से शिकरागृह निकट ही था। फ्रिट्ज ने बंदूक दागी। आवाज सुनकर सब लोग दौड़ पड़े।

मेरी पत्नी ने इस विषय में खेद प्रकट किया कि उसने एक रात्रि छोटे-छोटे बच्चों के साथ अकेले ही व्यतीत की। फिर मैंने बताया इस कछुये ने हम लोगों को खींचकर इस तट पर लगा दिया। शेष यात्रा निर्विघ्न रही। हम लोगों ने फ्रिट्ज की इस चतुरता पर आश्चर्य प्रकट किया कि उसने कितनी सावधानी से कछुए को काँटे से नाथ लिया था।

फिर मैंने अपनी पत्नी से कहा, "दो लड़कों को लेकर चली जाओ और गाड़ी तथा जानवरों को ले आओ। ताकि थोड़ा बहुत सामान इष्ट स्थान से वहाँ पर पहुँच जावे। उस समय बड़े जोर का ज्वार आ गया। उसकी सहायता से बहकर हमारी नाव उचित तट पर लग गई। मैंने अपनी नाव एक मजबूत रस्सी से एक पत्थर से बाँध दी। तब तक हमारी स्लेज गाड़ी आ गई उस पर हमने पहले कछुये को रख दिया। फिर अन्य सामान यथोचित स्थान पर लाद लिया। कछुये का भार तीन सौ पौंड से कम न था। इसलिये वह बड़ी कठिनाइयों से गाड़ी पर पहुँचा पाया।"

रास्ते में जब हम लोग शिकरागृह की ओर जा रहे थे। लड़कों ने सैकड़ों प्रश्न इस विषय में किये कि यह चाँदी की बाल्टी और जेवर उस बरबाद जलयान से किस प्रकार प्राप्त किये।

उसकी माँ ने बताया कि फ्रैंक चिड़ियों के घोसलों की तलाश में एक पेड़ की खोह में गया तो उसने शहद का छत्ता लगा हुआ देखा है जो हमारे लिये लाभप्रद सिद्ध हो सकता है।

घर पर पहुँचकर मेरा पहला कार्य यह हुआ कि कछुये के पीठ के भाग निकाल लिया जावे, जो एक तश्तरी या प्याले का काम

देगा। इसलिये मैंने कुल्हाड़ी से काटकर उलट कर उसका मांस अलग कर दिया। और वह खोपड़ा अलग हो गया।

अर्नेस्ट ने कहा, "पिता! इसका खोपड़ा जंगली लोगों से रक्षा करने के लिये ढाल का काम देगा।" किसी ने कहा मैं इसकी नाव बनाऊँगा और यह बड़ी अच्छी तरह तैरेगा। किसी ने कहा, "इसका घर बनाऊँगा।"

मैंने कहा, "प्यारे बच्चो! यह सब व्यर्थ की बातें छोड़ दो और कोई ऐसी बात सोचो जो आजकल के ऐसे अवसर पर काम की ठहरे।" मैंने फ्रिट्ज से पूछा, "तुम क्या चाहते हो? क्योंकि यह तुम्हारी वस्तु है।"

फ्रिट्ज ने कहा, "हम इसको समुद्र के निकट गाड़ देंगे और इसमें जब साफ पानी इकट्ठा हो जाया करेगा तब हम इससे स्नान किया करेंगे।"

मैंने कहा, "बहुत अच्छा, तुम्हारा विचार ठीक है और यह प्रत्येक की आवश्यकता की पूर्ति करेगा। चिकनी मिट्टी लेकर तट पर इसको अभी गाड़ देना चाहिये।"

मेरी पत्नी नदी के किनारे से चिकनी मिट्टी ले आई और कछुए का खोपड़ा गाड़कर हौज तैयार कर लिया गया। जब हौज ठीक प्रकार से बन गई तो अर्नेस्ट ने कहा, "मैं आज आपको एक नई चीज दिखलाऊँगा। यह एक प्रकार की जड़ है जो जमीन के अन्दर चली जाती है। खाने में बहुत जायकेदार तो नहीं होती परन्तु सूअर बड़े चाव से इसको खाती है कदाचित् मूली है।"

मैंने कहा, "मेरे लड़के ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो जानवरों के बड़े काम की हैं। परन्तु वह मनुष्य मात्र के कोई काम नहीं आती हैं। तुमने उनको कैसे ढूँढ़ लिया?"

मैंने कहा, "मैं इधर-उधर घूम रहा था तब तक देखा कि यह सूअरी एक स्थान पर रुककर उन जड़ों को खाने लगी। मैंने भी देखा और कुछ तुम्हारे निरीक्षण के लिए ले आया हूँ।"

मैंने कहा, "अर्नेस्ट, तुमने एक महत्त्वपूर्ण खोज की है आलू आदि तुम्हारी बड़ी सुन्दर खोजें हैं। मैंने कहा, इसे 'याम' कहते हैं इससे पश्चिमी द्वीप समूह में रोटी तैयार की जाती है, परन्तु सबसे पहले इसकी जड़ें साफ की जाती हैं, वर्ना यह खाने में स्वादिष्ट नहीं होती क्योंकि इसमें एक खतरनाक जहर होता है। यदि तुम जहाँ से यह वस्तु ले आये हो, भूले नहीं हो तो मैं चलूँगा और लाकर रोटी तैयार कराऊँगा।"

मैंने लड़कों की सहायता से स्लेज गाड़ी पर से सामान नीचे उतार दिया और रात होने के पहले ही शेष सामान भी तट से उठाकर ले आने के विचार से चल पड़ा। मेरी पत्नी फ्रैंक को लेकर भोजन बनाने के लिये घर ही रुक गई।

हमने तट पर पहुँचकर झटपट गाड़ी लादनी शुरू कर दी। सबसे पहले दोनों ट्रंक रक्खे और फिर पहिये तथा फिर चक्की उसके ऊपर लाद दी और इसी क्रम से कमरे में प्राप्त हुआ सभी सामान इस पर लाद दिया।

जब मैं वापस हुआ तो मेरी पत्नी ने कहा, "तुमने पिछले दो दिनों से कड़ी मेहनत की है इसलिए मैंने तुम्हारे लिए बड़ा सुन्दर रात का भोजन तैयार किया है। जो तुम्हारी प्रतीक्षा में ठंडा हो रहा है।"

अध्याय १५

दूसरे दिन जब मैं बहुत तड़के जगा उस समय मेरे परिवार के और सभी व्यक्ति गहरी नींद में सो रहे थे। "मैं इस चिन्ता में था कि किनारे बँधी दोनों किश्तियों की क्या दशा होगी ?"

जब मैं चुपके से भूमि पर उतरा तो देखा कि सभी जानवर इधर-उधर घूम रहे थे कुत्तों ने दौड़कर मेरा स्वागत किया। पक्षियों की भीड़ की भीड़ इकट्ठी हो रही थी। गाय अभी तक दुही नहीं गई थी।

मैंने चुपके से गधे को खोलकर स्लेज में जोत लिये और समुद्र तट की ओर चल पड़ा। कुत्तों को इशारा किया। वे भी हमारे साथ हो लें। मैं तट पर शीघ्र ही पहुँच गया। मैं गाड़ी पर अधिक बोझा नहीं रखना चाहता था जिसमें बेचारे गधे हैरान न हों और शीघ्र ही वापस भी होना चाहता था।

जब मैं घर वापस पहुँचा तो सूर्य आकाश में पर्याप्त उँचाई तक आ चुका था। परन्तु अब भी सब सो रहे थे। मैंने उठने के लिये सबको जोर से आवाज लगाई। कई बार पुकारने पर मेरी पत्नी ने जग कर देखा और आश्चर्य में पड़ गई कि इतनी देर तक आज क्यों सोती ही रही।

उसने कहा, "आप जो भोजन कल ले आये थे उसमें कुछ विचित्र जादू था जिसके प्रभाव में इतनी देर तक सोती रही और लड़के अब भी सो रहे हैं।"

मैं बड़े जोर से चिल्लाया, "उठो लड़को अभी इतने आलसी मत बनो। मैंने कहा अगर तुम इतने आलसी बनोगे तो तुम्हारी आत्मा और शरीर तुम्हारे अधिकार से बाहर हो जायँगे।"

फ्रिट्ज सबसे पहले उठ पड़ा और अर्नेस्ट सबसे बाद में। मैंने उससे कहा, "क्या तुम अपनी इस बात पर लज्जित नहीं हो कि यह छोटा क्लैंक तुमसे पहले जाग पड़ा और तुम अभी तक सोते रहे ?—वह कुछ कहना चाहता था कि रोककर मैंने कहा अब झट पट नाश्ता करके किश्ती के पास चलो क्योंकि यह भाषण देने का समय नहीं है।"

प्रात:काल की प्रार्थना और नाश्ते के बाद हम लोग फिर समुद्र की ओर चल पड़े। मैंने सामान लाने के दो चक्कर किये। यहाँ तक कि मेरे गधे थक गये मेरी पत्नी और दोनों छोटे लड़के घर वापस आ गये। ज्वार आने पर हम लोगों ने अपनी नाव खींच कर उसके समीप लगा दी।

समुद्र शान्त था। वायु और मौसम भी अनुकूल थे। इसलिए हम लोगों ने एक बार फिर टूटे जहाज तक जाने का साहस किया परन्तु मैंने पत्नी को धीरज बँधाया कि वहाँ अधिक समय तक रुकने की आवश्यकता नहीं है। किश्ती जहाज के निकट पहुँची तो सब लोग झट पट जहाज पर चढ़ गये। और आवश्यक सामान लादने लगे। अर्नेस्ट ने एक छोटी पहियेदार गाड़ी देखी और कहा यह आलू ढोने में काम देगी। अत: उसको भी लाकर लाद लिया।

फ्रिट्ज़ ने बतलाया कि उसने दो तोपें ढूँढ़ी हैं मैंने उन्हें भी बड़े परिश्रम से नाव पर लाद लिया। दिवस का अन्त निकट था इस लिये लड़कों से मैंने जल्दी करने के लिये कहा।

मैंने नाव पर कुछ तम्बाकू, बारूद, चकमक पत्थर, तीन पहिये रखकर पतवार हाथ में ली। संध्या की वायु चलने लगी थी। ज्योंही हम समुद्र तट की ओर आ रहे थे तट पर एक पंक्ति-सी दिखलाई पड़ी। वे आदमियों की भाँति सफेद और काले कपड़े पहने दिखाई पड़ रहे थे। मैंने विचार किया कि कदाचित् हम

लोग बौनों के देश में आ गये हैं। और वे हमारा स्वागत करने के लिये एकत्रित हो रहे थे।

जैक ने कहा, "ऐसा ज्ञात होता है कि ये लिली पुट के लोग हैं। अन्त में मैंने अपनी राय दी कि वे बन्दरों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकते।" इस पर फ्रिट्ज ने हँसते हुये कहा, "पिताजी क्या बन्दरों के ख भी होते हैं?" मैंने कहा, "ठीक तुम कहते हो, यह पेंगुइन पक्षी हैं और हम लोगों को भूमि पर पहुँचने का विरोध कर रही हैं।"

ज्योंही हम लोग समुद्र के तट पर पहुँचे जैक झट नीचे कूद पड़ा और पेंगाइन चिड़ियों के समूह में दौड़ पड़ा। दो-तीन चिड़ियाँ गिर पड़ीं। बाकी भाग गईं उस काम से फ्रिट्ज बड़ा अप्रसन्न हुआ और जैक को डाँटने लगा कि तुमने हमको फायर नहीं करने दिया और चिड़ियों को भगा दिया।

और जैक ने उन बेवकूफ चिड़ियों को मार डाला था इसीलिये बड़ा प्रसन्न था मैंने उनके पैर एक में बाँधकर डाल दिया और किश्ती का बोझ उतारने लगा। देरी हो रही थी और मुझे बहुत बोझ उतारना शेष था। इसलिये दो पहियों की गाड़ी पर आवश्यक सामान लाद कर ले चलने का विचार किया। तम्बाकू के थैले, तथा लोटे, केप्लेट और पेंगुइन चिड़ियों को लेकर मैं शिकरागृह की ओर गाड़ी लेकर चल पड़ा। मेरे सबसे पहले दो कुत्तों ने मेरा स्वागत किया। फिर परिवार के सभी लोगों ने। मेरी पत्नी पहियों वाली गाड़ी और उस पर का सामान देखकर बड़ी खुश थी। परन्तु जब उसने तम्बाकू और लोहे की प्लेट को देखे। वह नाराज सी दिखने लगी। मैंने कहा, "मैं तुमको इसकी उपयोगिता समझाऊँगा।"

मैंने उन पेंगुइन पक्षियों को बत्तखों और मुर्गियों के साथ कुछ दिन तक रखने का विचार किया। मैंने उन पक्षियों का एक-

एक पैर उन मुर्गियों के साथ बाँध दिया। ताकि वह कहीं उड़कर न भाग सकें। इस प्रकार उनको पालतू बनाने की कोशिश की। उन चिड़ियों का परिवार नई आई हुए पक्षियों को देखकर बड़े आश्चर्य में पड़ गया था। मेरी पत्नी ने उन तमाम आलूओं के ढेर को दिखाया जिनको उसने मेरी अनुपस्थिति में इकट्ठा किया था।

अर्नेस्ट ने वे तमाम जड़ें दिखलाया जिन्हें उसने जंगल से ढूँढ़ा था। जैक जोर से चिल्ला पड़ा और कहने लगा जब तुम मक्का और खरबूजे के खेत देखोगे तो क्या कहोगे ?

मैंने कहा, "इसका क्या मतलब है ? वह कहाँ है ?" मेरी पत्नी ने कहा, "ओ ! छोटे लड़के ! तुमने क्यों बता दिया ? उसने मुझसे कहा मैंने जहाँ से आलू खोदे थे उसी स्थान पर कुछ खरबूजे और मक्का के बीज बो दिये थे और विचार किया था कि इनको जब बताऊँगी तब आप इनको देखकर आश्चर्य करेंगे।"

मैंने कहा, "कोई बात नहीं। आश्चर्य तो होना ही था अगर वह कुछ समय से पहले हो गया तो क्या बात है। जैक को क्षमा कर दो।"

और हम लोगों के लिये सायंकाल का भोजन तैयार करो। जब मैं भोजन के लिये बैठा तो मैंने तोपें लगी हुई नाव की खोज के विषय में बतलाया। उसने कहा, "अच्छा यह बतलाइये कि इस तम्बाकू का क्या प्रयोग है ? जिसे तुम इतनी मात्रा में यहाँ लाद लाये हो ! मेरे विचार से आप इन बच्चों को धूम्रपान का लती बनाना चाहते हैं। तथा हम लोगों का जीवन एक धूम्रमय वातावरण में ढकेलना चाहते हैं।" मैंने कहा, "नहीं, मैं इसको यहाँ दूसरे दृष्टिकोण से ले आया हूँ। मैं अपने लड़कों को एक सुन्दर शिक्षा देना चाहता हूँ। यद्यपि मैं भी इस कार्य में दक्ष नहीं हूँ फिर भी हम सब लोग इस दिशा में प्रयत्न करेंगे। मेरा मतलब उन

जड़ों से रोटी बनाने से है।" उसने उत्तर दिया, "कि" इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु रोटी बनाने के लिये हम लोग आँटा कहाँ से पावेंगे ? तथा अँगीठी कैसे तैयार करेंगे। यह लोहे की प्लेटें चूल्हे और तसले का काम करेंगी और यह तम्बाकू के लच्छे बनाने वाली मशीन भी रोटी बनाने में सहायता देगी कल इसका प्रबन्ध करूँगा। अब हमको रात्रि के काम में लगना चाहिये। दूसरे दिन प्रात:काल ही सब लड़के जग पड़े। मैंने सबको पाम के गुण और प्रयोग समझाये जो कि जंगली लोग काम में लाते हैं। मैंने बताया इस 'पाम' वृक्ष की तीन जातियाँ होती हैं। उनमें से दो विषैली होती हैं जिसको लोग उसकी तीव्र गंध से पहचान लेते हैं। जैक ने कहा, पिताजी क्या तुम हमको जहरीली रोटी बनाना सिखा रहे हो ? मैं आपका आभारी हूँ परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं इसको छू भी नहीं सकता हूँ।" मैं जानता हूँ कि यह किस जाति में से है। मैंने उत्तर दिया, "मुझे मालूम होता है कि यह जहरीली जाति का है। मैंने बताया कि यह जहर केवल इसके रस में ही होता है। इसलिये इसका रस हम निकाल देंगे। फिर रोटी को कुत्ते को खिलाकर देख लेंगे कि बिषैली तो नहीं हो गई है ?"

जैक ने अपने छोटे बन्दर पर बिष का प्रयोग करने पर तैयार न हुआ। मैंने अपनी पत्नी से किरमिच का एक दृढ़ झोला तैयार करने के लिये कहा। मैंने जड़ को पानी से धोकर छीलने के लिये कहा। उन लोगों ने वैसा ही किया और थोड़ी देर में ही आँटे की पर्याप्त मात्रा तैयार कर ली। लड़कों ने कहा, "क्या इस आँटे की रोटी खाने योग्य होगी अथवा नहीं ?"

मैंने आँटा झोले में भर दिया। और उसे दो तख्तों के बीच रख कर उस पर बहुत बोझ लाद दिया। थोड़ी देर के बाद आँटे से निकला हुआ जहरीला रस बड़ी-बड़ी बूँदों में टपकने लगा। लड़के यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये। मैंने कहा, इसमें कोई आश्चर्य

की बात नहीं है। भार के कारण रस निकल रहा है। जंगली लोग इसे बड़े अच्छे तरीके से निकालते हैं। वे आँटे को छाल के झोलों में कसकर भर और झोलों को पेड़ की डाल से टाँग देते हैं और झोले के निचले भाग में एक भारी पत्थर लटका देते हैं। इस प्रकार से आँटे के रूप में तैयार कर लेते हैं। फ्रिट्ज ने कहा, "तो हमें भी कुछ इसकी रोटी तैयार करनी चाहिये। क्योंकि अब इसमें एक बूँद भी रस नहीं है। और यह बिलकुल सूख गया है। मैंने कहा योरोप के निवासी इसे नहीं खाते। और इसको वे मिट्टी के बर्तनों में भर कर रख देते हैं फिर इससे बड़े अच्छे प्रकार की "माड़ी" तैयार करते हैं।" मैंने कहा, "अब हमको अपने काम में लग जाना चाहिये। झोला पेड़ से उतार लिया और उसे सुखाकर फिर पानी से गूँथ लिया तथा रोटी बनाकर, लोहे की प्लेट पर जो कि आग पर गर्म हो रही थी डाल दिया। बड़ी सुगंधित रोटी पक कर तैयार हो गई।

अर्नेस्ट ने कहा, यह कितनी अच्छी सुगंध देती है। हम अवश्य खाकर देखेंगे।

जैक ने कहा, इसकी रोटी विशेष स्वाद नहीं दे सकती है। मैंने कहा, इस विषय में अर्नेस्ट का विचार ठीक है। यदि इसे इसी समय बिना किसी भय और खतरे के खा सकते हैं। फिर मैंने बताया कि अगर इसको कल खायें तो अधिक अच्छा होगा। क्योंकि आज हम इस बन्दर पर और चिड़ियों को खिलाकर परीक्षा करेंगे।

मैंने कहा, इसकी रोटियाँ 'कसावा' कहलाती हैं। फिर मैंने उनको इस प्रकार जहरीली रोटी का प्रभाव तथा उसके बचाने की दवाई उन लोगों को बतलाई। मैंने कहा, "यहाँ एक वृक्ष है, जो कि समुद्र तट पर होता है। उसका फल सुनहले सेव की भाँति होता है। देखने में बड़ा आकर्षक होता है परन्तु बहुत जहरीला

होता है। कुछ जानवर इसको बिना किसी प्रकार के प्रभाव के खा सकते हैं। परन्तु मनुष्य के लिये यह विष है। इसलिये तुम लोग इसको देखकर खाने के लिये न ललच पड़ना उसको कभी मत छूना। इसी प्रकार से जितने भी फल हैं जिनको तुम नहीं जानते हो उनको मुझको दिखाकर खाओ मैं उसके गुण तुम लोगों को समझा दूँगा। भोजन के बाद मैंने जाकर बन्दर और चिड़ियों को देखा वे बिल्कुल ठीक थे। हम लोग अब रोटी का स्वाद लेने के लिये लालायित हो रहे थे। लड़कों ने लोहे की प्लेटें फिर तैयार कर लीं। अग्नि जोर से जला दी गई और हमने फिर रोटियाँ बनाना शुरू कर दीं। अबकी बार पहले से अधिक रोटियाँ बना लीं। और नारियल के दूध में मिलाकर बत्तख और कबूतर तथा बन्दर को खिलाया। उन्होंने चाव से खा लिया। दिन के शेष समय को हम लोगों ने समुद्र से घर तक सामान लाने में लगा दिया।

अध्याय १६

मेरा मस्तिष्क इस अधेड़ बुन में लगा था कि जहाज पर फिर जाना चाहिये और पिनेस नाव फिर से अपने उपयोग में लेना चाहिये। लेकिन जब मैं नाव द्वारा फिर से टूटे जहाज की ओर को चलने को हुआ तो मेरी पत्नी इस विचार से बड़ी ही भयभीत हुई। मैं अपनी सहायता के लिये तीनों बड़े लड़कों को साथ ले लेना चाहता था।

इस बार उसने शाम तक वापस आने का वचन ले लिया। अपने साथ में मैंने कलेवा की रोटी और तैरनेवाले जैकेट भी ले लिये।

जब मैं टूटे जहाज पर पहुँचा। मैंने झटपट आवश्यक सामग्री नाव पर लाद ली क्योंकि मैं खाली हाथ शिकरागृह को वापस नहीं जाना चाहता था।

मैंने पिनेस देखी। उसके प्रत्येक भाग में संख्यायें पड़ी हुई थीं। मैंने देखा और विचार किया कि इनको हम बिना किसी कठिनाई के जोड़ सकते हैं। परन्तु सबसे कठिनाई यह थी कि इसे तख्तों के ढेर से बाहर किस प्रकार निकाला जाय। और नाव पर इसको किस प्रकार चढ़ाया जाय ? लड़के लापरवाही से जहाज पर खेलने लगे। मैं सिर पर हाथ रख कर उस 'पिनेस' के निकट बैठ कर समस्या हल करने की विधि सोचने लगा।

अन्त में उन सभी तख्तों को कुल्हाड़ी से काटना शुरू कर दिया जिनके बीच में वह मूल्यवान सामग्री बंद थी।

मैं अपना कार्य समाप्त न कर पाया था कि तब तक संध्या समय निकट आ गया। अपनी नाव तट की ओर लेकर चल पड़ा

और कल प्रातःकाल फिर आने का निश्चय किया। ज्योंहीं मैं भूमि पर उतरा यह देखकर बड़े आश्चर्य में पड़ गया कि मेरी पत्नी और फ्रैंक तट पर खड़े हुये प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मैंने पूछा, "तुमने शिकारगृह क्यों छोड़ दिया ?"

मेरी पत्नी ने कहा, "जब आप उस जहाज पर थे मैंने भी अपने को आपसे जितने निकट संभव हो सके रखने का विचार किया तथा इसलिये खड़ी थी कि देखूँ जब आप सबका जीवन खतरे में होता है तो क्या करते हो ? और वापस आने पर मैं आपसे शीघ्र ही मिल सकूँ। इसलिये मैंने घर पर रुकने की अपेक्षा तट पर रुकना अधिक अच्छा समझा।

मेरी पत्नी के इन शब्दों ने मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव डाला मैं नहीं जानता था कि इसके लिये मैं उसको कितना धन्यवाद दूँ।

जो कुछ भी जहाज पर से ले आया था उसे मैंने उतारना प्रारंभ किया। नाव में दो पीपे मक्खन, तीन पीपे आँटा कुछ चावल और घर के काम की कुछ और आवश्यक चीजें थीं।

दूसरे दिन तड़के फिर मैं सुबह का नाश्ता करके जहाज की ओर चल पड़ा। और सायंकाल को वापस आया। इस प्रकार एक सप्ताह तक मैं नित्य प्रति यही काम करता रहा। इस समय के बीच में मेरी पत्नी घर पर चिड़ियों के दरबे तैयार करती रही।

सप्ताह के अन्त में पिनेस बनकर तैयार हो गई। दूसरे दिन सुबह मैंने बच्चों को बिना बतलाये ही मैं वह बाकी सामान लेने के लिये चल दिया। जिसे मैंने पहले देखा था। सामान नाव में भरकर जहाज पर शेष बची हुई बारूद का सम्बन्ध मैंने एक पलीते से कर दिया और उसके सिरे पर आग लगाकर जहाज से हम लोग नाव में बैठ गये और तट की ओर को चल पड़े। खाड़ी में पहुँच कर मैंने सामान उतारना शुरू कर दिया। तब तक बारूद का विस्फोट हुआ। और उसकी तीव्र ध्वनि चट्टानों से प्रतिध्वनित

होने लगी। मेरी स्त्री और बच्चे सुनकर बड़े खुश हुये और आश्चर्य में पड़ गये।

बच्चों ने पूछा, "पिताजी यह क्या हो सकता है। कदाचित् कप्तान और खोये हुये हमारे साथी हमें ढूँढ़ने आये हैं और सूचना के लिये उन्होंने तोपें दागी हैं।"

मेरी पत्नी ने कहा, "शायद यह मेरी ही किश्ती की आवाज है। ऐसा मालूम होता है तुमने कोई जलती हुई वस्तु उसमें छोड़ दी थी। बारूद में लग जाने से वह फट पड़ी।"

मैंने अपनी स्त्री के विचारों का पुष्टीकरण किया। हम सब लोग नाव पर चढ़कर देखने लगे कि क्या इस विस्फोट से कोई क्षति तो नहीं हुई है! मैंने देखा कि किश्ती बिल्कुल ठीक हालत में थी और पिनेस का भी कुछ नहीं बिगड़ा था।

मैंने सूचित किया, "सब ठीक है।"

फ्रिट्ज ने कहा, "मैं अब समझ गया। यह विस्फोट आपने जहाज से पिनेस को अलग करने के लिये किया था समझाइये तो कैसे किया।"

मैंने उसे पूरा विवरण समझाया। फिर किश्ती दृढ़ता से बाँध दी। पिनेस को अलग हटा दिया।

दूसरे दिन जहाज से वह सब सामग्री नाव पर लाद दी जो एक छोटा सा जहाज बनाने के लिये आवश्यक थी और फिर अन्य आवश्यक सामान लेकर घर की ओर चल पड़े।

लड़के देख-देखकर बड़े खुश हो रहे थे। मैंने दोनों तोपें तट के निकट लाकर एक कायदे से लगा दी। फिर फ्रिट्ज से कहा, "तुम दोनों तोपें दाग कर उनकी आवाज से अपनी माँ का स्वागत करो।" एक तोप पर अर्नेस्ट लग गया और दूसरी तोप पर जैक।

फ्रिट्ज ने आज्ञा दी, "नम्बर एक फायर। नम्बर दो फायर! जैक और अर्नेस्ट ने उसकी आज्ञाओं का पालन किया।"

फ्रिट्ज ने भी अपनी दोनों पिस्तौल से फायर की।

कुछ ही समय के अन्तर से मेरी पत्नी छोटे बच्चे फ्रैंक के साथ आती दिखाई पड़ी। फ्रैंक बड़े आश्चर्य से आखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था।

मेरी पत्नी ने कहा, "आपका हृदय से स्वागत! परन्तु मुझे आपने इस विशाल आवाज द्वारा भयभीत कर दिया। मैं समझ गई कि अब आप इस पिनेस के पूर्ण ज्ञाता हो गये हैं और यह खुशी है कि आप वह सब सामान साथ में ले आये हैं। जो कि हमारे भविष्य में बड़ा काम देंगे। मुझे आशा है आगामी दिनों में आप मुझे साथ में ले लेंगे।"

उसने नजदीक से पिनेस देखी और कहने लगी, "वास्तव में यह बड़ी अच्छी है।" उसने कहा, आप सोचते होंगे कि आप लोगों ने बड़ा कार्य किया हम और फ्रैंक बेकार रहे ऐसा नहीं है। जब आप सायंकाल के भोजन के लिये बैठेंगे तो देखियेगा।"

मैं उसके साथ में तैयार की हुई सामग्री देखने 'गीदड़ी' नदी की ओर चल पड़ा।

मैंने देखा, "कि चट्टानों की छाया में उसने बच्चों के लिये छोटे-छोटे क्यारी दार उद्यान बना दिये थे। तख्तों से चारों तरफ से ये क्यारियाँ सुरक्षित थीं और बीच-बीच में रास्ते बने हुये थे।

उसने समझाया कि इनमें एक तरफ आलू के पौधे लगे हैं और अन्य क्यारियों में खरबूजे, मटर, सेम आदि लगाये गये हैं। 'कुछ क्यारियाँ खाली पड़ी हैं। उनमें भी कुछ न कुछ बोया जायगा और मक्का बोने का भी प्रबन्ध मैंने एक स्थान पर कर लिया है। मैंने कहा, "सबसे अच्छी बात यह है कि मक्का के बड़े-बड़े पौधे छोटे-छोटे पौधों की ताप से रक्षा करेंगे।"

मैंने आश्चर्य से फिर पूछा, "क्या तुमने वास्तव में यह बोने आदि का काम पूरा कर दिया। यह तो बड़े आश्चर्य का काम है कि तुम और फ्रैंक ने इतने थोड़े समय में इतना बड़ा कार्य कैसे कर लिया।"

मेरी पत्नी ने कहा, "मैं प्रारम्भ में यह विश्वास नहीं करती थी। मैं यह कार्य पूरा कर सकूँगी।"

मैंने अपनी पत्नी की बड़ी प्रशंसा की और अपने खीमा की ओर चल पड़ा। वापसी में मैंने लड़कों को समझाया कि पुरुषार्थी व्यक्ति अपने कार्य के अनुकूल फल अवश्य पाते हैं।

मैंने अपने शिकरागृह पर पहुँचकर पिनेस को रात भर के लिये बाँध दिया।

अध्याय १७

भूमि पर पहला इतवार हम लोगों ने खेमों में मनाया था। दूसरा शिकारागृह में आने के दूसरे दिन ही धूम-धाम से मनाया। आर्थिक शिक्षा के अतिरिक्त लड़कों को मैंने शारीरिक विकास तथा शक्ति वर्धन के लिये उनको जिमनास्टिक खेलों का अभ्यास बतलाया। तथा धनुष-बाण एवं दौड़ने आदि का अभ्यास करने की ओर प्रेरित किया। मैंने उनको कुछ ऐसी शिक्षा देनी उचित समझी जिससे वे उपयोगी कार्यों में लाभ उठावें। मैंने सोचा कि वे लोग अपना जीवन आधे जंगली की भाँति व्यतीत करेंगे। अत: उनके अंग प्रत्यंग दृढ़ होने आवश्यक हैं। जिससे वे अपनी रक्षा जंगली पशुओं और अन्य शत्रुओं से कर सकें। इसलिये मैंने कुछ भारवाली दो लोहे की गोलियाँ लेकर एक बारह फुट लम्बी मजबूत रस्सी के सिरों से बाँध दिया। मैंने कहा, "बच्चों" इधर देखो यह एक औजार है जिसका आविष्कार दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी प्रान्त पेटागोनिया के लोगों ने किया था। सीसे की गोलियों के स्थान पर पत्थर बाँध देते हैं और जिस जानवर को फाँसना चाहते थे उनके पैरों में इस रस्सी को डाल देते थे। और यह दोनों पत्थर झकोर के साथ एक दूसरे के झोंके से जानवर को फन्दे में फँसा लेते थे।

बच्चे यह देखकर बहुत खुश हुये। मैंने एक जानवर पर फेंका तथा उसे फाँसकर दिखा भी दिया। लड़के देखकर खुशी से कूद पड़े। मैंने फिर तीनों बड़े लड़कों को इसी प्रकार का एक-एक फंदा बना भी दिया और कहा। कारतूस आदि के समाप्त हो जाने पर यह बड़ा काम देंगे। फ्रिट्ज़ ने शीघ्र ही इस कार्य में

कुशलता प्राप्त कर ली। वह सभी लड़कों में दृढ़ बलवान् तथा बुद्धिमान था भी।

जब मैं दूसरे दिन प्रात:काल उठा, तो देखा कि समुद्र का जल बिल्कुल अशांत था। हवा बड़े जोरों से चल रही थी। जल की लहरें शोर करती हुई तट से टकरा रही थीं। मैं सोचा, खैर! कोई बात नहीं आज का दिन शान्त होकर घर पर ही व्यतीत कर दिया जाय। मेरी पत्नी ने अपना सब काम दिखाया। मैंने देखा कि शिकारागृह की हालत बहुत सुधर चुकी थी। चिड़ियाँ आदि सुरक्षित रखने के स्थान ठीक बने हुये थे।

हम लोगों ने विचार किया कि समय बरबाद करना ठीक नहीं इसलिये अपने बर्तनों की संख्या बढ़ाने के विचार में तूम्बी के पेड़ के पास जाने का विचार किया। हमने कुछ छोटे-छोटे नये पौधों को लगाया। फिर उनको सींच दिया, धीरे-धीरे दिवस का बड़ा भाग समाप्त हो गया और मैं अपने गन्तव्य स्थान तक न पहुँच पाया। कारण यह था कि मेरी पत्नी और फ्रैंक भी साथ जाना चाहते थे। इसलिये घर पर पर्याप्त प्रबन्ध कर देना आवश्यक था। इस धोके में संध्या हो गई। दूसरे दिन हम प्रात:काल ही अपने कार्य के लिये चल पड़े। साथ में स्लेज गाड़ी ले ली उसमें गधा को जोत दिया। बन्दूकें और कारतूस साथ ले लिये। उसे साही के खाल वाले कोट को पहना दिया गया। और हम लोगों की पार्टी चल पड़ी।

बिल अपनी पीठ पर बन्दर के बच्चे को बैठाये हुए हम लोगों के साथ साथ चल रहा था। हम सब जल्दी ही दल-दल के पास वाली उपजाऊ भूमि में पहुँच गये। मेरी पत्नी और बच्चों ने इसे पहले नहीं देखा था। उन्होंने इसकी तारीफ के पुल बाँध दिये। फ्रिट्ज, तुर्क को लेकर आगे बढ़ गया, और हम लोगों की दृष्टि से शीघ्र ही ओझल हो गया। तुर्क ने घास में बैठे हुए बड़े भारी

पत्ती का, जोरों से भूँकते हुये पीछा किया। फ्रिट्ज ने झटपट गोली मार दी और चिड़िया जमीन पर गिर पड़ी। गोली से चोट खाकर भी वह जमीन पर दौड़ रहा था। तुर्क ने उसका तेजी से पीछा किया। बिल ने यह देखा तो उसने भी अपने सवार को फेंक दिया और अपने साथी तुर्क की सहायता के लिये दौड़ पड़ा। चिड़िया फ्लैमैंगो से भी अधिक बड़ी थी। और उसके पंजे इतने दृढ़ थे कि उसने कुत्तों को घायल कर दिया। और फ्रिट्ज उसे उठाने में असमर्थ हो रहा था।

बड़ी-बड़ी घास होने के कारण और बोझ अधिक होने के कारण मैं शीघ्र पास नहीं पहुँच पा रहा था। अन्त में मैं मुश्किल से उसके पास पहुँच गया। मैं उसको जीवित अवस्था में ही पकड़ना चाहता था। इसीलिये जेब से मैंने अपना रूमाल निकाल कर उसके सिर पर डाल दिया। फिर उसके पंखों को रस्सी से बाँध दिया। पैर बाँध कर बच्चों की ओर ले चला। लड़के इसको देखकर आश्चर्य में पड़ गये थे।

अर्नेस्ट ने कहा, "पिता जी क्या हंस हैं ?" फ्रिट्ज यह सुनकर हँस पड़ा। उसने कहा, "इसके पंजे जालीदार कहाँ है?"

मैंने कहा, मैं तुम लोगों से सहमत नहीं हूँ। यदि इसको स्वतंत्र अवस्था में छोड़ दिया जाय तो यह घायल होने के कारण शीघ्र ही मर जायगा। इसके अतिरिक्त यदि हम इसको ठीक कर सकें तो बड़ा ही अच्छा होगा। हम लोगों ने उसे गाड़ी पर लाद दिया और अपने मार्ग पर चल पड़े। थोड़ी देर के बाद अर्नेस्ट हम लोगों से अलग होकर एक नारियल के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। थोड़ी देर तक विचार मग्न रहा और फिर एकाएक प्रसन्न हो गया। और उठकर चल पड़ा मैं भी उसके पीछे-पीछे चुपके से चल पड़ा। एक स्थान पर रुककर ठंडी साँस लेकर उसने कहा, "यह पेड़ बहुत ऊँचा है।"

मैंने कहा, "यह बड़ा ऊँचा है और नारियल बड़े सुन्दर-सुन्दर लगे हुये हैं। अगर यह स्वयं ही मेरे मुँह में गिर पड़ते तो बड़ा अच्छा था। क्या बतावें ?"

अर्नेस्ट ने कहा, "मैं यह नहीं चाहता। गिरने पर तो यह मेरे दाँत भी तोड़ देंगे।" तभी कई नारियल टूट-टूट कर भूमि पर गिर पड़े। अर्नेस्ट ने दोनों नारियल उठा लिये फिर हम लोग सोचने लगे कि यह नारियल अभी ठीक तौर से पके हुए नहीं हैं। और ऊपर की ओर देखने लगे परन्तु वहाँ न तो कोई चिड़िया दिखाई दी और न तो कोई बन्दर ही। हम लोगों ने सोचा यह वायु का काम है। परन्तु उस हवा के नीचे हम लोग अनुभव नहीं कर रहे थे। फ्रिट्ज भी इनके गिरने का कारण सोचने लगा। तब तक दो आकर और गिरे। हम सभी आश्चर्य से गिरने का कारण ढूँढ़ने लगे।

तब तक चार और नारियल गिर पड़े। मैंने कहा, "यह कोई जादूगर है जिसने हम लोगों की संख्या देखकर उसी के अनुसार नारियल गिरा दिये हैं। वास्तव में वह बड़ा भला है हम लोगों को धन्यवाद देना चाहिये।"

फ्रिट्ज ने कहा, "ओहो। मैंने देख लिया, मैंने देख लिया। कितना विचित्र है वह ?" वह मेरे हैट के ऊपरी भाग के बराबर है। और केकड़े की भाँति उसके दो पंजे हैं। देखो नीचे उतर रहा है। छोटा फ्रैंक डर कर अपनी माँ के पास चला गया। अर्नेस्ट कोई छिपने की जगह देखने लगा। जैक ने बन्दूक उठाया। हम सभी चिन्ता के साथ उसकी ओर देख रहे थे। जैक ने दौड़कर बन्दूक का कुन्दा जोर से भरा परन्तु चूक गया। जानवर अपनी रक्षा के लिये सामने के दोनों पंजों को सीधे करके बैठ गया। मैंने पहचान लिया था कि यह एक प्रकार का केकड़ा है। और यह लड़कों पर आक्रमण नहीं कर सकता। इसलिये बच्चों का साहस

देखने के लिये मैं शान्त खड़ा रहा। जैक ने अन्त में साहस करके अपना कोट उठाया और केकड़े के पास जाकर उस पर कोट डाल दिया। उसीमें उसको लपेट कर उसे कसकर पकड़ लिया। मैंने कहा, "मेरे छोटे वीर ! मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। तुमने विजय तो आखिर कर डाली।" आगे फिर हम लोगों की यात्रा कठिन होती जा रही थी। कारण यह था रास्ते में बड़ी-बड़ी घास तथा जड़ें आदि थीं। इसलिये उनपर गाड़ी लेकर चलना कठिन हो रहा था। कुल्हाड़ी से काट छाँटकर आगे बढ़ना पड़ता था। अर्नेस्ट ने एक जड़ काटी तो देखा कि उसमें से पानी की धारा सी निकलने लगी। उसने पीना शुरू कर दिया। हम लोगों ने पानी पिया। और अपने सबके लिये नारियल के खोपड़ों में पानी भर कर ले चला।

मैंने समझाया कि जंगलों तथा रेगिस्तानों में घूमते हुये जब जल के लिये सोते आदि नहीं मिलते।

यह इस प्रकार की जड़ें बड़ा कार्य करती हैं। अन्त में हम लोग एक खुली जगह पर पहुँच गये जहाँ से हम कुछ दूरी तक देख सकते थे। तूँबी के वृक्ष, जिनकी खोज में हम लोग भटक रहे थे, दिखलाई पड़े। बड़े-बड़े सुन्दर वृक्ष खड़े थे। परन्तु उनके फल बड़े विषैले थे। फ्रिट्ज ने तूँबी के विषय में अपनी माता को समझा रहा था। तब तक मैंने तूँबी के फल से तरह तरह के आवश्यक बर्तन बनाने प्रारम्भ कर दिये। अब इस वृक्ष पर के बन्दर हमसे डरते नहीं थे। और न तो हमारे कार्य में बाधा ही डालते थे।

इसी बीच अर्नेस्ट चिल्लाया "पिता जी जंगली सुअर आ रहा है।" मैंने सभी लड़कों को अपने पास बुला लिया। साथ में दोनों कुत्तों को लेकर अर्नेस्ट के इशारे से मैं उस ओर चल पड़ा। परन्तु वहाँ कोई नहीं था।

तब तक मैंने देखा कि तुर्क और बिल मेरी पालतू बूढ़ी सुअरी का एक कान मुँह दाबे उसको लिये मेरी तरफ आ रहे हैं। वह बड़ी जोर से चिल्ला रही थी। हम लोग यह देखकर हँस पड़े। और उस बेचारे पशु को कुत्तों से छुड़ा दिया।

फिर मैंने कुछ सूखे हुए सेव देखे और उनकी ओर खाने के लिये चल पड़ा। परन्तु फ्रिट्ज ने विषैले होने के कारण डर रहा था। मैंने दिखाया कि सुअर उनको शौक से खा रहे हैं। फिर मैंने बन्दर को खिलाया उसने भी बड़े चाव से खा लिया। कुत्ते भी खा रहे थे। अतः हम लोग भी निश्चिन्त होकर खाने में लग गये।

अब हम लोगों को फल खाने के बाद प्यास लगी। अतः पानी की खोज में चल पड़े। जैक चट्टान की जड़ की ओर चल पड़ा, थोड़ी दूर जाने पर वह चिल्लाकर बोल पड़ा। "पिताजी एक बहुत बड़ा मगर है। मैंने कहा मूर्ख है। मगर पानी से इतनी दूरी पर सूखी भूमि पर नहीं हो सकता। यह एक आश्चर्य की बात है।" उसने कहा, "वहाँ एक बड़ा भारी जानवर है। मेरे विचार से वह मगर है और पत्थर पर गहरी नींद में सो रहा है।" हम लोग उधर बढ़े तो देखा कि यह एक बड़ा गिरगिट था। यह पच्छिमी द्वीप समूहों में पाया जाता है। मैंने कहा, "बच्चो! इसको पकड़कर पालतू बनाना चाहिये।"

मैंने रस्सी का एक फंदा बनाया और एक लकड़ी से बाँधकर ले चला। लड़के खामोशी के साथ मेरे पीछे-पीछे चले आ रहे थे। मैंने सीटी बजाई वह जानवर जग पड़ा और सीटी की आवाज सिर उठाकर सुनने लगा।

मैंने उस 'इगुआना' के गले में फंदा लकड़ी के सहारे डाल दिया। और साथ ही सीटी बजाता ही गया। मेरे गाने को सुनकर वह पशु मुग्ध सा हो रहा था। कभी फैल जाता था और कभी सिकुड़ जाता था। मैंने रस्सी का फंदा कस दिया और जोर से

खींच लिया। यहाँ तक कि वह लुढ़ककर चट्टान के नीचे आ गिरा। जैक जब जरा निकट पहुँचा तो गिरगिट इतनी जोर से जैक के पूँछ मारी कि वह जोर से जमीन पर गिर पड़ा। फिर भी वह बंधनों में पूरी तौर से जकड़ चुका था।

इसके बाद हम सबने एक साथ कुछ हल्का भोजन किया। फिर मेरी पत्नी ने वापस चलने के लिये आग्रह किया। मैंने देखा कि समय अधिक हो गया था। इसलिये गाड़ी वहीं छोड़ देना उचित समझा और गधे पर तूँबी के कुछ बर्तन तथा पत्ती और इगुआना को लाद दिया। और सामने के मार्ग से चल देना उचित समझा। रास्ते में मैं एक ओक वृक्ष के कुंज में पहुँचा। वहाँ देखा कुछ गुलाब और सेव आदि भी लगे हुए थे। और भूमि अनाज के पौधों से ढकी हुई थी। लड़के दाने खाने लगे। मैंने उनको नहीं रोका। क्योंकि वे हमारी जन्मभूमि के फलों की भाँति थे।

हम लोग सुरक्षित अपने आश्रम पर पहुँच गये। सायंकाल का भोजन तैयार करने का पर्याप्त समय था। मेरी पत्नी ने बकरी तथा गाय का दूध दुह लिया। फ्रिट्ज ने तूँबी को दूध रखने का सुन्दर बर्तन तैयार करने में लग गया। अर्नेस्ट ने कबूतरों की घोंसले पेड़ पर बना दिये। जैक ने मुर्गियों का दर्बा तैयार कर दिया। भोजन के बाद हमने हंस को मैन्गो के पास ही बाँध दिया। फिर अपना बिस्तर ठीक किया और सोने के लिये चल पड़े। लेटते ही थके हुये होने के कारण हम लोग शीघ्र ही सो गये।

———

अध्याय १८

दूसरे दिन प्रात:काल ही अपने साथ मैं फ्रिट्ज को लेकर गाड़ी को ढूँढ़ने के लिये चल दिया। जहाँ पर हम लोगों का सब सामान पड़ा हुआ था। मैंने आस पास के चट्टानों की श्रृंखला का निरीक्षण किया। विल को मैंने घर पर बच्चों की रक्षा के लिये छोड़ दिया था। और तुर्क को अपने साथ ले लिया। ओक के समूह में पहुँच कर देखा कि कल वाली सुअरी अपना नाश्ता कर रही थी। इन फलों को मैं कल अपने साथ नहीं ले जाना चाहता था। परन्तु आज सुअर उसको खा रही थी।

फ्रिट्ज अपनी बन्दूक भर रहा था। तब तक कुछ दूरी पर एक कड़ी आवाज सुनाई पड़ी। फ्रिट्ज तुरन्त ही सतर्क हो गया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद यह जंगली लोगों के युद्ध की ढोल की आवाज है। हम लोग एकान्त स्थान पर बैठ कर उस आवाज पर गौर करने लगे। खुली जगह पर एक पेड़ गिरा पड़ा था। उस पर एक बड़ा सुन्दर नीलकंठ पक्षी बैठा था। वह अपने स्थान पर कभी कभी इधर से उधर को घूम जाता था। अपने आँखों से सतर्कता से इधर उधर देख रहा था। उसके कंठ के पास चमकीला नीला रंग का उसके पंखों के जोर से फड़फड़ाने पर ढोल की सी आवाज पैदा होती थी उसके आस पास से अन्य चिड़ियों का समूह एकत्र था। वे लोग नीलकंठ की गति तथा सौंदर्य को देख रही थीं। मैं ध्यान से उधर देख रहा था। तब तक मेरे पीछे से बन्दूक की आवाज सुनाई पड़ी और इस सुन्दरता पर पर्दा पड़ा। नाटक का मुख्य पात्र मरकर गिर गया तथा अन्य दर्शक उड़ गये। मैंने फ्रिट्ज को जोर से डाटा तुम सदैव बड़ी जल्दी कर जाते हो।

मैंने कहा,—"तुम जो भी वस्तु देखो उसे बरबाद करने की इच्छा क्यों करने लगते हो ?" यह बहुत गलत चीज है।

भोजन की आवश्यकता के लिये तुम्हारी फायरिंग क्षम्य है। अन्यथा संसार के जीवों पर निर्दयता का काम करना सर्वथा अनुचित है।

"पिता जी कैसी सुन्दर चिड़िया है। इसका क्या नाम है ?" मैंने कहा कदाचित यह कैनाडा की चिड़िया है। यदि हम लोगों के चिड़िया घर में पल सकती तो कितना सुन्दर लगता मैंने कहा हम लोग बन्दर की सहायता से इस चिड़िया की घोसला खोज लेंगे। फिर नीलकंठ के अंडों पर मुर्गी बैठा कर चिड़िया के बच्चे पैदा कर सकेंगे। आगे चलकर कुछ ही दूरी पर हमें गाड़ी मिल गयी दिन थोड़ा ही व्यतीत हुआ था। हम लोग अपने कार्य में कटिबद्ध हो गये। अब मैं इस बात की खोज में लगा कि इस द्वीप की सीमायें क्या हैं ? हम लोगों के आगे आगे तुर्क सावधानी से चल रहा था। और हम लोगों का सदा सहायक सिद्ध हो रहा था। उसके पीछे पीछे गधा मन्द गति से चला जा रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद में तरह-तरह के पानी के चश्में मिलते थे। तूँबी के पेड़ पार करके हम लोगों ने लम्बी लम्बी घासवाला क्षेत्र पार किया। रास्ते में तमाम वृक्षों की जड़ों का जाल सा बिछा हुआ था। शाम को खुली हुई जमीन का दृश्य बड़ा ही सुन्दर था। मेरे बायीं ओर खरगोश घास में उछल-कूद रहे थे, और धूप का आनन्द ले रहे थे। हम लोगों के पहुँचते-पहुँचते वह सब के सब भाग गये। इसके बाद हम लोग अज्ञात पेड़ों के एक कुंज में पहुँचे जहाँ पर 'बेरी' आदि के वृक्ष खड़े हुए थे। यह बेरियाँ मटर की भाँति थीं। और तोड़ने पर अंगुलियों में चिपक जाते थे। बिल्कुल मोम की भाँति थे। मैं समझता था कि यह अमेरिका में पैदा होने वाली बेरी की एक किस्म में से थी। इसे ढूँढ़ने पर हम लोग बड़े प्रसन्न थे। मैंने

फ्रिट्ज को बुलाया और कुछ बेरी के फल इकट्ठे किये। हमें पता था कि ये मोम की भाँति जलकर प्रकाश करेंगे, और बड़ी सुन्दर सुगन्ध देंगे।

फ्रिट्ज ने कहा, "पिता जी। उस बेरी के फलों में क्या रक्खा है। इससे अच्छा है कि यह हम अमरूद के फल झोले में भर लेंगे।" मैंने कहा, "क्या ही दार्शनिक विचार है ? क्या जो फल खाने में स्वादिष्ट नही हैं उनका अन्य उपयोग नहीं होता ?" मैं तुम्हारे इस विचार से सहमत नहीं हूँ। मैं इनसे उजाले के लिये मोमबत्ती तैयार करूँगा। जो कि हमारे बड़े काम की होगी। यह बात सुनकर फ्रिट्ज ने बहुत से बेरी के फलों से झोला भर लिया और गधे पर लाद दिया। आगे चलकर हम लोगों ने कुछ अन्य चिड़ियों को एक साधारण घोंसले पर देखा वे बहुत बड़ी नहीं थीं और बहुत चमकीली भी नहीं थीं। परन्तु फिर भी सुन्दर लग रही थीं। इन्होंने अपना घोंसला पेड़ की शाखाओं के पास लगाया था उसमें अलग-अलग कमरे कटे हुए थे। ऊपर छत बनी हुई थी। इन घोसलों में हजारों चिड़ियाँ भरी हुई थीं। परन्तु उन पक्षियों में थोड़ी सी ही नर चिड़ियाँ थीं। मैं कह नहीं सकता कि इसका कुछ कारण था। फिर एक जगह देखा कि तोते की जाति की कुछ पैरा कीट चिड़ियाँ हम लोगों को देखकर चिल्लाने लगीं। फ्रिट्ज झट अपना झोला डालकर पेड़ पर चढ़ गया। उसने एक घोंसले से एक चिड़िया पकड़ ली। उसको अपनी जेब में रखकर नीचे उतर पड़ा। यह देखकर उसकी जाति की चिड़ियों ने फ्रिट्ज को घेर लिया। मैंने बड़ी मुश्किल से उन्हें दूर भगाया और आगे चले। इस चिड़िया को फ्रिट्ज ने जेब से निकाला तो देखा गया कि यह एक ही रङ्ग का तोता था। फ्रिट्ज ने कहा, "इसको घर ले चलकर पिंजड़े में रक्खेंगे बोलना सिखा देंगे। आगे चलकर हम लोगों ने देखा कि अंजीर के वृक्षों का एक समूह था जिसमें चारों ओर खट्टे

फलों के गुच्छे लटक रहे थे। उस स्थान पर कहीं वृक्षों पर गोंद सा लगा था। फ्रिट्ज उसको देखकर बड़ा प्रसन्न हो रहा था और उसने इसको इकट्ठा करना शुरू कर दिया।"

पिता जी, "क्या यह रबर है या गोंद है ?"

मैंने कहा, "आओ मैं इसकी परीक्षा करूँगा।"

पिता जी, "अगर यह रबर है तो हम इसको किस काम में लावेंगे ?"

"फ्रिट्ज मुझे साँस लेने का अवसर तो दो मैं अभी समझा दूँगा।" मैंने कहा, "यह गोंद स्विटज़रलैण्ड में बहुत होता है। उसके अतिरिक्त पुर्तगाल और फ्रांस में इसके वृक्ष अधिक पाये जाते हैं।"

अन्य दोनों में यह ब्राजील और गाइना से मिलता है। वहाँ के निवासी इसे गर्म करके द्रव रूप में हो जाने पर बोतलों में भर देते हैं। फ्रिट्ज ने कहा, "हम भी इस गोंद को इसी प्रकार बोतलों में भर कर अपने प्रयोग के लिये रख लेंगे।" मैं बतलाया, "इतना ही नहीं इससे हम अपने जूते तैयार कर सकते हैं। जूतों पर चढ़ा देने से उस पर पानी का प्रभाव नहीं पड़ता।" अपनी इस खोज से खुश होते हुए हम लोग अपनी यात्रा में अग्रसर हुए। कुछ दूर चलने पर नारियल-पेड़ों के समूह में हमें एक साबूदाने का वृक्ष दिखलाई पड़ा। अधिक देर तक मेरी अनुपस्थिति पर घर पर सब लोग घबरा रहे थे, परन्तु जब उन्होंने लाया हुआ सामान देखा तो सब खुश हो गये।

मैंने तोता पकड़ने की कठिनाइयों का वर्णन किया, और कहा यह पक्षी दूसरों के घोसलों पर अधिकार कर लेता है। मेरी पत्नी गोंद और मोम देखकर बड़ी खुश हुई और उसने कई मोमबत्तियाँ बना डाली। मैंने आश्वासन दिया कि कल मैं और अधिक ला दूँगा।

अध्याय १९

प्रातःकाल मेरी पत्नी और बच्चे मोमबत्ती तैयार करने के लिये आग्रह करने लगे। मैंने विचार किया कि यदि मोम के साथ किसी छोटे जानवर की चर्बी मिला दी जाय तो बत्ती अरसा से जलेगी। परन्तु चर्बी उस समय तक प्राप्त न थी। मैंने एक तश्तरी में मधुमक्खी वाला मोम रक्खा। फिर उसमें थोड़ा सा हरा मोम मिला दिया। मेरी पत्नी ने पत्ती से तागे निकाल-निकालकर सूत तैयार किया। मैं उन डोरे के टुकड़ों को मोम से भरे हुए बर्तन में डाल दिया। फिर उन तागों को बाहर निकाल कर देखा उन सब पर मोम लिपट गया था। फिर उनको खुली जगह पर रख दिया। जहाँ हवा लगने पर सूख कर कड़े हो गये। मैंने इस क्रिया को दो-तीन बार दुहराया जब तक कि वे बत्तियाँ इच्छानुसार मोटी नहीं पड़ गयीं।

यद्यपि यह सत्य है कि यह बत्तियाँ न तो उतनी गोल थीं और न उतनी बराबर जैसी कि योरुप में तैयार की जाती हैं। परन्तु जब मैंने उन्हें जलाया तो देखा कि उन्होंने बड़ा सुन्दर स्वच्छ प्रकाश दिया। इसके बाद हम लोगों ने दूध से मक्खन तैयार करना शुरू कर दिया परन्तु उस समय तक शिकरा-गृह में कोई मटकी न थी इसलिये इस काम में कठिनाई पड़ती थी। मैंने तूँबी का एक बड़ा खण्ड किया तथा उसमें क्रीम भर दी।

फिर उसके चारों कोने में रस्सियाँ कसकर बाँध दीं। ऊपर से ढक्कन बनाकर बन्दकर दिया। फिर मैंने अपने लड़कों से उसके कोने पकड़कर हिलाने के लिये कहा, जिसमें दूध मथ जाये। उन लोगों ने खुशी के साथ उसको हिलाना प्रारम्भ कर

दिया। थोड़ी देर बाद देखा गया कि काफी मक्खन तैयार हो गया।

मैं जहाज पर से पहिले आया था। उनकी गाड़ी बनाने का प्रयत्न करने लगा। क्योंकि बिना पहियों की स्लेज गाड़ी खींचने में कठिन थी और हर जगह आसानी से नहीं ले जाई सकती थी। पहले हम लोगों ने दो पहिये वाली एक गाड़ी तैयार कर ली। क्योंकि पूरी गाड़ी तैयार करने में बहुत समय की आवश्यकता थी और कठिन परिश्रम की भी जरूरत थी। हमें अपना निवास-स्थान ठीक करना था। उसके चारों ओर हमने नारङ्गी और नींबू के वृक्ष लगा दिये थे। जो गर्मी और धूप में शीतलता देते थे और सुगन्धित फूलों से स्वास्थ्य की रक्षा करते थे।

गीदड़ी नदी के तट पर हमने खूब घने-घने वृक्ष लगा दिये थे जो बड़े होने पर एक दूसरे से सट जायेंगे और दृढ़ दीवार की भाँति शत्रुओं से हमारी रक्षा करेंगे। जहाँ-तहाँ हमने बड़े-बड़े वृक्ष लगा दिये जिससे कि धूप के समय इनकी छाया प्राप्त होगी। इसके बाद जगह-जगह पर क्यारियाँ बनाकर अमरूद, मटर, अंजीर और नारङ्गी आदि के बीज बो दिये। जिससे कि शिकरा-गृह के चारों तरफ हरियाली बनी रहे और आवश्यकता पड़ने पर जानवरों का चारा तैयार हो जावे।

अच्छी जलवायु पाने पर वे वृक्ष शीघ्र ही बड़े हो गये। निकट की पहाड़ी पर हमने एक भाग चौरस करके पिनेश के साथ वाली दोनों तोपें फिट कर दीं। ताकि आवश्यकता पर काम आ सकें। पहले हमने एक पुल बनाया था। जिस पर होकर शत्रुओं और जङ्गली जानवरों के आक्रमण का भय था। मैंने विचार किया कि इसमें इस प्रकार का प्रबन्ध कर दिया जावे कि आवश्यकता पर उठाया और गिराया जा सके। खाड़ी की सीमा पर हमने अच्छे वृक्षों के कुंज बना दिये। और उनमें होकर के समुद्र-तट तक

पहुँचने का सुरक्षित मार्ग बना लिया। लगभग छः दिन तक हम लोग इस काम में लगे रहे। हम लोगों का स्वास्थ्य बड़ा अच्छा हो गया था। और शरीर में चुस्ती और फुर्ती आ गई थी। परन्तु सप्ताह के अन्त में हम लोगों को थकावट का अनुभव होने लगा था।

प्रत्येक रविवार को हम लोग छुट्टी मनाते थे और धार्मिक उत्सव करते थे। मेरे विचार कुछ परिवर्तन चाह रहे थे। और भावनायें कुछ उच्चकोटि के कार्य की ओर अग्रसर होने लगी थीं। इसीलिये प्रातः धार्मिक कार्य प्रार्थना आदि और फिर जमनास्टिक आदि का अभ्यास होने लगा।

लड़के पेड़ों पर चढ़ना, गोले फेंकना, और तैरने आदि का तथा दौड़ने के अभ्यास में लगे रहते थे। मैंने विचार किया इस पेशे के परिवर्तन से शारीरिक और मानसिक उन्नति भी होने लगेगी। इसी समय में मेरे हृदय में फिर एक बार जहाज तक जाकर और आवश्यक सामान लाने का विचार हुआ। अब हम लोगों के पास सुन्दर-सुन्दर कपड़े हो गये थे। और यात्रा की सुविधा के लिये झोले तथा अन्य सामान भी इकट्ठा कर लिया गया। हम-लोगों ने अपने कपड़े साफ किये। तब तक एकाएक जानवरों की आवाज सुनाई पड़ी। जाकर देखा तो गाय और गधा जो एक साथ ही एक पहिये से बँधे हुये एक दूसरे से फंदे में फँस गये थे। और गाड़ी को अपनी ओर खींच-खींचकर चिल्ला रहे थे। मैंने उनकी रस्सियाँ सुलझाईं और ठीक तरह से बाँध दिया।

इस प्रकार के वातावरण ने मुझको फिर जहाज तक जाने के लिये बाध्य कर दिया। मैंने नाविकों के कपड़े पहने। झोले लिये तथा तट तक अपनी दो पहियों वाली गाड़ी लेकर चलने को उद्यत हुये। दूसरे दिन प्रातःकाल ही मैं अपने साथ अपने तीनों बड़े लड़कों को लेकर जहाज पर पहुँच गया। वहाँ कोई परिवर्तन

नहीं हुआ था केवल हवा ने और लहरों ने जहाज की पल्लियों को थोड़ा सा इधर-उधर हटा दिया था। जहाज पर पहुँचकर हमने दो तारकोल के पीपे लिये और तोप के गरारी के सहारे उतर लिया। उसके बाद हमने मल्लाहों के बक्स तथा कुछ कारतूस आदि के बक्सों की खोज की। हम लोगों ने जहाज पर बन्दूकें और तोपें देखीं। और कई बक्स कारतूस और बारूद के प्राप्त हुए। गरारी के सहारे से भी बड़ी तोपें किश्ती तक पहुँचने में कठिनाई प्रतीत हो रही थी। अतः एक चार पौंड वाली छोटी सी तोप साथ में ले चलने के उपाय प्रारम्भ किया। किश्ती पर हमने बन्दूकें रख लीं तथा दर्वाजे खिड़कियाँ, सिटकिनी, जंजीरें, ताले आदि लाद लिये। तीन-चार ताँबे के, शकर तैयार करनेवाले कड़ाह रक्खे हुए थे। उनके लाने के लिये उनके नीचे चार-चार पीपे बाँध दिये और नाव के साथ जोड़कर चल दिये। हवा अनुकूल दिशा की ओर चल रही थी इसलिये हमारी नाव शीघ्र ही तट पर आ लगी। शाम हो रही थी। हम लोगों ने एक साथ बैठकर भोजन किया। सवेरा होने पर किनारे पर हमने उन सभी वस्तुएँ इकट्ठी कीं। और फिर वापस आ गये। मैंने बारूद के पीपे को चट्टान के पास लगा दिये। घर पर रखने से खतरा था। किसी भी समय पर ताप के प्रभाव से यह बिस्फोट हो सकता था। मेरी पत्नी ने कारतूसों और बारूद आदि को वर्षा तथा धूप आदि से सुरक्षित रखने के लिये बालू से ढक दिया था। तब देखा गया कि बतख और मुर्गी ने बच्चे दे दिये थे। मैंने उन बच्चों को बिस्कुट आदि खिलाकर पालतू बना लिया। शाम होने पर हम लोग अपने बिस्तर पर पहुँच गये।

——

अध्याय २०

जब हम लोग शिकारागृह की ओर वापस आ रहे थे तो देखा कि हमारे जाने हुए छोटे-छोटे वृक्ष हवा के झोंके से झुक-झुक जाते हैं। अतः हमने उनमें बाँस की बल्लियों का सहारा लगा देना उचित समझा और इनकी तलाश में 'निराशा अन्तरीप' की ओर को चल पड़े। वहाँ जाकर देखा कि तमाम नरकुल और बाँस के कुंज खड़े हुए थे।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही हम वहाँ से गन्ना और अमरूद की बेंड़ लाने के लिये जाना चाहते थे। यह सुनकर मेरे सभी बच्चे और उनकी माँ भी साथ चलने के लिये तैयार हो गये। हमने अपनी यात्रा का पूरा सामान साथ ले लिया। खाने का कुछ सामान तथा दो बोतलों में भर लिया। और दो पहियों की गाड़ी ले ली। ताकि जो भी बच्चा थकावट का अनुभव करता उस पर जाकर बैठ जाता। कुछ सामग्री गाड़ी पर लाद दी और कुछ अपने ऊपर लादकर चल पड़े। साथ में अपनी दो बन्दूकें ले लीं थी। तथा कारतूस झोलों में भर लिये एक रस्सी साथ ली। जिसके द्वारा लड़के नारियल के पेड़ पर चढ़ सकते थे।

प्रातःकाल का समय बड़ा ही सुहावना था सब लोग बड़े उत्साह के साथ यात्रा के लिये चल पड़े।

उभड़-खाभड़ भूमि पर गाड़ी लेकर चलना कोई आसान काम नहीं था। हम लोगों ने कुल्हाड़ी आदि की सहायता से काट-छाँट कर गाड़ी चलने के योग्य मार्ग बना लिया। अमरूद के छोटे-छोटे पौधे गाड़ी पर लाद कर रख लिये। हम लोगों ने उस स्थान पर रुक कर कुछ समय के लिये श्रम दूर करने का विचार किया। देखा

कि चिड़ियाँ अपने घोंसलों में बैठ-बैठ कर बड़े चाव से फलों को काट-काट कर खा रही हैं।

कुछ दूर ही चलकर हम लोग रबर के पेड़ों के पास पहुँच गये। यहाँ सफेद रस इकट्ठा करने के उद्देश्य से हम लोग काफी देर तक वहीं रुके रहे। अपने पास के नारियल के तथा तूँबी के बर्तनों में उसको पर्याप्त मात्रा में इकट्ठा कर लिया। पेड़ों में छेदकर दिये और उनके पास बर्तन बाँध दिया। और यह सोचकर कि इनको वापसी में उठा लेंगे। आगे बढ़े वहाँ से थोड़ी दूर दाहिनी तरफ मुड़कर चले तो गन्ने और बाँस का क्षेत्र दिखलाई पड़ा। आगे चलकर उस रमणीक स्थान में हम लोग खड़े होकर वह दृश्य देखने लगे। हमारे दाहिनी तरफ हरे-हरे गन्ने के जंगल थे। और बाईं ओर बड़े-बड़े बाँसों की श्रृंखला। सामने ताड़ के वृक्षों का कुंज दिखलाई पड़ता था जिससे होकर 'निराशा अन्तरीप' का साफ जल झलक रहा था।

हम लोगों के हृदय में एक ऐसी लहर उठी कि अपना निवास-स्थान छोड़कर यहीं रहने लगें। परन्तु हम लोगों ने जब देखा कि वहाँ पर हम सबने बड़ा परिश्रम किया है और बहुत वस्तुयें अपनी आवश्यकता की तैयार कर ली हैं, तो वहाँ से हटने में विवश हो गये। जैक और फ्रिट्ज ने नारियल के पेड़ों पर चढ़ना शुरू कर दिया।

परन्तु पेड़ों के तने इतने लम्बे थे कि वे लोग कुछ दूर चढ़कर फिर नीचे की ओर को वापस आ गये। मैं स्वयं नारियलों के लिये इच्छुक था इसीलिये मैंने जैक और फ्रिट्ज को दुबारा चढ़ने के लिये उत्साहित किया। परन्तु मैं डरता था कि अगर यह गिर पड़े तो ? इसलिये मैंने उनकी बाहों से तथा पैरों में शार्क की खाल बाँध दी। जिससे वे तने पर जितनी ऊँचाई पर चाहें आराम से रुकें।

मैंने एक रस्सी अपने पैरों से बाँध दी और उसको तने से लपेट दिया। और उनको उस रस्सी के सहारे से चढ़ने की विधि समझा दी। जैसा कि यहाँ के निवासी किया करते हैं। मैंने कहा, "इस रस्सी की सहायता से तुम बिना किसी प्रकार के खतरे के पेड़ तक पहुँच सकते हो। उन्होंने बड़ी शीघ्रता के साथ पेड़ों की चोटी पा ली। और वहाँ से विजय की घोषणा सी करने लगे। और उन लोगों ने अपनी-अपनी कमर से कुल्हाड़ी ले करके दाँयें और बाँयें इतनी तेजी से झाड़ने लगे कि हमको अपना सिर बचाना मुश्किल था।"

साथ के बन्दर से यह देखकर न रहा गया वह झट से कूद कर एक पेड़ पर चढ़ गया और नारियलों को दाँतों तथा पंजों से तोड़-तोड़कर फ्रिट्ज और जैक की भाँति डालने लगा। और बड़ी जल्दी सबसे पहले भूमि पर उतर आया।

अर्नेस्ट ने एक नारियल उठाया और ताड़ के वृक्ष की ओर देख-देखकर निरीक्षण करने लगा। उसने एक नारियल लिया और उसके ऊपरी सिरे पर एक छिद्र किया तथा एक सूराख नीचे की ओर किया उसमें एक तागा डालकर बड़े उत्साह के साथ काटने लगा।

सर्वमान्य महिलाओ और सज्जनो। यद्यपि यह सत्य है कि मैं इस वृक्ष पर चढ़ नहीं सका परन्तु उन महापुरुषों को दिया गया आदर और सत्कार मैं स्वीकार करता हूँ। और साथ ही साथ यह नमूना आप लोगों के समक्ष उपहार में रख रहा हूँ।

मैंने कहा, "शाबाश! शाबाश!! तुम किसी से पीछे नहीं हो।" मैंने उसके भी पैरों से शार्क की छाल बाँध दी और फ्रिट्ज तथा जैक की भाँति रस्सी लपेट कर कहा, "तुम जिस पेड़ पर चढ़ना चाहो चढ़ सकते हो।"

वह भी एक नारियल के वृक्ष पर अपने भाइयों के साथ चढ़ गया।

मैंने कहा, "अर्नेस्ट तुम लोगों से किसी भी बात में पीछे नहीं है।"

अर्नेस्ट के इस उत्साह को देखकर जैक और फ्रिट्ज बड़े जोर से हँस पड़े। कहने लगे आपने क्या ही अच्छा पेड़ चुना जिस पर एक भी नारियल नहीं है। उस नारियल का बड़ा भाग्य होगा जिसको तोड़कर तुम अपने साथ लाओगे।

मैंने भी ध्यान से देखा, तो समझ गया कि ये दोनों 'जोकर' ठीक कह रहे थे। अर्नेस्ट हताश नहीं हुआ और दुबारा एक और पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ भी एक भी नारियल न था। पर उसने कोई परवाह न की और कुल्हाड़ी से एक हरी-हरी पत्तियों वाली शाखा काटकर जमीन पर गिरा दी।

उसकी माँ ने कहा, "शैतान लड़के! नारियल नहीं पाया तो सुन्दर-सुन्दर पत्तियों की शाखा ही काट डाली। अब यह पेड़ मर जायगा। और कभी फल नहीं देगा।"

अर्नेस्ट ने कहा, " उत्तेजित न होइये माता जी! देखो यह पत्तियाँ हैं या ताड़ की गोभी? अगर यह नारियल की अपेक्षा खाने में बढ़िया न हुई तो मैं पेड़ से नीचे न उतरूँ।" फ्रैंक ने कहा, वास्तव में यह ताड़-गोभी है और स्वीट्जर लैण्ड में यह भूमि पर छोटे-छोटे पेड़ों में लगती है।

मैंने कहा, "मेरे छोटे बच्चे। यह ताड़-गोभी उस छोटी गोभी से सर्वथा भिन्न है। जो हमारे देश भूमि में होती है।" मैंने कहा, "यह ताड़ की नयी पत्तियों के एक दूसरे पर लिपट जाने से बनी है। अर्नेस्ट ठीक कहता है। जो योरोपियन हिन्दुस्तान में रहते हैं वे इस गोभी को बहुत पसन्द करते हैं। यह खाने में बड़ी कोमल और स्वादिष्ट होती है।"

मैंने कहा, "बच्चो! अपनी मूर्खता देखो, तुम अर्नेस्ट का मजाक उड़ा रहे थे। किसी भी व्यक्ति को कम न समझना

चाहिये। और कार्य का परिणाम ज्ञात होने के पहले ही हँस पड़ना ठीक नहीं होता।" यहाँ तक कि आवेश में आकर तुम्हारी माता ने भी भूल की। और अर्नेस्ट को प्रशंसा के स्थान पर एकाएक डाटने लगीं।

मेरी पत्नी ने हँसते हुए फिर कहा, "अरे अर्नेस्ट ऊपर ही रुका है यह जानने के लिये कि क्या वह ठीक कहता है या गलत। जब तक आप उसके अनुकूल उत्तर न देंगे वह वहीं बैठा रहेगा।" मैंने ऊपर देखा वह खामोश बैठा था और ऐसा मालूम होता था कि उसको अपने आप को उस गोभी के स्थान पर लगा देना चाहता है। मैंने उसको समझाया कि "तुम ठीक कहते हो।" वह नीचे उतर आया। मैंने उसकी प्रशंसा की। उसने कुछ रुक कर एक नारियल के टुकड़े का प्याला निकाला और अपनी जेब से एक छिपी हुई किसी द्रव से भरी हुई बोतल निकाल-निकालकर उस प्याले में उड़ेला और मेरे सामने पेश किया।

"पिताजी यह नवीन पेय है इसका जायका लीजिये। यह 'नीरा' है। बड़ी स्वादिष्ट होगी।"

यह सुनते ही उसकी माँ और भाई उसकी ओर ध्यान से देखने लगे। मैंने कहा धन्य है मेरे बेटे! "मैं इसे अवश्य पीऊँगा।" सबने थोड़ा-थोड़ा जायका लिया। फिर मैंने इसे पत्नी को सौंप दिया।

मैंने अनुभव किया कि यह बड़ा उत्तम पेय था। दिन के तीन प्रहर बीत चुके थे मैंने रात को यहीं ठहर जाना उचित समझा। इसलिये मैंने शिकारियों की-सी झोपड़ी तैयार करने का अनुष्ठान किया जैसा कि अमेरिका के शिकारी किया करते हैं। मैं घर से तिरपाल का पड़ा टुकड़ा और रस्सी साथ ले आया था उससे मैंने तम्बू की जैसी झोपड़ी तैयार कर दी।

इसी बीच में एकाएक गधा उछलने-कूदने लगा। उसने बड़े जोर से ढ़ें, पों शुरू कर दी। यही नहीं कुछ देर बाद जंगल की ओर भागकर छिप गया। हम लोग यह देखकर बड़े आश्चर्य में पड़ गये। उस समय हम लोगों के साथ अभाग्यवश तुर्क और बिल नहीं थे। मैं यह डरता था कि कहीं इसकी आवाज को सुनकर जंगली पशु इस पर हमला न कर दें। हम लोग स्वयं अपने लिये सतर्क हो रहे थे।

तबतक तुर्क और बिल पास आगये। मैंने उनकी सहायता के लिये अपनी झोपड़ी को कुछ समय के लिये सुरक्षित समझा।

अपने साथ में फ्रिट्ज और तुर्क को लेकर उस गधे के जंगल की ओर चल पड़ा। जहाँ गधा जाकर छिप गया था। सूर्य अस्त होने को था। हम लोग थक चुके थे। गधे की खोज में अब तक असफल भी रहे थे। अत: अपने परिवार की ओर चल पड़े। घर पर आकर फ्रिट्ज की सहायता से मैंने कुछ सूखी घास इकट्ठी कर ली। कुछ सूखी लकड़ियाँ भी एकत्र कीं, जो जंगली पशुओं से रक्षा के लिये जलाई जा सकें। हम लोगों ने सायंकाल का भोजन किया और आराम से सो गये। मैं आधी रात तक आग जलाये बैठा रहा।

दूसरे दिन प्रात: काल ही उठकर हम सबने मिलकर ईश्वर की प्रार्थना की। हम लोगों ने गाय के दूध में कुछ शकरकन्द मिलाकर नाश्ता किया और दिन के प्रोग्राम पर विचार करने लगे। जैक ने कहा, "गधा कहीं भागकर जंगल में हिंसक जन्तुओं के हाथ लग गया होगा। यहाँ उसकी खोज करना व्यर्थ है। वह रेगिस्तानी भाग में ही मिल सकता है। हम लोगों ने उस छोटे लड़के की राय पर ध्यान नहीं दिया। और गधे को फिर ढूँढ़ने के फेर में पड़ गये।" मैंने एक लड़के और कुत्तों को अपने साथ में ले लिया। शेष लोगों से बताया कि वे लोग गन्ने, नारियल और नीरा इकट्ठा करें।

और हम लोग कल घर वापस पहुँच जायें। बड़े लड़के को उसकी माँ और फ्रैंक की रक्षा के लिये छोड़ दिया। साथ में जैक को लेकर चल पड़े। प्रातः काल गुलाबी सर्दी थी अतः कुल्हाड़ी और कुछ खाना, तथा दो छोटी-छोटी तलवारें साथ ले लीं। जिनसे नारियल काटकर उसका दूध पिया जा सके। थोड़ी-थोड़ी देर बाद मैं झोपड़े वालों के लिये चिन्तित होता जा रहा था। बाँसों से होकर हम लोग लगभग एक घंटा तक चलते रहे। यहाँ गधे के पैरों के कुछ चिह्न दिखलाई पड़े। यह देखकर हम लोगों ने आशा की साँस ली।

हम लोग गधे के पदचिह्नों से होकर आगे बढ़े। थोड़ी दूर चल-कर देखा कि सामने एक खुला मैदान और खाड़ी है जिससे एक नदी आकर समुद्र में मिलती है। उसके एक तरफ नीची पहाड़ी थी। मैंने विचार किया कि गधा नदी के किनारे-किनारे ही गया होगा। और उसने कहीं पार करने का साहस न किया होगा। चट्टान पार करके देखा कि उसपार एक तेज धार से बहनेवाला गहरा चश्मा था। कठिनाई से उसको एक स्थान पर पार कर सके। वहाँ पर बालू में पानी से भींगे हुए गधे के पैरों के चिह्न दिखलाई पड़े। परन्तु साथ ही साथ अन्य बड़े-बड़े पैरों के चिह्न बालू पर बने हुए थे। हमलोग उन्हीं चिह्नों के सहारे से आगे बढ़े।

चट्टानों की शृङ्खला समाप्त हुई आगे चलकर देखा कि एक बड़ा सुन्दर और हरा-भरा क्षेत्र था। हम पास की एक पहाड़ी पर चढ़कर यह दृश्य देखने लगे जहाँ पर स्वर्ग सा धनधाम दिखलाई पड़ रहा था। अपने दाहिनी ओर देखा तो एक पहाड़ी की शृङ्खला उस मैदान के पास-पास अर्ध-वृत्ताकार रूप में बड़ी दूरी तक चली गई थी।

बाईं तरफ झिलमिलाते निर्मल जल से भरी हुई कुछ ऊँची-ऊँची चट्टानों से होकर धीरे-धीरे बह रही थी। परन्तु इस विशाल

क्षेत्र में कहीं भी मनुष्य के चिह्न नहीं मालूम पड़ रहे थे। केवल आकाश में चिड़ियाँ उड़ रही थीं और तितलियाँ एक फूल से दूसरे फूल पर जा-जाकर बैठ रही थीं।

बड़ी दूरी पर एक जंगली पशुओं का एक दल दिखाई पड़ रहा था। उस बड़ी-बड़ी घास में गधे के किसी भी प्रकार के चिह्न नहीं दिखलाई पड़ रहे थे। मैंने सोचा इन पशुओं के निकट चलकर देखा जावे कदाचित् वह इनमें हो। कुछ आगे चलने पर देखा दल-दल था और बहुत लम्बी-चौड़ी झाड़ियाँ थीं। यह झाड़ियाँ मैंने सोचा कदाचित् अमेरिका में उत्पन्न होने वाली बाँस की है। यह बड़े मोटे-मोटे थे और दस या बारह गज की ऊँचाई के थे। हम लोगों ने उस नरकुल का जंगल पार किया और उस भैंसों के झुण्ड के निकट आ गये। वे बिल्कुल जंगली प्रतीत हो रही थी। हम लोग अपनी रायफल भी नहीं भर पाये थे। अतः खतरे से डर रहे थे, कि कहीं यह पशु आक्रमण न कर दें। परन्तु मैं पत्थर की तरह चुप खड़ा उनकी ओर देखता रहा। भाग्यवश हमने देखा कि हमारे दोनों कुत्ते बिलकुल निकट ही थे। वे भैंसे दूर से छोटे-छोटे दिखलाई पड़ते थे। वे हम लोगों की ओर आश्चर्य से देख रहे थे।

तुरन्त ही मैं बड़ी जल्दी के साथ वापस होने लगा।

तब तक मुझे तुर्क और बिल दिखलाई पड़े। भैंसों ने कुत्तों को देखकर डाँकना शुरू कर दिया और अपने आगे के खुरों से पृथ्वी को खुरेदते हुये सिर हिलाने लगे। मैंने सोचा यह पशु हम लोगों का अंत ही कर देंगे। परन्तु इन कुत्तों ने पूरी बहादुरी से काम लिया वे एक छोटे भैंसे जो कि हम लोगों से लगभग बारह गज दूरी पर ही होगी, पर टूट पड़े। और उसके कानों को खूब जोर से पकड़ लिया। तथा उस भैंस के बच्चे को हम लोगों की तरफ खींच-कर चल पड़े। कुत्ते उससे लड़ रहे थे। और मैं चुपचाप तुर्क और बिल की स्वामि-भक्ति पर आश्चर्य कर रहा था।

हम लोगों ने एक साथ ही दोनों बन्दूकों की फायर की उसकी आवाज को सुनकर वे भैंसे डींक कर मैदान की ओर पूँछ ऊपर उठाकर भाग पड़े। और एक चट्टान की ढाल पर जाकर रुक गये। परन्तु उनमें की एक मादा भैंस जिसके बच्चे को कुत्तों ने पकड़ा था और मेरी गोली ने घायल कर दिया था। अपने बच्चे की सहायता के लिये आगे बढ़ी। वह दोनों कुत्तों पर बड़े जोर से दौड़ पड़ी। और यदि मैं उसपर गोली न मार दूँ तो वह अवश्य तुर्क और बिल को अपने सींगों से घायल कर देती। जैक डर गया था और घबड़ा रहा था। मैंने उसकी प्रशंसा की और कहा, तुमने बड़ी वीरता दिखलाई। आदमी को अचानक आपत्ति आ जाने पर अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिये। मैंने कुत्तों की सहायता की और उस भैंस के बच्चे को कुत्तों से बचाया। परन्तु वास्तव में मैं नहीं कह सकता कि मैंने उसकी किस प्रकार रक्षा की।

जैक ने जेब से फंदा निकाला और उसके पिछले पैरों में डलकर खींचा। भैंस गिर गई। मैंने कुत्तों को हटाया।

जैक ने कहा, "अब हम लोग गधे के पीछे इधर-उधर नहीं घूमेंगे। उसके बदले बड़ी अच्छी चीज मिल गई है। हम लोगों के जानवरों में यह बड़े प्रेम से रहेगी।"

मैंने कहा, "मेरे छोटे बच्चे परन्तु तुम इसको किस प्रकार यहाँ से ले चलोगे। यह पीठ पर तो ले जाया नहीं जा सकता।" उसने कहा, "क्या कहूँ अगर कहीं मैं भीम या राममूर्ति होता तो बड़ी आसानी से लिये जाता।"

उसने फिर कहा, "यह भैंस अपने आप चली चलेगी।" मैंने कहा अगर इसको स्वतंत्र छोड़ दिया जाय तो यह भी गधे की भाँति इधर-उधर चल देगी।

"कुत्ते इसको इधर-उधर जाने से रोक देंगे।" परन्तु तुर्क और बिल, गड़ेरियों के कुत्तों की तरह सीखे हुए नहीं हैं।

जैक ने कहा, इसको रस्सी से बाँधकर ले चलेंगे। और या तो इसको पालतू बना लिया जावे। जैसा कि यहाँ के निवासी करते हैं। मैंने जेब से एक तेज धारवाला चाकू निकाला। और कुत्तों ने उसका एक-एक कान कसकर पकड़ लिया। चाकू से मैंने उसके नथुने में छेद कर दिया। और उसमें रस्सी नाथ करके डाल दी। अब वह इधर-उधर नाथ के कारण भागता नहीं था। क्योंकि उसकी नाथ में भागने पर बड़ी पीड़ा उत्पन्न हो रही थी। हम धीरे-धीरे चल पड़े। तो देखा कि वह भैंस भी उस रस्सी के सहारे से हम लोगों के पीछे-पीछे चल पड़ी। हम लोग जूते आदि तैयार करने के उद्देश्य से मरी हुई भैंस की खाल उतार ली।

हम लोग गम दूर करने के लिये और प्राकृतिक दृश्यों की सुन्दरता का अवलोकन करने के लिये नरकुल की छाया में बैठ गये। जैक ने अँगूठे बराबर मोटे नरकुल काट लिये और बाँधकर बन्डल बना लिया। कुछ अन्य पौधे साथ लेकर दिवस के अन्तिम प्रहर में मैं अपने परिवार की ओर चल पड़ा, जो हमारी देर तक की अनुपस्थिति से चिन्तित हो रहे थे।

——

अध्याय २१

जल्दी पहुँचने के उद्देश्य से मैंने भैंस की नाक से एक रस्सी निकालकर उसके सींगों से बाँध दी। इसी नाथ के सहारे से वह एक दम जङ्गली जानवर हमारे पीछे-पीछे आसानी से चलने लगी। मैंने अपना बोझ कम करने के लिये उसकी पीठ पर नरकुल भैंस का चमड़ा भी लाद दिया।

हम लोग धीरे-धीरे नदी के तट पर होते हुए चट्टानों के बीच पहुँच गये। वहाँ खोह से एक गीदड़ निकला। कुत्तों ने उसको देख लिया था। वे उसके पीछे दौड़ पड़े। उन्होंने उसे घेर लिया। गीदड़ भी भिड़ गया। परस्पर युद्ध शुरू हो गया। परन्तु जोड़ बराबर का नहीं था। कारण कि कुत्तों का शरीर सुरक्षा के आवरणों से ढका हुआ था। और गीदड़ के सब अंग अरक्षित थे। फिर भी कुछ समय तक युद्ध का निर्णय न हो पाया। हम लोग लड़ने वालों के निकट आ गये। देखा तो ज्ञात हुआ कि वह मादा गीदड़ पास ही खोह में छिपे हुए अपने बच्चों के लिये कुत्तों से लड़ रही थी।

जैक चाहता था कि खोह में जाकर बच्चे उठा ले परन्तु मैंने कहा, "संभव है उसमें नर गीदड़ बैठा हो इसलिये जाने की जरूरत नहीं।" मैंने गुफा में एक पिस्तौल की आवाज़ की जब कुछ न हुआ तब जैक को प्रवेश करने की आज्ञा दे दी। तब तक कुत्तों ने गीदड़ी का अंग-भंग कर डाला। दस या बारह दिन का बच्चा बचा क्योंकि खोह में केवल एक जैक ने अपनी बाँहों में सुरक्षित किये था। शेष को कुत्तों ने नोंच-खोच डाला।

जैक ने कहा, "इसको ले चलकर बन्दर की तरह पालतू बना लेंगे। तब यह कुत्तों की तरह शिकार में सहायता दिया करेगा। मैं शान्त रहा, जैक ने समझा "मौन स्वीकृति लक्षणम्" और बच्चे को गोद में ले उत्सुकता से उठा लाया।"

हम लोगों ने पूरा मार्ग पार कर लिया अपने परिवार से आकर मिल गये। इन दो नये जानवरों को देखकर लड़कों ने हमसे हजारों प्रश्न कर डाले। संध्या का समय अब निकट ही आ रहा था।

जैक ने दिन भर की सारी घटनायें विस्तार से अपने भाइयों से बताई। मेरी पत्नी ने बताया कि वह मेरी अनुपस्थिति में निराशा अन्तरीप तक हो आई वहाँ से रात को जलाने के लिये कुछ सूखी लकड़ियाँ भी ले आई। और कुछ मशालें तैयार कर लीं। झोपड़ी में कोई न था। इस बीच बन्दरों ने आक्रमण किया और उन्होंने घास-फूस का छप्पर तोड़ताड़ डाला और ताड़ का रस पी गये। नारियल को खा गये। लड़कों ने उस झोपड़ी को फिर से ठीक किया। फ्रिट्ज निराशा अन्तरीप से शिकरे का एक बच्चा ले आया था। इसके बड़े-बड़े पङ्ख थे। और आकार भी बड़ा था। मेरा विचार हुआ कि इस ईगल को हम पालेंगे। और शिकार का काम लेंगे। फ्रिट्ज ने एक रूमाल लेकर उसकी आँखों के चारों तरफ लपेट कर बाँध दिया। ताकि यह अधिक आवाज न कर सके। मेरी पत्नी साथ में लाये हुए पशु देखकर अप्रसन्न हुई उसने कहा कि "इन्हें खिलायेगा कौन ?" मैंने बताया कि गधे की अपेक्षा भैंस अधिक उपयोगी होगी। मैंने बतलाया कि प्रत्येक लड़का एक-एक पशु के प्रशिक्षण का भार करेगा। "जो लड़का अपनी ड्यूटी न करेगा उसको कठिन दण्ड दिया जावेगा।" इस प्रकार ये पशु शीघ्रता से पालतू बन जायेंगे। और जंगली पशु भी घरेलू पशुओं की भाँति रहने लगेंगे। मैंने अपनी पत्नी को इन सबके संरक्षण

का भार सौंपा। सभी बच्चों ने अपना भार बड़ी खुशी से स्वीकार किया। मैंने ईगल को कुछ माँस खिलाया। और कुछ दूध लगाकर भैंस के बच्चे को पिला दिया। नाथ के छिद्र का जखम भी धीरे-धीरे ठीक होने लगा।

इस बीच भोजन तैयार हो गया। सबने भोजन किया और आराम करने के लिये बिस्तर पर चले गये। मैंने भैंस को गाय के साथ बाँध दिया। वे दोनों आपस में एक दूसरे से बड़ी जल्दी हिल-मिल गये। फिर हम लोग जाकर अपने-अपने घास के बिस्तरों पर लेट गये। और कुत्ते बाहर बैठकर पहरा देने लगे। हम सब लोग शीघ्र ही थकावट के कारण सो गये। हम लोग इतनी गहरी निद्रा में सो गये कि काफी दिन चढ़ आने पर नींद खुली। थोड़ा सा हल्का जलपान करने के बाद हम कार्य में लगने के लिये तैयार हो गये।

दिन भर घर पर रहकर हम लोग सामान ठीक करते रहे। रात्रि भी बड़ी शीघ्रता के साथ व्यतीत हो गई। और प्रातःकाल हम शिकरा-गृह वापस आने के लिये तैयार होने लगे। हलका जल-पान किया, खीमे उखाड़ दिये, और घर को चल पड़े। भैंस के बच्चे को गाय के साथ जोड़ दिया। गाय के साथ चलने में उसकी कुछ हिचकिचाहट सी प्रतीत होती थी। परन्तु ज्योंही मैंने उसकी नाथ की रस्सी का संकेत करना प्रारम्भ किया। तुरन्त ही वह एक सिखे हुए जानवर की भाँति करने लगा।

जिस रास्ते से होकर हम लोग आये थे वहीं होकर फिर चल पड़े। क्योंकि रास्ते में कुछ मोम के छत्ते और रबर लेना चाहता था।

मैंने जैक के साथ एक कुत्ते को आगे-आगे भेज दिया। ताकि हम लोगों के आने तक शत्रुओं से मार्ग साफ कर दे। इस प्रकार से हम लोग निश्चित होकर रबड़ के पेड़ों के पास पहुँच गये। पहले

से एकत्र किया हुआ मोम हम लोगों ने उठाकर गाड़ी पर लाद दिया। परन्तु रबड़ अधिक मात्रा में नहीं था। कारण कि हमने रबड़ के पेड़ों में सूराख करके छोड़ दिया था। इसीलिये वह सूर्य के ताप से सूख गई थी। फिर भी एक जोड़ा जूता तैयार करने भर को मिल गई थी। आगे चलकर जब हम लोग अमरूद के पेड़ों को पार कर रहे थे तो अग्रगामी संरक्षक ने एक चेतावनी दी। हम लोग बहुत डर गये। ऐसा प्रतीत होने लगा कि कदाचित् वहाँ पर कोई तेंदुआ या चीता है। तुर्क पूरे जोर-तोर से भूँकने लगा और बिल जमीन खोद-खोदकर बड़े जोर से गुर्राने लगा। हम सब छिपने के उपाय में लग गये। साहस करके जब मैं आगे बढ़ा तो देखा कि दोनों कुत्ते एक झाड़ी की ओर को झपट-झपट-कर रह जाते हैं। परन्तु झाड़ी में घुसने का साहस नहीं कर पाते। मैंने सोचा कि चीता छिपा हुआ है। परन्तु जैक ने लेटकर देखा कि हमारी वही बूढ़ी सूअरी झाड़ी से झाँक रही थी और हम सबको भयभीत किये थी। हम लोग कुछ गुस्सा और कुछ प्रसन्नता के साथ झाड़ी की तरफ चल पड़े। वहाँ जाकर देखा कि उसे छ: या सात छोटे-छोटे बच्चे घेरे हुए थे। जो लगभग दो दिन के ही मालूम पड़ रहे थे। मैं बड़ा खुश हुआ। मैंने अपने पास के बचे हुए सभी आलू और बिस्कुट सूअरी को खिला दिये। जैक और फ्रिट्ज उसको थपथपाने लगे। और उन छोटे-छोटे बच्चों को देखकर बड़े खुश होने लगे।

अन्त में मैंने कहा, "इन छोटे-छोटे बच्चों को बड़े होने तक सबको यहीं छोड़ दिया जावे। मैंने देखा कि, घर पर सब कुछ संतोष प्रद था। सभी पशु मुझको देखकर प्रसन्नता से चिल्लाने लगे। मैंने भैंस और गाय बाँध दी। और उनके निकट ही गीदड़ के बच्चे को भी बाँध दिया। फ्रिट्ज ने अपने शिकरे को एक साख से बाँध दिया।"

लड़कों ने यह सुनकर बड़ी तेजी के साथ पेड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। बच्चों ने ज्यों ही कुल्हाड़ी की चोट की मक्खियाँ गुस्से से भरकर लड़कों से चिपट गईं। कुछ कपड़ों पर और कुछ बालों में तथा कुछ उन लड़कों का पीछा करने लगीं।

जैक सबसे पहले ऊपर पहुँचा था इसलिये उसके शरीर भर में लिपट गईं। अर्नेस्ट सबसे पीछे था इसलिये उसके केवल एक ने ही काट पाया था। मैंने जमीन से कीचड़ उठाकर सबके लगा दिया। जैक का पूरा मुँह फूल गया।

एक घंटे तक बच्चे पीड़ा से परेशान रहे। हम लोग भी विशेष सावधानी के साथ काम में लग गये। तम्बाकू के धुयें की सहायता से हमने सारी मधुमक्खियाँ भगा दीं।

रात्रि भर हम आराम से सोते रहे। सुबह लड़कों ने मधु-मक्खियों का छेद मिट्टी द्वारा बन्द कर दिया। बाद को जब पेड़ में एक छेद किया गया तो सारा तना खोखला पाया गया। उसमें एक अच्छे कमरे भर की जगह थी। मधुमक्खियाँ कई दिन चक्कर लगाती रहीं। अन्त में अन्यत्र चली गईं। बहुत-सा मोम और शहद तने के अन्दर था। मैंने बहुत से बर्तनों में शहद भर कर रख लिया।

——

अध्याय २३

दूसरे दिन प्रातःकाल ही हम लोग सीढ़ी तैयार करने में लग गये। पहले मैंने इसको बड़ा ही दुस्कर कार्य समझा था। परन्तु बालकों का उत्साह देखकर मैं उस कार्य में जोरों से जुट गया।

पेड़ के खोखले के पीछे की ओर मैंने वह दरवाजा लगाया जो मैं जहाज से ले आया था। प्रकाश आने के लिये यत्र-तत्र दो खिड़कियाँ भी लगा दीं।

मधुमक्खी के छत्ते हटाने पर मैंने देखा कि पेड़ का खोखला काफी ऊपर तक गया है। ऊपर भाग में छेद करने पर देखा कि वह सोने वाले कमरे में खुलता है। निचले तथा ऊपरवाले दरवाजों के बीच हमने दो बल्लियाँ लगा दीं और उन पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर बल्लियों के टुकड़े काटकर बड़े-बड़े कीलों से ठोक दिया। इन डंडों पर पैर रखकर छोटे बच्चे भी आसानी से नीचे-ऊपर आ जा सकते थे। यह काम करने में मुझे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और लगभग तीन सप्ताह लग गये।

कुछ समय बाद बिल कुतिया ने दो बच्चे दिये। वे पिल्ले बड़े ही सुन्दर थे। एक गीदड़ का बच्चा भी हमें मिल गया था। कुतिया ने उसे अपना ही समझ लिया था और दूध पिलाने लगी।

कुछ ही समय बाद बकरी ने दो तथा भेड़ ने चार बच्चे दिये। इस प्रकार पशुओं में आश्चर्यजनक वृद्धि होना प्रारम्भ हो गयी। मैंने सोचा कि कुछ समय बाद यह पशु भी गधे की भाँति हमसे दूर भाग सकते हैं। इसलिये उनके गलों से एक-एक घंटी बाँध दी जिसमें उन्हें ढूँढ़ने में आसानी हो। भैंस के बच्चे को सिखाने में कुछ समय लग गया। नाक के छेद का जखम अब बिल्कुल ठीक हो

गया था। मैंने उसकी पीठ पर कुछ सामान रख कर धीरे-धीरे इधर-उधर लाद कर ले जाने की शिक्षा दी। साथ ही साथ सवारी करने का अभ्यास कराया। फ्रिट्ज शिकरे को सिखा रहा था और अर्नेस्ट बन्दर को।

जैक के हिस्से गीदड़ का बच्चा पड़ा था। उसका नाम रक्खा गया था 'शिकारी'। परन्तु जब वह शिकार करता था तो केवल चमड़ा ही जैक तक ले आता था माँस स्वयं ही खा जाता था। परन्तु जैक बड़े उत्साह और लगन से उसे कुत्तों जैसी शिक्षा देता था।

इधर लड़के अपने-अपने कामों में लगे थे और मैं मोमबत्तियाँ तैयार कर रहा था। उन बत्तियों के बीच में मैंने 'कैरेटा' पेड़ का तागा लगा दिया। अब रात को प्रकाश का प्रबन्ध हो गया, सब लोग बड़े प्रसन्न हुये।

रात को मोमबत्तियों के प्रकाश से मैंने रबर के जूते बनाने का प्रयत्न किया। ऊपर भाग तो रबड़ का बनाया और तला भैंस के कड़े चमड़े का लगाया।

धीरे-धीरे सभी आवश्यकता की वस्तुओं का घर के आस-पास ही प्रबन्ध हो गया।

——

अध्याय २४

जिन दिनों में सीढ़ी तैयार कर रहा था तो कुछ ही दूरी पर किसी पशु की तेज आवाज सुनाई पड़ी।

कुत्ते जंगली पशुओं की आवाज सुनकर सजग हो गये। लड़कों को मैंने ऊपर भेज दिया। सबने अपनी बंदूकों में कारतूस भर लिये।

हम लोग चारों ओर आक्रमण की प्रतीक्षा में आँखें फाड़-फाड़ कर देख रहे थे। कुत्ते शत्रु का हमला रोकने के लिये सचेत होकर गुर्रा रहे थे। परन्तु कोई भी दिखाई नहीं पड़ता था। हाँ आवाज निकट आती हुई सी प्रतीत हो रही थी।

जैक ने कहा, "यह आवाज किसी शेर की है। मुझे बड़ी खुशी है कि आज हम जंगल के राजा से मुकाबिला करेंगे। सुनते हैं शेर बड़ा दयालु और वीर होता है।"

मैंने कहा, "जैक! यह भूल है शेर दयालु नहीं होता है। और यह आवाज तीक्ष्ण है यह शेर की नहीं हो सकती।"

फ्रिट्ज ने कहा, "यह आवाज तो गीदड़ के झुण्ड की है।"

अर्नेस्ट ने कहा, "मेरा विचार है कि यह आवाज लकड़बग्घों की है। क्योंकि यह बड़ी भयानक आवाज है। लकड़बग्घा स्वयं बड़ा खतरनाक पशु होता है।"

फ्रिट्ज ने कहा, "पिता जी! वह देखिये। न कहीं शेर है और न लकड़बग्घा वही अपना वाला गधा है। जो भाग गया था और अब फिर वापस आ गया।"

मैंने भी देखा तो वास्तव में वही बूढ़ा गधा दिखाई पड़ा। परन्तु थोड़े ही समय के अन्तर से उसके पीछे एक और पशु

दिखाई पड़ा। उसका रंग-रूप बिल्कुल गधे जैसा था पर वह उस गधे से कुछ बड़ा और घोड़े से मिलते-जुलते था। मैंने तुरन्त निर्णय प्राप्त किया कि यह 'ओनेग्रा' है। जो रेगिस्तानों में रहता है। मैंने उसे पकड़ने का निश्चय किया।

मैंने एक रस्सी का फंदा बनाकर लटका दिया। फ्रिट्ज इस फंदे का प्रयोग करने के लिये उत्सुक हो उठा। मैंने कहा, "अगर तुम्हारा लक्ष्य गलत हो गया तो यह भाग जायगा। और यह अत्यन्त तेज दौड़ने वाला पशु है। इसको फिर हम लोग नहीं पकड़ सकेंगे।"

मैं पेड़ की झाड़ में खड़ा हो गया गधा और ओनेग्रा निश्चिन्त मन से पेड़ के नीचे रक्खी हुई घास चर रहे थे इतने में फ्रिट्ज ने फंदा फेंककर उसे फाँस लिया। पहले ओनेग्रा छटपटाया और फिर गले का फंदा कस जाने से जीभ निकाल कर गिर पड़ा। मैंने तुरन्त गले की गाँठ ढीली कर दी। और उसकी नाक में नाथ डाल कर काबू कर लिया फिर देखा कि यह जानवर मादा था।

दो दिन तक मैंने उसे पालतू बनाने के निरन्तर उपचार किये। परन्तु वे सब व्यर्थ हुए। जब मैं उसे बाँध देता तो चुपचाप खड़ा रहता पर जब खोलता तो फिर जंगली का जंगली। मैंने उसपर निप (बन्दर) को बैठाया। बोझा लादा। खाना नहीं दिया। धीरे-धीरे वह पालतू बन गया। अन्त में तो वह इतना हिल-मिल गया कि उसपर सब सवार होने लगे।

मैंने फ्रिट्ज को उस पर सवार होने का अभ्यास कराया, जिसमें उस पर बैठकर वह अपनी सारी जायदाद की देख-रेख कर सके। उसका नाम "बिजली" रक्खा गया, और सभी पशुओं के साथ वह भी रहने लगा। मेरी मुर्गी लगभग तीस या चालीस बच्चे दे चुकी थी। यह बढ़ती हुई सृष्टि देखकर मेरी पत्नी चिन्तित थी, कि

यह फ्लैमिन्गो, गधा, ओनेग्रा, भैंस, शिकरा, बन्दर, गीदड़—सभी कहाँ तक खिलाये जायेंगे।

उधर ये सारे पशु-पक्षी, अत्यन्त उपयोगी भी थे। विशेष कर मुर्गियाँ तो काफी संख्या में अंडे देती थीं। अब वर्षा ऋतु निकट आ रही थी। स्मरण रखने की बात है कि दक्षिणी में वर्षा जाड़ों में होती है। मैं पालतू जानवरों के निवास-स्थान का प्रबन्ध करने लगा। क्योंकि जाड़े, वर्षा दोनों से उनकी रक्षा करनी थी। बाँस, फूस और तख्तों का उपयोग करके कई सप्ताह के परिश्रम से यह काम पूरा कर पाया। रास्ते में मैंने एक घास देखी थी। एक दिन नमूने के लिये थोड़ी सी घर ले आया। मेरी पत्नी उसे देखकर प्रसन्न हो गई। उसने कहा यह न्यूजीलैण्ड में पाई जाने-वाली एक घास है वहाँ वाले इसका रेशा सूत की तरह इस्तेमाल करते हैं। अगर आप चर्खे या तकली का प्रबन्ध कर दें तो मैं इस घास के रेशों से सूत तैयार करके आपको कपड़ा दे सकती हूँ। अतः मैं अधिक मात्रा में घास इकट्ठी करने के लिये चल पड़ा। जैक और फ्रिट्ज भैंस और ओनेग्रा पर लाद लाये। पटसन की तरह उसे पानी में गाड़कर सड़ाने से रेशे निकल आये। कुछ समय का अन्तर देकर वर्षा होने लगी थी। आकाश घनाच्छादित होता जा रहा था। इसलिये हम लोग फिर गाड़ी लेकर चल पड़े। अनाज, आलू, नारियल आदि लादकर भंडारगृह में भरना आरम्भ कर दिया जिसमें वर्षा और शीतकाल में उसका उपयोग किया जा सके। इन कामों में हमें पन्द्रह दिन लग गये। वर्षा प्रारम्भ हो गई। बादल मँड़राने लगे। मूसलधार पानी गिरने लगा। सारा क्षेत्र झील सा मालूम पड़ने लगा।

बड़ी तेज हवा चलती थी। कमरे में भी हम बौछार से भीग जाते थे। इसलिये हम सब लोग नीचे उतर कर जानवरों के बाँधने के स्थान में जा रहे। क्योंकि वह जल से सुरक्षित बना था। वहाँ

भी स्थान संकीर्ण था। जानवरों की आवाज बात भी न करने देती थी। आग जलाने पर धुयें से दम घुटने लगता था।

जहाज से पृथक् होने पर आज फिर ऐसा दिन आया कि मुझे अपनी मातृभूमि की याद आई। कुहरे से युक्त अत्यन्त ठंडी हवा बड़े वेग से चल रही थी।

मैंने अपने लोगों की रक्षा के लिये एक पृथक् छायादार घर बनाने का निश्चय किया। मेरी पत्नी ने मल्लाहों वाले कपड़े बक्सों से निकाले, तथा उनपर रबड़ का लेप कर दिया। उस प्रकार से बरसाती कपड़े बन गये। भद्दे होने पर भी ये पानी से बचने के लिये बड़े उपयोगी सिद्ध हुए।

इस प्रकार जाड़े के अंधकारमय दिन गुजरने लगे। हम लोग गर्मी की ऋतु की याद करने लगे। मेरी पत्नी ने बार-बार एक सुरक्षित मकान बनाने के लिये आग्रह करती थी। उसने कहा शिकरागृह से हम गर्मी के दिनों में रहने का काम लेंगे।

फ्रिट्ज ने कहा, "क्यों न हम राबिन्सन् क्रूसो की भाँति रहने के लिये कोई खोह ढूँढ़ें।" हमने कप्तान वाले बक्स से राबिन्सन् क्रूसो पुस्तक की एक प्रति निकाली और उसे पढ़ा। सोचा कि हमें भी यदि कोई बड़ी सी खोह मिल जाती तो इन परेशानियों से छुट्टी मिलती।

——

अध्याय २५

नगरों में जाड़ा कुछ विशेष प्रकार से आता है। ठंढी हवा से बचाने के लिये लोग दरवाजे बन्द कर लेते हैं। आग जलाकर सब लोग साथ-साथ बैठते हैं हँसते-खेलते हैं। जाड़े की ऋतु केवल निर्धनों की परीक्षा के लिये होती है।

बसन्त में सूर्य का प्रकाश कुछ भिन्न सा होता है। वायु मन्द गति से सुगन्ध के साथ बहने लगती है। वनस्पतियाँ लहराने लगती हैं। फूल खिल उठते हैं। प्रसन्न होकर लड़के उछलने-कूदने लगे। चिड़ियाँ मीठे स्वर से गाने लगीं। सैकड़ों फूल खिल उठे। जाड़े की कठिनाइयाँ हम लोग भूल गये। सबसे पहले हमने जाकर अपने नये लगाये हुए पेड़ देखे। नर्म-नर्म पौधे उगने लगे थे। और पुराने पेड़ अपने पुराने पत्तों को गिराकर नयी-नयी कोपल धारण करने लगे थे। लड़के जानवरों को चराने चल पड़े। मैं तथा फ्रिटज पटसन सुखाकर उसके रेशे ठीक करने लगे। मेरी पत्नी ने इसमें पूरा सहयोग दिया। और वह इतनी व्यस्त हो गयी कि भोजन तैयार करना भी भूल गई।

पटसन तैयार करने के बाद लड़के जेलथीम-तक चलने का आग्रह करने लगे। वहाँ जाकर हम लोगों ने देखा कि हम लोगों के तंबू और पाल आदि सब वर्षा से सड़-गलकर बेकार हो गये थे। बारूद के पीपे भी बरबाद हो गये थे। लड़कों की राय थी कि चट्टान खोदकर एक गुफा का निर्माण करें। परन्तु वर्तमान परिस्थिति में हमको उसे पूरा करना कठिन था।

चट्टान बहुत कड़ी प्रतीत हो रही थी। ऐसा मालूम पड़ता था इसे काटने में तीन या चार साल व्यतीत हो जायेंगे। बड़े लड़कों

को मैंने आदेश दिया कि बारूद रखने के लिये चट्टान में एक सूराख करें। पहले दिन तो कुछ प्रगति ही न हुई। परन्तु दूसरे दिन बड़ी कठिनाई से हम सूराख कर सके।

जैक दूसरी जगह गुफा बनाने में लगा था। उसने ऊपर की भारी चट्टान काट डाली और चिल्ला पड़ा। "मैंने सूराख कर लिया" मैंने कहा, "क्या ? जैक ! तुमने वास्तव में पहाड़ फोड़ लिया ?"

जैक ने कहा, "हाँ हाँ !"

फ्रिट्ज ने दौड़कर देखा, और कहा, कितना बेवकूफ है जैक। इतनी छोटी चट्टान काट देने से क्या होता है ? परन्तु जैक हताश न हुआ और वह खोदता ही रहा। अन्त में उसने बड़ा गड्ढा बना डाला। मैंने भी जाकर देखा, और अपनी कुल्हाड़ी से सूराख का मुँह चौड़ा कर दिया। लड़के उसमें पैठने के लिये तैयार हो गये। परन्तु मैंने कहा नहीं "सम्भव है कि उसमें कोई खतरनाक जानवर हो या ढालू सतह हो।"

झाँक कर देखा, उसमें कुछ आवाज सी सुनाई पड़ रही थी। जैक ने पूछा, पिता जी क्या इसमें कोई खतरनाक शेर या साँप हैं ? हम लोग उससे डरते नहीं हैं। मैंने समझाया कि इसमें कोई पशु नहीं है। इतनी जगह में कोई भी जीवधारी जीवित नहीं रह सकता।

हम साँस में एक हवा खींचते हैं और दूसरी लेते हैं। जहाँ वायु का इस प्रकार का मिश्रण नहीं होगा। कोई भी व्यक्ति जीवित न रह सकेगा। फ्रिट्ज ने कहा, "अगर जहरीली हवा में साँस लेकर कोई मुर्च्छित हो जाय तो क्या उपाय हो सकता है ?" मैंने समझाया, "इस प्रकार के व्यक्ति को ताजी हवा में लाने से और उसके मुँह पर ताजे और ठंढे पानी का छींटा देने से ठीक किया जा सकता है।"

गुफा के द्वार पर आग जला दी गई जिससे जहरीली हवा बाहर निकल जाय। जैक अपनी माँ को खोह दिखाने के लिये बुलाने चल दिया। हमने और फ्रिट्ज ने खोह का मुँह और बढ़ाया। लालटेन लेकर हमने खोह में प्रवेश किया। साथ में दोनों कुत्ते भी थे। अन्दर की फर्श चमकीली थी। और दो-तीन खम्भे से लगे हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों किसी ने छत को सहारा देने के लिये इन स्तम्भों का निर्माण किया हो। एक तरफ पड़े हुए चमकीले टुकड़े मैंने उठाकर चखकर देखे तो ज्ञात हुआ कि यह नमक है। मैं बड़ा ही प्रसन्न हुआ, कि बिना कठिनाई के ही नमक प्राप्त हो जाया करेगा। मैंने गुफा के एक ओर बड़ा सुन्दर कमरा सा देखा। जैक ने कहा, कि यह गिरजा-घर जैसा है। अर्नेस्ट प्रसन्न मुद्रा से सोचता रहा। मेरी पत्नी भी बहुत प्रसन्न थी। फ्रिट्ज उस कमरे में कूद पड़ा और बोला, "ये एक चमकते हुए टुकड़े हीरे हैं। और यह संसार की सबसे सुन्दर जगह है।" उसकी माँ ने कहा, "फ्रिट्ज! रहने के लिये यह जगह सुन्दर और कलापूर्ण है। फ्रिटज ने अपनी माँ के गले लग गया। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। मेरी पत्नी ने लड़के को हर्ष से चूम लिया। हम लोग अपने "शिकरा-गृह" को लौट गये। इस प्रकार से वर्षा और शीत का साधन हमने अनायास प्राप्त कर लिया।"

हम लोगों ने गुफा का दरवाजा बड़ा किया और हवा आने-जाने के लिये तीन खिड़कियाँ तैयार कर लीं। एक भाग में पशुओं के रहने के लिये भी स्थान चुन लिया।

अध्याय २६

हम लोगों ने अपने निवास-स्थान धीरे-धीरे सुधार करना प्रारम्भ किया। झील के निकट कुछ दूरी पर पेड़ों की चारों ओर से लाइन खड़ी थी। प्रत्येक पेड़ एक दूसरे से अधिक दूरी पर नहीं था।

बीच का मैदान चौरस था। मैंने उस मैदानी भाग में एक 'फार्म' तैयार करने का विचार किया और उसी फार्म के निकट में पेड़ काट कर एक नये मकान की योजना बनने लगी। खेत का कार्य पूरा करने के बाद खेत से घर तक और वहाँ से 'वानर वन' की ओर का मार्ग ठीक करने में व्यस्त हो गये। उस 'वानर वन' में जलानेवाली लकड़ियों की बहुतायत थी। जो पशुओं के चरने के लिये भी वह अच्छा स्थान था।

वहाँ से हम लोग "निराशा अंतरीप" की ओर चल दिये और वहाँ थोड़ी देर तक ठहरे। इस अंतरीप के एक ओर ऊँचा पहाड़ था और दूसरी ओर सुन्दर नीला समुद्र लहरा रहा था। तीसरी ओर हरे-हरे देवदार आदि के वृक्ष खड़े हुए थे। सम्पूर्ण देश हरा-भरा और उपजाऊ प्रतीत होता था। कई चश्मे उछल-उछल कर बह रहे थे। चरागाह में असंख्य फूल फूले थे। वृक्ष की शाखाओं पर चिड़ियाँ चहक रही थीं।

मैंने कहा, "लड़को! देखो कितना सुन्दर स्थान है।" यहाँ भी हम कए घर बनायेंगे। लड़के चिल्ला पड़े और कहने लगे हाँ-हाँ पिताजी अवश्य लेकिन इसके पहले हम इस सुन्दर स्थान का कोई नाम रख लें। अर्नेस्ट ने इसका नाम "आशा-शिखर" रख दिया। यह ठीक भी था। कई सप्ताह लगातार परिश्रम करके हमने यहाँ

खेती की पैदावार तथा सामान रखने के लिये एक मकान तैयार कर डाला। उसके बाद एक पेड़ का तना काट कर छोटी 'डोंगी' बनाने के उपाय में लग गये। पाँच फुट व्यास का एक देवदार का पेड़ मिल गया। नाव बनाने में बड़ा परिश्रम करना पड़ा। अनुभव न होने के कारण अनेक भूलें हुईं। इन सब बातों का ब्योरेवार विवरण लिखकर मैं पाठकों को उबाना नहीं चाहता। इतना पर्याप्त है कि कई महीनों के निरन्तर परिश्रम के बाद नाव आखिर तैयार ही हो गयी।

इन्हीं दिनों गाय ने एक बछड़ा जना। पहले ही बतलाया जा चुका है कि भिन्न-भिन्न जानवरों का भार बच्चों ने ले रक्खा था। अर्नेस्ट के सिपुर्द बन्दर था, फ्रिट्ज ने ओनेग्रा लिया था। जैक बड़ा ही उत्साही था। उसने भैंस और सियार का भार ले रक्खा था। गधे को मेरी पत्नी सिखा रही थी। फ्रैंक ही ऐसा था जिसके पास कुछ न था। मैंने कहा, "फ्रैंक! तुम बछड़े को सिखलाओ" उसने ताली पीटते हुए प्रसन्नता से स्वीकार किया। और कहा, "मैं उसका पालन करूँगा।" उसका नाम रक्खा गया 'नंदी' जैक ने भैंसे का नाम रक्खा 'तूफान'। कुत्तों के नाम उनके रंग के हिसाब से रखे गये। लगभग दो महीने तक हम लोग गुफा सजाने में और वर्षा के पूर्व ही उसे सुरक्षित करने में लगे रहे।

———

अध्याय २७

एक दिन सबेरे नित्य से कुछ पहले ही जग गया। लेटे-लेटे हिसाब (की) किया तो पता चला कि कल इस द्वीप में आये एक वर्ष पूरा हो जायगा। इसलिये सोचा कि कल ईश्वर की बन्दना एवं धन्यवाद विशेष रूप से होना चाहिये। शाम को मैंने सबको बतलाया कि "कल प्रातःकाल वार्षिकोत्सव मनाने के लिये सभी लोग तत्पर रहें। हम सब ईश्वर को हृदय से धन्यवाद दिया।"

मैंने कहा, "देखो जब आदमी कार्य में लगा रहता है उस समय ऐसा जान पड़ता है कि समय चिड़िया के पंखों पर बैठ कर उड़ गया। और वही समय जब आलस्य और प्रमाद के साथ व्यतीत किया जाता है, तो काटे नहीं कटता। कछुआ की चाल चलता है।" मेरी पत्नी ने पूछा "आपने आज ही हिसाब लगाया है ?"

मैंने समझाया कि "तुम जानते हो एक साल में तीन सौ पैंसठ दिन पाँच घंटे अड़तालीस मिनट और तेंतालिस सेकेण्ड होते हैं।" अर्नेस्ट ने कहा, "प्रति चार वर्ष बाद फरवरी महीने में यह संख्या को जोड़कर उसे उन्नीस दिन का मान लेंगे।"

दूसरे दिन मैं उषा काल में ही उठ पड़ा। उठकर बैठा ही था कि तोप जैसी एक तेज आवाज सुनाई पड़ी। कारण जानते देरी न लगी। वार्षिकोत्सव मनाने के लिये फ्रिट्ज ने तोप की एक फायर की थी। सब चौंककर उठ पड़े। मैंने फ्रिट्ज को डाटा और भविष्य के लिये सतर्क कर दिया।

ईश्वर-प्रार्थना के बाद हम सब एक साथ में बैठे। इस द्वीप में आने के कुछ ही दिन बाद मैंने डायरी लिखना प्रारंभ कर दिया

था। उसकी सहायता से मैंने पहले वर्ष का सिंहावलोकन किया। जिससे हम लोगों के दिमाग में पहले दिनों की बातें ताजी रहें।

मैंने सभी बच्चों को खुशी मनाने के लिये तथा उनको बिल में कूदने तथा व्यायाम करने के लिये प्रेरित किया। वे सब खेलने लगे। पत्नी के साथ भीता के किनारे बैठकर मैं भी सब के आनन्द में भाग लेने लगा।

मैंने लड़कों को बन्दूक और पिस्तौल की निशाने बाजी करना तथा तैरने और दौड़ आदि की शिक्षा दी।

फिर लड़के की धनुर्विद्या की परीक्षा ली। इसके बाद बच्चों की दौड़ प्रारंभ हुई दौड़ में जैक और फ्रिट्ज हिरण की भाँति दौड़े। जाते समय अर्नेस्ट पीछे रह गया। परंतु वापसी में सबसे पहले आ गया मैंने कारण पूछा उत्तर मिला कि फ्रिट्ज शुरू से ही तेज दौड़ रहा था। इसलिये वापसी में थक गया था।

इस प्रकार के खेल-कूद से और प्रहसन से लगभग शाम तक का समय व्यतीत हो गया मेरी पत्नी ने बच्चों को यथोचित् पुरस्कार दिये। फ्रिट्ज को फायरिंग में और तैरने में। अर्नेस्ट दौड़ में और गोला फेंकने में। जैक घुड़सवारी में। फ्रैंक ने बैल की शिक्षा देने में।

प्रार्थना और धन्यवाद के साथ महान दिवस समाप्त हुआ।

——

अध्याय २८

दूसरे दिन प्रातःकाल की प्रार्थना के पश्चात् शीघ्र ही हम लोग अपने कार्य में लग गये।

लड़कों से मैंने लकड़ियाँ इकट्ठी करने को कहा और मैं स्वयं तारपीन तथा अन्य चीजें मिलाकर लासा तैयार करने को लग गया। यह तो स्पष्ट ही है कि हमारा गोली बारूद अनन्त काल तक न चल सकता था, इसलिये लासा लगाकर पक्षी पकड़ने की योजना बनाई थी। जब वह तैयार हो गया तो मैंने उसका लेप वृक्षों की उन टहनियों पर कर दिया जहाँ पक्षी बहुधा बैठा करते थे। दूसरे दिन लड़के फँसी हुई चिड़ियाँ ले आये अर्नेस्ट ने कहा, "पिता जी ! यह तो कबूतर है। मैं पालूँगा।"

इस प्रकार बहुत से कबूतर पकड़े गये। थोड़े ही प्रयत्न से वे पालतू हो गयें। इसके बाद बाँस की छड़ों की सहायता से उन का निवास-स्थान भी बन गया।

दूसरे दिन के लिये आगामी विषय पर विचार करने लगे। दूसरे दिन हम लोग प्रातः काल ही उठ पड़े। मेरी पत्नी ने पर्याप्त भोजन तैयार करवा दिया।

हम लोग ने भैंसे पर सवारी भी कर ली। गधा तथा अन्य पशु भी हम साथ में लेकर चल पड़े।

मैंने कहा, "लड़को बन्दर बहुत परेशान करते हैं। हानि भी बहुत करते हैं। इसलिये मैंने उनके विरुद्ध एक लड़ाई करने का विचार किया है। इसीलिये फ्रैंक को और तुम्हारी माँ को घर पर ही छोड़ दिया है।"

हम लोग हंस झील के तट पर पहुँच गये। एक सुरक्षित स्थान पर हमने अपना तम्बू खड़ा कर दिया। जानवर चरने के लिये छोड़ दिये। उसके बाद हम अपने शत्रुओं की खोज करने लगे।

फ्रिट्ज ने सूचना दी कि जंगल के बीच धान के खेत में बन्दरों का एक दल उत्पात कर रहा है।

हम शीघ्र ही वहाँ पहुँच गये। खेत के एक ओर थोड़ी-थोड़ी दूर पर कुछ बाँस गाड़ दिये। और उनसे कुछ और भी छड़ें बाँध दीं। नजदीक के पेड़ों पर लासा लगा दिया। शाम निकट आ रही थी। बन्दर खेत छोड़ पेड़ों की ओर चल पड़े।

बाँसों और पेड़ों पर चढ़ते ही वे चिपक गये। कुछ बड़े नाराज से ज्ञात होते थे। कुछ लड़ रहे थे और कुछ चीख रहे थे।

जब सब बन्दरों की यही दशा हो गयी तो मैंने कुत्तों को उन पर छोड़ दिया। उन्होंने सैकड़ों को घायल करके जमीन पर गिरा दिया। इस बात का मैंने ख्याल रक्खा कि यथासंभव जान से न मारे जायँ।

फ्रिट्ज ने कहा, "वाह, यह तो भीषण और कठोर निर्दयता है।"

मैंने कहा, "ठीक है यह कठोरता है। परन्तु फसलों की रक्षा के लिये इसके सिवाय दूसरा उपाय भी तो नहीं है।"

फ्रिट्ज ने कहा, "यह लोग घायल होकर मनुष्य की तरह कराह रहे थे। इसलिये दृश्य बड़ा ही भयानक प्रतीत हो रहा था।"

कुत्तों का निशाना उधर से हटाकर दूसरी ओर लगाया। इसके बाद बन्दर द्वीप की दूसरी ओर भाग गये। और उनके उपद्रव से मुक्ति मिली।

———

अध्याय २६

रात भर हम तम्बू में सुरक्षित सोते रहे। सबेरे शिकारगृह की ओर चल पड़े।

मेरी पत्नी ने कबूतरों का घर दिखलाया। मैंने दूसरे दिन 'जेलदीम' में छूटे हुए काम पूरे करने का निश्चय किया। इसलिये गाड़ी पर सब सामान लाद दिया और चल पड़े।

वहाँ पहुँचकर चट्टान की एक छोटी गुफा में कबूतरों के लिये निवासस्थान बनाया। अन्दर से प्लास्ट करके उसमें दरवाजा लगा दिया। जो खोला और बन्द किया जा सकता था।

कबूतर उसमें हम लोगों ने रखने का निश्चय कर लिया।

मैंने कहा, "बच्चो! अब हमें ऐसी तरकीब करनी है कि कबूतर उस दरबे को अपना घर बना लें।"

फ्रिट्ज ने कहा, "अच्छा पिताजी! अवश्य ही इस जादू का प्रयोग कीजिये।"

मैंने कहा, "नहीं, इसमें जादू की कोई बात नहीं, तुम सब कर सकते हो।"

उन्होंने उत्तर दिया, "पिताजी! बतलाइये मैं करने के लिये तैयार हूँ।"

मैंने अलसी कूटकर उसकी एक रोटी बनाई। फिर अलसी का तेल लेकर कई कबूतरों के पंखों पर लगा दिया। ताकि अन्य कबूतर इसकी खुशबू से इनके साथ लग आवें।

अलसी की रोटी के लालच से कई कबूतर उसी दरबे में रहने लगे।

सुबह के समय नाश्ते के बाद जब मैंने ये कबूतर खोले तो वे बाहर इधर-उधर उड़ने लगे। थोड़ी ही देर में दृष्टि से ओझल हो गये। कुछ ही घंटों में लौटकर फिर दरबे में आ गये। तब तक कुछ बाहरी कबूतर दरबे के चारों तरफ आकर मड़राने लगे।

दूसरे दिन सभी कबूतर उड़ गये। और हम लोग चिन्तित हो गये कि शायद गायब हो गये। परन्तु कुछ ही समय बाद पालतू नीले कबूतर साथ में अन्य कबूतर लिये हुए लौटे। पालतू कबूतर बड़ी सावधानी से अपने बाहरी साथियों को दरबे में ले गये। लड़कों ने कहा, "दरवाजा बन्द कर देना चाहिये। परन्तु मैंने रोक दिया कि दूसरे कबूतर डर जायेंगे। अतः दरवाजा शाम तक खुला रहने दिया। ताकि अन्य कबूतर भी वापस आकर उसमें पहुँच जायँ।"

तब तक फ्रिट्ज ने कहा, "देखिये अन्य कबूतर भी आ गये।"

धीरे-धीरे अनेक बाहरी कबूतर आ गये। दरबे की आबादी दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गयी।

लगभग चौबीस फीट की एक रस्सी लेकर मैंने दरबे और एक पेड़ के बीच बाँध दी। उस पर सब कबूतर बैठकर झूला झूलते थे।

अध्याय ३०

जैक फ्लैमिन्गो दल-दल से कबूतरों का घोंसला बनाने के लिए नरकुल निकालने जाया करता था। एक दिन लौटा तो सिर से पैर तक कीचड़ में लथ-पथ था। मैंने कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया, "कि मैं सीधे और लम्बे नरकुल लाना चाहता था। किन्तु पैर फिसल जाने के कारण मैं बीच दल-दल में गिर पड़ा। और वहाँ कंधों तक धँस गया। मैं बड़े जोर से चिल्ला पड़ा। परन्तु किसी ने भी नहीं सुना। और कोई उपाय न देखकर मैंने अपने पालतू गीदड़ की पूँछ पकड़ ली। और उसकी सहायता से बाहर निकल आया।"

उसको मैंने साफ कपड़े पहनने के लिए और नहाने की आज्ञा दी।

तब तक भोने गरा की ओर ध्यान गया जो बड़ी मूर्खता से इधर-उधर घूम रहा था। मैंने उसका नाम बिजली रख दिया। क्योंकि वास्तव में वह बहुत तेज दौड़ रहा था।

पशुओं को पानी पिलाने के लिये गीदड़ी नदी तक जाना पड़ता था। इस परेशानी से बचने के लिये मैंने बाँस जोड़-जोड़-कर एक नल तैयार कर लिया। अंत में एक पीपा लगा दिया। ताकि उसमें एकत्रित पान पशु और पक्षी पी सकें।

वर्षा ऋतु आ रही थी। मैंने गत वर्ष की भाँति चावल, आलू आदि भोजन एकत्रित कर लिया था। तथा खेत में कुछ अनाज बो दिया था।

क्योंकि वर्षा ऋतु में शीघ्र ही पक कर तैयार हो जावेगा।

परन्तु कठिनाई इस बात की थी कि मेरे घर से खेत काफी दूर पड़ते थे। और बीज भी कई प्रकार के थे। जिससे मैं उनकी फसलों की देख-रेख बड़ी कठिनाई से कर पाता था।

क्षितिज में बादलों के समूह एकत्रित होने लगे। समुद्र भी अपनी रंगत बदल रहा था। बालू और चट्टानों से उनकी विशाल लहरें टकरा रही थीं।

मैंने शीघ्र ही अपने घर बरसात के अनकूल करने का प्रयत्न किया।

घर में रोशनदान कम थे। इसलिये अँधेरा रहा करता था। बच्चों के कमरे में भी कोई रोशनदान न था।

दरवाजे को मिलाकर केवल चार खिड़कियाँ थीं। इसलिये गुफा में एक प्रकार से अँधेरा ही रहता था।

मैंने एक लम्बा बाँस गुफा के बीचो-बीच में गाड़ दिया। और उसके ऊपरी सिरे पर एक गरारी लगाकर जहाज से लायी हुई एक लालटेन बाँध दी।

लड़कों ने गुफा की दीवाल में ही पुस्तकें रखने के लिये अलमारियाँ बना ली थीं। मेरी पत्नी ने रसोई घर तैयार कर लिया।

फ्रैंक और जैक की रुचि के अनुसार मैं उन्हें फ्रैंच भाषा पढ़ाने लगा। और फ्रिट्ज और जैक अंग्रेजी की ओर अधिक आकर्षित थे।

मैंने कहा, "कि अंग्रेजी का गहरा ज्ञान प्राप्त करना अच्छा है। क्योंकि यह एक विश्वव्यापी भाषा है। सभी देशों में इसका प्रयोग होता है।"

मेरी स्त्री 'डच' भाषा का ज्ञान रखती थी। क्योंकि मेरा एक सम्बन्ध उस परिवार से था जो कि आशा अन्तरीप के निकट रहता था।

जैक 'ऐटली' और स्पेनी भाषा से प्रेम रखता था। यों हम लोग सब 'जर्मन' और 'फ्रैंच' भाषा-भाषी तो थे ही।

फ्रिट्ज और अर्नेस्ट अपनी माँ से अंग्रेजी और डच भाषा सीखा करते थे।

अन्त में हम लोगों ने 'लैटिन' भाषा का भी अभ्यास प्रारम्भ कर दिया। क्योंकि हमारे पुस्तकालय की औषध विज्ञान वाली सभी पुस्तकें 'लैटिन' में ही थीं।

मलाया भाषा का थोड़ा बहुत ज्ञान मुझे था। उसका अभ्यास मैंने जारी रक्खा। मैं समझता था कि मेरा द्वीप पूर्वी भारत के द्वीपों में से एक होगा।

इस प्रकार हम लोगों का समाज बहुत भाषाओं का ज्ञाता था। उस गुफा का नाम गुफा महल रख दिया।

———

अध्याय ३१

अगस्त के अन्त में वर्षा ऋृतु समाप्त हो रही थी। धीरे-धीरे बादल तितर-बितर हो रहे थे मौसम अच्छा हो रहा था।

मैंने चट्टान पर चढ़कर देखा कि कोई ऊँची चीज बालू के मैदान में दिखलाई पड़ती थी। दूर्बीन से देखा परन्तु कुछ समझ न सका।

दूसरे दिन एक किश्ती पर सवार होकर जैक और अर्नेस्ट के साथ उसका निरीक्षण करने चल पड़े।

फ्रिट्ज ने कहा, "किसी नाव का अम्बूल जान पड़ता है।" जैक ने कहा, "यह किसी पेड़ का तना है।" अर्नेस्ट ने कहा, "यह समुद्री शेर है।" निकट जाकर देखा कि वह एक बड़ी ह्वेल मछली थी।

मैं तट पर वापस आया। वहाँ देखा मेरी पत्नी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। वह मूँगे के सौंदर्य को देख-देखकर हर्षित हो रही थी।

वह भी ह्वेल द्वीप को चलने के लिये तैयार हो गई।

दूसरे दिन प्रात:काल ही हमने किश्ती पर कुछ आवश्यक औजार रख लिये। और कुछ भोजन सामग्री लेकर चल दिये।

ह्वेल का तेल लाने के लिये मैंने कुछ पीपे रख लिये थे। लालटेन जलाने के लिये यह तेल काफी अच्छा होता है।

नाव पर बोझ अधिक था। फिर भी सकुशल तट तक पहुँच गये। निकट से देखने से यह पता लग गया कि यह ग्रीनलैण्ड की मछली है।

फ्रैंक इसको देखकर डर गया। और अपनी माँ की आड़ में छिप गया। मैंने अनुमान से बताया कि यह लगभग सत्तर फुट लम्बी और पचास फुट चौड़ी है। इससे दुगने आकार तक की ह्वेल मछली पाई जाती है।

सिर बहुत बड़ा था और जबड़े लगभग दस फिट के थे। आँखें बिलकुल छोटी थीं। और इसके जबड़े में लगी हुई पतली-पतली हड्डियों को तो ह्वेल बोन कहते हैं।

फ्रिट्ज और जैक मछली पर चढ़ गये। कुल्हाड़ी से काटकर धड़ और सिर अलग-अलग कर दिया। मेरी सहायता से उसने सब ह्वेल बोन निकाल ली।

इतनी ही देर में चिड़ियों के एक बड़े समूह ने शिकार पर आक्रमण किया। वे पहले हम लोगों के चारों तरफ उड़ने लगीं। फिर माँस की एक बोटी छीन ले गयीं। अब प्रश्न यह था कि यह माँस चिड़ियाँ ले जायेंगी या मनुष्य।

मैंने फ्रिट्ज को एक ह्वेल बोन की देख-रेख में छोड़ दिया। और मछली की खाल सिर से पैर तक उतार दिया। घोड़ों की काठी और जूतों का तला बनाने के लिये यह उपयोगी थी। चमड़ा काफी मोटा नहीं था। किन्तु यह आशा थी कि सूखने पर मोटा हो जायगा। मेरी नाव लगभग भर गई थी। और सायंकाल निकट आ रहा था। चलने की तैयारी होने लगी।

हम लोगों ने तेल पीपों में भर दिया। परन्तु उसकी गन्ध इतनी खराब थी कि लड़कों की दम घुटी जाती थी। भैंस और तथा ओनेग्रा गधे आदि की सहायता से सामान गोदाम तक पहुँच गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही हम लोग फिर समुद्र की ओर चल पड़े। अबकी बार मैंने पत्नी और फ्रैंक को घर पर ही छोड़

दिया। क्योंकि अबकी मैं रीछ की हड्डी काटना चाहता था। जो बड़ा खराब दृश्य उत्पन्न करती।

द्वीप पर पहुँचकर देखा कि मछली को सैकड़ों समुद्री चिड़ियाँ घेरे हुए थीं। उन्हें भगाकर रास्ता साफ किया। और काम में जुट गये। मैंने लड़कों को बताया कि ह्वेल की आँतों की बोतलें बनाऊँगा। जिसमें इसका तेल रक्खा जायगा।

आवश्यक सामग्री सभी मैंने साथ में ले ली। और घर की ओर चल पड़े। तट पर पत्नी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने मेरे सामान की बदबू के कारण मेरा अच्छा स्वागत न किया। मैंने सामान लादकर चल दिया।

अध्याय ३२

दूसरे दिन मैंने उस तेल को साफ करने का विचार किया। स्लेज गाड़ी पर चार पीपे रख लिये। और चुपके से वहाँ से निकल गया ताकि गंध वहाँ तक न जा सके। पीपों में आध इञ्च व्यास का एक छिद्र बना लिया। उस छिद्र के नीचे एक साफ छन्ना लगा दिया। फिर एक बड़े बर्तन में साफ तेल छान लिया। साफ तेल पीपों में भर दिया। शेष नदी में फेंक दिया। उसपर गीदड़ और चिड़ियाँ बड़ी तेजी से दौड़ पड़ीं। पानी से निकलकर तमाम गिर-गिट जुट गये।

मेरी स्त्री ने कहा, "घर में यह तेल रखने से आग जलाने में सावधानी रखनी पड़ेगी। और इसकी बदबू भी हानिप्रद है।"

दूसरे दिन हम नाव पर निराशा अन्तरीप की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर देखा कि यह अन्तरीप वास्तव में "यथा नाम तथा गुण" है बालू के किनारे और मूँगे की चट्टानों से नाव लेकर चलना कठिन था बड़ी कठिनाई से मछली-द्वीप तक पहुँचे। अनेक समुद्री-शेर चट्टान की भाँति दूर दिखलाई पड़े। हमें देखते ही वे समुद्र में कूदकर गायब हो गये।

———

अध्याय ३३

वर्षा समाप्त होने के कुछ ही बाद हम अपने फार्म पर काम करने में लग गये। खेत अभी भली प्रकार साफ न हो पाये थे। इसके बाद लड़कों ने अपनी-अपनी सवारी के लिये काठी तैयार करने को कहा। मैं इस काम में लग गया। मेरे पास चमड़ा काफी रक्खा था। मैं इसकी सहायता से कार्य में व्यस्त था। चमड़े में बोझा बाँधकर उसे लटका दिया फिर तेल में राख मिलाकर उसपर लेप किया। इसी साफ किये हुये चमड़े से मैंने लगाम और काठी जीन इत्यादि सभी कुछ तैयार कर लिया। सामान रखने के लिये टोकरियों की बहुत कमी थी, इसलिये लड़कों को उन्हें बनाने में लगा दिया। जिसमें मेरी अनुपस्थिति में वह उस टोकरी में अनाज और फल आदि इकट्ठा कर लिया करें। मुझे झाऊ तथा अन्य उपयोगी झाड़ों में टोकरी बनाने लायक तीलियाँ मिल गयीं। और दो टोकरियाँ तुरन्त ही तैयार हो गईं। एक बाँस के दोनों सिरों पर रस्सियों द्वारा ये लटका कर मैंने एक बँहगी तैयार कर दी। मैंने लड़कों को समझाया कि इस प्रकार भार को दो बराबर भागों में बाँट कर सरलता से उठाया अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकता है। जैक और अर्नेस्ट ने इसका तुरन्त ही परीक्षा करना चाहा। उन्होंने फ्रैंक को एक टोकरी में बैठाया और जैक अर्नेस्ट को दूसरी में दोनों को उठाकर वह सरलता पूर्वक चल दिया।

फ्रिट्ज ने कहा, "पिताजी! इसी प्रकार की बहँगी हम और तैयार कर लें जिससे कि माताजी, अथवा अन्य किसी को बीमारी अथवा चोट की दशा में एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जा सकें।"

मैंने कहा, "बच्चो ! बात तो ठीक है। और यह बहँगी इसी प्रकार की है जैसी चीन के अथवा फ्रांस के निवासी प्रयोग करते हैं।" उनकी माँ ने कहा, "बेटा ! उपाय तो बहुत अच्छा, पर इसके द्वारा भी तुम मुझे जमीन से उठा नहीं सकते। और अगर उठा सकते हो तो बड़ा ही सुन्दर है।"

जैक ने कहा, "माताजी ! क्या भैंस और बैल भी तुमको नहीं ले जा सकते।"

मैंने कहा, "ठीक है ! इस विधि से बहँगी आसानी से कार्य में लाई जा सकती है।"

अर्नेस्ट ने कहा, "माता जी ! आप बहँगी में बड़ा आनन्द अनुभव करेंगी। और आपकी शोभा एक भारतीय राजकुमारी की भाँति होगी। मैं उसमें पर्दे लगा दूँगा। जब आप चाहें पर्दे डालकर अदृश्य हो सकेंगी।"

जैक और अर्नेस्ट भैंसा और बैल पकड़ लाये उन पर काठी कसके, बाँस का एक-एक सिरा दोनों की पीठ पर रख दिया। बीच में एक टोकरी लटका दी। जैक भैंसे पर सवार हो गया। फ्रिट्ज बैल पर। अर्नेस्ट टोकरी में बैठ गया।

जानवरों ने धीरे-धीरे चलना शुरू कर दिया। फिर तेजी से दुलकी चाल में आ गये। टोकरी जोर के झोंके खाने लगी। अर्नेस्ट डरकर चिल्लाने लगा। गीदड़ी नदी पर जाकर पशु खड़े हो गये। तट पर पहुँच कर वे दोनों भाई झगड़ने लगे। मैंने उनमें बीच-बचाव कराया। थोड़ी देर बाद वे फिर सब शान्त हो गये। मैं छाया में बैठा यह सब दृश्य देख रहा था। तब तीव्र दृष्टि वाले फ्रिट्ज ने कहा, "यह सर-सर की आवाज कहाँ से आ रही है ? मैंने भी अनुभव किया कि असाधारण शरीर और चाल का जीव शिकरागृह की ओर बढ़ता जा रहा है।" मेरी पत्नी ने कहा, "यह या तो कोई सूअर है या भेंड़ जो बालू में लोट रही

है।" फ्रिट्ज ने कहा, "नहीं, नहीं यह कोई विशेष जानवर है जो जमीन पर सरक रहा है। कभी-कभी जमीन के ऊपर सिर भी उठाता है।"

मैंने दूरबीन से देखा, कि न तो उसके पैर हैं और न तो पंजे ही दिखलाई पड़ते हैं। मेरी पत्नी ने कहा, "मुझे डर लग रहा है। मैं खोह में जाकर दरवाजा बन्द कर लूँगी।" मैंने कहा, "है कोई बड़ा ही खतरनाक जानवर। सब धूम-धाम बन्द कर दो। मेरे पास आकर अस्त्र-शस्त्र तैयार कर लो। सभी दरवाजे बन्द कर लो और सावधान रहो।"

फ्रिट्ज ने कहा, "पिता जी, यह है क्या ?" मैंने उत्तर दिया, "मेरे विचार से यह कोई बड़ा भारी अजगर है।" मैंने गुफा के दरवाजे बन्द कर दिये। और छत पर जाकर अपनी बन्दूक भर कर तैयार कर ली। साँप धीरे-धीरे पुल पार कर रहा था। मैं झाँकता रहा धीरे-धीरे वह हम लोगों की खोह के सामने आ गया। जैक ने उस पर फायर कर दी। मेरी पत्नी ने भी। साँप तेजी से भागा। मैंने और फ्रिट्ज ने भी वार किया। परन्तु वह तेजी से भागकर नरकुल में छिप गया। मेरे अनुमान से वह तीस फीट से कम लम्बा न था। मैंने कहा, "जब तक यह शत्रु निकट ही नरकुल में छिपा हुआ है। हम लोग सावधानी से रहेंगे। और बिना मेरी आज्ञा के कोई भी कहीं नहीं जायगा।"

———

अध्याय ३४

हम सब लोग नरकुल में छिपे हुए उस भयङ्कर सर्प के भय से तीन दिन तक लगातार गुफा में ही बन्द रहे। कुछ पता न लगता था। ऐसा प्रतीत होता था, कि वह कहीं नरकुल और दलदल से खिसक गया। परन्तु बत्तखों और जल-मुर्ग की आवाजों से ऐसा आभास मिलता रहा, कि वह अब भी इसी दलदल में उपस्थित है। ये पक्षी बड़ी देरतक सुबह नरकुल पर मँडराती और चिल्लाती रहती थीं। जिससे उनके भयभीत होने का आभास मिलता था। अन्त में वे चिड़ियाँ 'शार्क द्वीप' पर चली गयीं। मैं गुफा में बन्द रहते-रहते परेशान आ गया था। भोजन-सामग्री समाप्त हो गई थी। दशा और गंभीर होती जाती थी। हमारा पालतू गधा बड़ी सहायता करता था। वह अक्सर वहाँ तक जाता था और रेंहकने लगता था। उसके संकेत से हम लोगों को बड़ा संतोष होता था। हमारे पास पशुओं के चारे की कमी होती जा रही थी। क्योंकि वे स्वतन्त्र रूप से चरने नहीं पाते थे। मैंने विचार किया कि पशुओं को पुल के इस पार ही चरने दिया जावे। यहाँ भयंकर सर्प नहीं पहुँच सकेगा। अतः चौथे दिन मैंने सभी पशुओं को एक साथ बाँध दिया। फ्रिट्ज इस काम में विशेष दक्ष था। वह ओनेग्रा पर सवार होकर चल दिया। फ्रिट्ज को आज्ञा दी गई थी कि ज्योंही शत्रु का आक्रमण प्रतीत हो तुरन्त ही वह भाग पड़ेगा। मैंने अपनी पत्नी और अन्य बच्चों को घर के अन्दर ही रहने का आदेश दिया। और समझा दिया कि सर्प को भयभीत करने के लिये खिड़की के पास से आग जलाती रहें। मैं स्वयं एक चट्टान पर खड़ा होकर दूरबीन से साँप ढूँढ़ रहा था।

मैंने अपनी बन्दूक में बड़ी वाली कारतूसें भर लीं और चल पड़ा। जानवरों का दरवाजा खोलते ही गधा भाग निकला। फ्रिट्ज उसको वापस लाना चाहता था, परन्तु वह तीन दिन से निरन्तर कोठरी में बन्द रहने के कारण स्वतन्त्रता के साथ बत्तखों के दलदल की ओर दौड़ पड़ा। उसे वापस लाने के सभी प्रयत्न निष्फल रहे।

गधा सर्प के निकट चला जा रहा था। सर्प ने देखा और टेढ़ी चाल से गधे की ओर चल पड़ा। हम सभी लोग डर गये थे। सर्प ने अपना फन उठाया। चमकीली आँखों से इधर-उधर देखा उसने बड़ा भारी मुँह फैला दिया और जीभ लपलपाने लगा। गधे ने बड़े जोर से सीपों-सीपों की आवाज की जो कि चट्टानों से टकरा कर प्रतिध्वनित होने लगी। सर्प उस पर तीर की भाँति झपट पड़ा। वह गधे के शरीर पर कसकर लिपट गया। मेरी पत्नी ने बड़ा भय और दुःख प्रकट किया। सब लोग मेरे पास भाग आये और मुझे फायर करने के लिये बाध्य करने लगे।

मैंने कहा, "इस समय फायर करने से कोई लाभ नहीं ? अगर मैं फायर करूँगा तो सर्प तुरन्त हम लोगों पर वार कर देगा। जब यह गधे को निगल लेगा तब तेज न दौड़ सकेगा। उस दशा में उसे मारना सरल हो जायगा।" लड़कों ने पूछा, "इतना बड़ा गधा यह साँप किस प्रकार निगल सकेगा ?" मैंने समझाया "अजगर के दाँत नहीं होते, इसीलिये वह शिकार को समूचा निगल जाता है। यह कोई असंभव बात नहीं है।"

जैक ने कहा, "यह गधा इसके मुँह में आ कैसे सकता है ?" अर्नेस्ट और जैक की बात पर फ्रिट्ज ने कहा, "गधे को अपने शरीर के फंदे में कस कर पीस देगा, और तब निगल लेगा। मेरी पत्नी ने फ्रैंक को लेकर गुफा की ओर चल पड़ी।" उसने कहा, "इतने छोटे बच्चे को इतना भयंकर दृश्य नहीं दिखाना है।"

गधा छटपटा कर छूटने का प्रयत्न करता रहा। परन्तु सर्प ने उसे और भी कस लिया। अंत में गधा मर कर बालू पर गिर पड़ा। फिर अजगर ने उस गधे के पिछले पैर पीछे की ओर सीधे कर दिये। और अगले पैर मुँह के साथ मिलाकर सीध में कर दिया। दीर्घ काय भयंकर अजगर ने पीछे की ओर से शिकार निगलना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे समस्त शरीर खा गया। केवल सिर निगलने में उसे कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ा। इस दृश्य को देखते-देखते प्रातःकाल सात बजे से लेकर दोपहर तक का समय समाप्त हो गया। मैं ध्यान से उसकी ओर देख रहा था। अवसर देखता था किसी प्रकार अजगर पर वार करने का समय मिले। अंत में समय आ गया। मैंने शीघ्र ही लड़कों को पुकारा। और अपनी बन्दूक लेकर आगे बढ़ा। अब अजगर अपनी रक्षा करने में असमर्थ है। फ्रिट्ज के साथ मैं आगे बढ़ गया। जैक दस कदम पीछे रहा। मेरी पत्नी और फ्रैंक घर पर ही बने रहे। गधे को निगलकर सर्प एक बड़े भारी लट्ठे की भाँति लेटा आराम कर रहा था। केवल उसकी चमकीली आँखें झलक रही थीं। मैं जब उस स्थान से अठारह या बीस कदम आगे बढ़ गया। मैंने और फ्रिट्ज ने साथ-साथ फायर किया। दोनों की गोलियाँ उसका सिर पार कर गईं। वह गति हीन हो गया। थोड़ी देर उसकी पूँछ इधर-उधर छटपटाती रही, फिर मैंने पिस्तौल से उसका काम तमाम कर दिया। तब तक जैक दौड़ता हुआ आया और उसने भी अपनी पिस्तौल से फायर किया। अकस्मात अजगर अपनी पूँछ से उसके चपेटा मार दिया। वह गिर पड़ा। कठिनाई से उठकर भागा। अंत में सर्प मृतप्राय होकर भूमि पर गिर पड़ा। हम लोगों की हर्ष ध्वनि से शिलायें गूँज उठीं। मेरी स्त्री ने पशुओं को छोड़ दिया, वे चरने लगे। अर्नेस्ट ने कहा, "हम लोगों को गधे का आभारी होना चाहिये। जिसने अपने प्राण देकर हम लोगों की रक्षा की।"

अर्नेस्ट ने पूछा "पिता जी! क्या सर्प गाना बहुत पसन्द करते हैं?"

मैंने कहा, "केवल गाना पसन्द ही नहीं करते, बल्कि संगीत से मुग्ध होकर, पूँछ के सहारे खड़े होकर नाचने भी लगते हैं।" आगे मैंने बतलाया कि "भारतवर्ष के सपेरे इस प्रकार से अपने जादू का प्रदर्शन करते हैं। साँप को पकड़कर उसके दाँत उखाड़ देते हैं। और तब पेटारी में रखकर लोगों को खेल दिखाते फिरते हैं।" फ्रिट्ज ने पूछा, "अगर किसी व्यक्ति को सर्प काट ले, तो उसे क्या करना चाहिये?"

मैंने कहा, "यदि छेड़ा न जाय तो साँप काटता नहीं। अगर काट खाये तो तुरन्त वह स्थान कसकर बाँध देना चाहिये और काटकर वहाँ का खून निकाल देना चाहिये।" फ्रिट्ज ने कहा, "पिताजी! यह कैसी दवा है कि वह स्थान ही काट दिया जाय?"

मैंने कहा, "अगर थोड़ी सी परेशानी से भी मृत्यु के मुह में न जाना पड़े तो क्या वह दवा नहीं है?"

फ्रैंक ने कहा, "यह बड़े खेद की बात है कि हमारे द्वीप में सर्प रहते हैं। हमारे देश स्वीट्जरलैण्ड में सर्प नहीं हैं।"

मैंने कहा, "क्या तुम यह रमणीक और उपजाऊ भूमि, हरे-हरे कुंज, अपने पाले हुए पशु, अपनी गुफा, अपना घर, तथा अपने खेत को छोड़कर उन भीड़-भाड़ वाली गलियों को फिर वापस जाना चाहते हो?"

मेरी स्त्री ने कहा, "मैं आपके अनुपस्थिति में फ्रैंक को लेकर घर पर न रुक सकूँगी। मैंने उसे धीरज बँधाया, और शान्त किया।"

———

अध्याय ३५

अधिक चिन्ता के पश्चात् मैं स्वयं कुछ मनोरंजन करना चाहता था। मेरे आदेश से लड़के भैंसे को ले आये। मैंने उसकी पूँछ में अजगर बाँध दिया। इसी प्रकार उसे घसीटते हुये गुफा की ओर चल पड़े। मैंने कहा, "अजगर का सिर ऊपर और पूँछ नीचे करके छत से लटका दो। फिर चाकू से गर्दन के चारों ओर काटकर चमड़ा नीचे की ओर खींच लो। थोड़े ही परिश्रम से खाल उतर आयी। नमक से साफ करके, तथा भुसके भर के उसे अजायब घर में रख लिया गया। यह अजगर मादा थी, मैंने सोचा यह संभव है कि इसके बच्चे कहीं और हों। मैंने बत्तखवाले दलदल के आस-पास, और नरकुल में, शिकारगृह के पड़ोस तथा बाँसोवाली खाड़ी के चारों तरफ बहुत ढूँढ़ा।"

अजगर अथवा उसके बच्चे तो कहीं मिले नहीं, पर इस खोज ढूँढ़ में एक गुफा मिली। उससे होकर एक सोता बहता था। इस गुफा की भीतरी छत मजबूत और चमकदार थी। मिट्टी बड़ी साफ और कोमल प्रतीत हो रही थी। मैंने अनुमान किया कि यह रेहू मिट्टी है। रूमाल में थोड़ी सी घर ले आया। मैंने बच्चों से कहा, तुम्हारी माँ यह साबुन देखकर बड़ी खुश होंगी।

अर्नेस्ट ने कहा, "क्या इससे साबुन तैयार हो सकता है?" मैंने बतलाया कि साबुन, सोडा, पोटाश तथा चर्बी मिलाकर तैयार किया जाता है। अगर हम रेहू जैसे केवल क्षारीय लवणों का ही प्रयोग करें तो जलने का भय रहता है। इस मिट्टी से भी कपड़े साफ किये जाते हैं।

——

अध्याय ३६

कई दिन घर पर ही भिन्न-भिन्न काम करते बीत गये। अब मौसम अच्छा था, इसलिए द्वीप के भिन्न-भिन्न भागों का निरीक्षण करने के लिये निकल पड़े। दो घंटे तक आगे बढ़ते रहने पर हम लोग बाँस की झाड़ियों के अंतिम सीमा पर पहुँच गये। वहाँ जाकर हमने चट्टान की तलेटी में अपना खीमा खड़ा कर दिया। और यह विचार करने लगे कि पशुओं से रक्षा के लिये एक झोपड़ी इस स्थान पर बना लें। सबसे पहले मैंने हानिकारी पशुओं को नाथने का विचार किया। मैंने देखा कि कुछ जंगली बिल्लियाँ इधर-उधर हम लोगों की आहट पाकर दौड़ भाग रही थीं।

धूप की अधिकता के कारण मैं कुछ अधिक कार्य न कर सका। शाम को मैंने दूसरे कार्यक्रम पर विचार किया। सबेरे ही उठकर तीन बड़े लड़कों को साथ में लेकर मैदान की ओर चल पड़ा। आगे बढ़कर देखा कि एक बजे नदी के तट पर हरियाली छाई हुई थी। पहाड़ी से नीचे उतर कर मैं मैदान की ओर बढ़ा। घास अत्यन्त गर्मी के कारण जल गई थी। आध घंटे बाद धूप से परेशान होकर जैक कहने लगा। 'यहाँ की घास आदि क्या हुई?' मैंने कहा, "निरन्तर सूर्य-ताप से सूख गई है वर्षा के समय सम्पूर्ण मैदान हरी-भरी घास से आच्छादित हो जाता है। परन्तु ज्योंही वर्षा समाप्त हो जाती है, मैदान के छोटे-छोटे पौधे और घास समाप्त होने लगते हैं।"

लड़कों में आपस में बातचीत शुरू हो गई। एक ने कहा यह भू-भाग झाबर जैसा है। किसी ने कहा, "यहाँ केवल जङ्गली और पिछड़ी हुई जातियाँ ही रह सकती हैं। क्योंकि यहाँ तो

केवल जहरीले पौधे ही दिखलाई पड़ते हैं।" मैंने कहा, "बच्चो! तुम समझते हो, कि कोई भी सुख बिना आपत्ति के नहीं मिल सकता। पहले कष्ट और फिर सुख प्राप्त होता है। इस मैदान के आगे हम सुन्दर हरी-भरी फलोंवाली पहाड़ी में पहुँच जायेंगे।"

लगभग दो घंटे की यात्रा के बाद हम लोग अभीष्ट स्थान पर पहुँच गये। धूप से परेशान थे और थक गये थे। अतः एक पहाड़ी की छाया में बैठकर श्रम दूर करने में लग गये। ऊपर चढ़ने का साहस न था। नीचे ही बैठकर दृश्य का आनन्द लेने लगे। पर्याप्त दूरी पर क्षितिज के पास ऊँचे-ऊँचे पहाड़ी के दृश्य जो दिखाई पड़ रहे थे। चश्मे बह रहे थे। फूल फूले हुए थे। एक नदी भी बह रही थी। और पहाड़ी पर कुहरा सा प्रतीत हो रहा था।

मैं कल्पना करने लगा कि शायद यह नील नदी है और सामने न्यूबिया का रेगिस्तान है। बन्दर (निप) कूदकर इधर-उधर फिरने लगा। कुत्तों ने भी उसका पीछा किया। थकावट अधिक होने के कारण मैंने एक गन्ना चूसा, साथ लाया हुआ थोड़ा खाना भी खाया इसलिये ताजगी आ गई। फ्रिट्ज ने चट्टान की ओर बढ़कर देखा, और बोला, "वह देखिये बहुत से घोड़े दौड़ते हुए चले आ रहे हैं। कदाचित् यह 'अरब' के घुड़सवार हैं।"

फ्रिट्ज ने दूरबीन लेकर देखा और कहने लगा, "कदाचित् यह अरब के बद्दू लोग हैं। अपने पशुओं पर सामान लादे हुए जा रहे हैं।"

मैंने ध्यान से देखा और कहा कि घुड़सवार नहीं ये शुतुर-मुर्ग हैं। इनमें से अगर हम लोग एक भी जीवित पकड़ सकें तो बड़ा अच्छा हो। फ्रिट्ज और जैक बन्दर तथा कुत्ते की खोज में लग गये। मैं पेड़ों की आड़ से शिकार को देखने लगा। झाड़ीदार एक चट्टान की चोटी पर कुछ वृक्ष खड़े थे। मैंने कहा यह

ईमू फोरबिया का पौधा है। इस पेड़ का रस बड़ा ही जहरीला होता है। और दवा के काम आता है। मैं पेड़ के तने में कुछ छेद कर दिये। अर्नेस्ट शुतुरमुर्ग की चाल देख रहा था। उसमें एक नर था और शेष चार मादा थीं। मैंने उसका पीछा करने का निश्चय किया।

मैंने कहा, "इनकी चाल तेज दौड़नेवाले घोड़े से भी कई गुनी होती है।" लड़कों ने पूछा, "फिर अरब के लोग इनको कैसे पकड़ पाते हैं?"

अरब के लोग घोड़े पर सवार होकर शुतुरमुर्ग का पीछा करते हैं। शुतुरमुर्ग की एक बड़ी विचित्र आदत होती है। वह अक्सर एक वृत्त··में ही दौड़ता है और जिस स्थान से चलता है उसी जगह फिर आकर टिकता है। इस प्रकार थकाकर शुतुरमुर्ग को गिरा दिया जाता है। थक कर गिर जाने पर शुतुरमुर्ग अपना सिर बालू में छिपा लेता है। और सोचता है कि अब इस समय उसको कोई नहीं देखता।

मैंने कहा, "हम लोग पैदल हैं अतः शुतुरमुर्ग का शिकार करने में कठिनाई होगी। पर ऐसा जान पड़ता है कि यहाँ के जानवर कुत्तों से बहुत डरते हैं। अतः कुत्तों की सहायता से उनपर अधिकार पाया जा सकता है।" हम दो सौ कदम चिड़ियों की ओर बढ़े। कुत्तों ने नर शुतुरमुर्ग पर आक्रमण किया। वे सब इतने तेज भगे कि कुत्तों ने उनका पीछा करने में अपने को असमर्थ पाया। फ्रिट्ज ने अपना 'शिकरा' छोड़ दिया। शिकरे ने उड़कर शुतुरमुर्ग पर वार किया। और उसकी गर्दन तथा कंधों को घायल कर दिया। तथा तुर्क और बिल की सहायता से उसको जमीन पर गिरा दिया। निकट से जाकर मैंने उसके पंख देखे। वे बड़े ही सुन्दर थे फ्रिट्ज ने कहा, "अब यह जीवित नहीं हो सकता। लगभग छः फिट ऊँचा है।"

जैक ने कहा, "ओ ! देखो कितना मोटा है। पता नहीं कि इस रेगिस्तान में यह खाता क्या है।" मैंने कहा, "यह पत्थर के टुकड़े, बालू और लोहे आदि सभी कुछ खा जाता है। इसके अतिरिक्त गिरगिट, साँप और अन्य कीड़ों को भी खाता है।" अर्नेस्ट ने कहा, "पिताजी ! क्या शुतुरमुर्ग बोलते भी हैं ?"

मैंने कहा, "यह बड़ी तीखी आवाज करते हैं। और कभी-कभी तो इनकी आवाज से शेर की दहाड़ का धोखा हो जाता है। अर्नेस्ट और जैक ने इसी वार्तालाप के बीच में शुतुरमुर्ग का एक घोंसला ढूँढ़ लिया। मैं जाकर देखा कि बालू के गढ़े में लगभग तीस अंडे रक्खे हुए थे।"

प्रत्येक अंडा लगभग छोटे बच्चों के सिर के बराबर था। दो-तीन अंडों को गीदड़ ने तोड़ दिया। उनसे निकलकर छोटे बच्चे बालू पर घूमने लगे। जैक ने कहा, "अंडों को घर क्यों न ले चलें" मैंने बतलाया "इनमें से प्रत्येक लगभग तीन पौण्ड वजन का है। कल गाड़ी लाकर इन्हें ले चलेंगे।"

लड़कों ने कहा, "दो-तीन लिये चलें" मैंने कहा, "परन्तु इतनी सावधानी से उठाओ कि शुतुरमुर्ग यह अनुमान न कर सके कि किसी ने उठाया है। नहीं तो यह सभी अंडे खराब हो जायेंगे। सभी लोगों ने दो-दो अंडे ले लिये।" मैंने कहा, "इस प्रकार सब शीघ्र ही थक जाओगे। एक डंडे के दोनों सिरों पर रूमाल से लटकाकर बहँगी की तरह ले चलो। एक-एक सब लोग इसी प्रकार से बनाकर नदी की ओर चल पड़े। रास्ते में ही एक मीठा जल का सुन्दर चश्मा दिखलाई पड़ा। यह किसी अज्ञात स्थान से बह रहा था। तालाब के चारों ओर अनेक भैंस, बारहसिंघे, जेबरा आदि इकट्ठे थे। वे पानी पीते थे और इधर-उधर दौड़ रहे थे। हम लोगों ने भी अपने पानी के बर्तन भर लिये और घर की ओर चल पड़े।"

अध्याय ३७

हम लोग स्थान-स्थान पर रुकते हुए बढ़ते चले जा रहे थे। आगे देखा एक बड़ी सुन्दर हरी-भरी घाटी थी। कुसुमित वृक्षों के वृन्द जहाँ-तहाँ खड़े हुए थे। कई भैंसे तथा बारहसिंघे तटपर घास चर रहे थे। ज्योंही इन पशुओं ने हमारे कुत्तों की ओर हमको देखा, सबके सब गायब हो गये। इसके बाद हमलोग उस पहाड़ी पर पहुँचे जहाँ पर जाते समय रुके थे। तबतक अर्नेस्ट कुत्ते को लेकर आगे जा रहा था। अकस्मात काँपता हुआ दौड़कर मुझसे लिपट गया, मुँह पीला पड़ गया था। उसके मुँह से 'रीछ-रीछ' की आवाज निकल रही थी। मैं बन्दूक ठीक करके आगे बढ़ा। यह रीछ लगभग पचास कदम पर था। तबतक एक अन्य रीछ भी गुफा से निकल आया। फ्रिट्ज ने एक फायर करके उनमें से एक को घायल कर दिया। तब वे दोनों पिछले पैरों पर खड़े होकर दौड़ते हुए हमारी ओर आने लगे। इन दोनों पशुओं ने हमारे कुत्तों को घायल कर दिया था। फिर भी वे खून से रँगे हुए वे उन रीछों से भिड़ रहे थे। हम और फ्रिट्ज दोनों साहस करके आगे बढ़ गये। मैंने रीछ के सिर पर गोली मारी फ्रिट्ज ने दूसरे रीछ पर दो फायर करके उसको जान से मार डाला। वे दोनों मरकर जमीन पर गिर पड़े। मैंने संतोष से लम्बी साँस ली और ईश्वर को हाथ जोड़कर धन्यवाद दिया।

जैक ने कहा, "पिताजी! इन रीछों की खाल छूने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये ठंडे देश के हैं। इस गर्म देश में इनके रहने का क्या कारण है?"

मैंने कहा, "मैं वास्तव में स्वयं नहीं कह सकता कि क्या ये हैं। मेरे विचार से यह योरोपियन और अमेरिकन रीछों से भिन्न हैं।"

मैं निकट से उसको देखा और कहा, "कि कदाचित् ये वही रीछ हैं जिन्हें कप्तान क्लार्क ने उत्तरी-पच्छिमी तटपर अमेरिका में देखा था। इनके दाँत बड़े-बड़े हैं। पंजे बड़े कठोर और खतरनाक हैं। बाल मुलायम और सुन्दर हैं।"

परन्तु मैंने कहा, "इनका अब क्या उपयोग किया जाय?" फ्रिट्ज ने कहा, "इनका चमड़ा उतार लेना चाहिये। बिछाने के काम आयेगा।" मैंने कहा, "आज अब घर पहुँचना है उसमें समय अधिक लगेगा। कल गाड़ी लेकर आयेंगे।"

घर पर सब ठीक-ठीक था, भोजन तैयार था। भोजन करते समय आज के शिकार के विषय में बात-चीत होती रही।

पत्नी ने पानी का बाँस वाला नल तैयार कर लिया था। और इस प्रकार से बड़ी सुविधा हो गई थी। चट्टान के नजदीक उसे कुछ सफेद मिट्टी मिल गयी थी। उसके कुछ बर्तन बहुत बढ़िया बने थे। शेष समय में उसके सब सामान पत्थर, और बाँस, एवं लकड़ियाँ एक स्थान से उठाकर एक ठीक स्थान पर रख दिये।

मैं सवेरे ही जग पड़ा। भैंसे और बैल को लेकर उस गुफा की ओर चल पड़ा, जहाँ रीछ पड़े हुये थे।

मैं फ्रिट्ज के साथ आगे बढ़ा और देखा एक बड़ी भारी चिड़िया गुफा पर मँडरा रही थी। उसका सिर बड़ा और चोंच लाल तथा नीचे की ओर टेढ़ी थी। पंख भूरे और काले थे। गर्दन पर बड़े-बड़े बाल थे।

फ्रिट्ज ने कहा, "अगर एक दिन देर करके आते तो रीछों का कोई भी भाग शेष न बचता। घर पर पहुँचकर मैंने गाड़ी खाली

कर दी। बाँस से बाँधकर मैं और फ्रिट्ज रीछ की खाल उतारने लगे। मेरी स्त्री ने और जैक ने आग जला दी।"

फ्रिट्ज ने कहा, "मैं इसके सिर के खाल का टोप बनाऊँगा जैसा कि सैन्ड विच के निवासी अक्सर करते हैं। और यह टोप कभी जंगली लोगों से मुकाबला करने पर काम आयेगा।"

अर्नेस्ट ने कहा, "प्राचीन जर्मनी लोगों की भाँति रीछ की खाल का जिरह-बख्तर बनाऊँगा।"

नाश्ता करने के बाद मैंने, अर्नेस्ट और फ्रिट्ज को शुतुरमुर्ग के अंडे उठा लाने के लिये भेज दिया। जिनको कि मैं बालू में ढँक आया था। मैंने अंडों को तोड़कर कटोरी आदि बनाने के फेर में पड़ गया।

मैंने कुछ सिरका लेकर एक नागा उसमें भिगो दिया। और नागे को कसकर अंडों पर खींचा बार-बार सिरका छोड़ते गये। अंडों के छिलके सफाई से कट गये।

— —

अध्याय ३८

पूरा दिन दोनों रीछों का माँस तैयार करने में लग गया। मैंने माँस के टुकड़ों को एक-एक इंच का काट डाला। और तेल तथा नमक लगाकर गर्म करके रख दिया। रीछों की चरबी इकट्ठा करके मैंने अपनी पत्नी को दे दिया। जो भोजन बनाने में बड़ी ही लाभदायक रहती है। लगभग एक सौ पचास पौंड गोश्त सुखाकर और मसाला लगाकर ठीक करके रख लिया। फिर बड़े-बड़े पीपों में भर कर रख दिया। शेष रीछ को एक खुले हुए भाग में छोड़ दिया बड़ी शिकारी चिड़िया और गीदड़ खा गये। मैंने कहा, "इसके शरीर के कुछ अंग अपने ऐतिहासिक मुर्दा अजायबघर में रख देंगे।"

शेष रीछ की खाल वगैरा को धोकर दो दिन तक धूप में सुखा लिया। ग्रीनलैण्ड के निवासी समुद्री कुत्तों के चमड़े को दाँत (पैने) तेज करने के लिये सुखाकर खाते हैं। उसके बाद मैंने उस चिड़िया को जिसको मैं ले आया था। उसका माँस भी सुखाकर ठीक कर लिया।

इस सब काम को करते-करते मुझे लगभग कई दिन लग गये। सभी लोग काफी थक गये थे। मैंने थकावट दूर करने के लिए सबको आराम लेने के लिये कह दिया।

मैंने लड़कों से कहा, कि 'सवाना' मैदान में जाकर टहल आवें। और शिकार आदि ढूँढ़ लेवें। तथा कुछ नई-नई खोजें कर आवें। अर्नेस्ट ने जाने से इनकार कर दिया। मैंने कहा, यह तो दिल बहलाव के लिये ही है। रुक सकते हैं। उसके विपरीत फ्रैंक ने जाने का आग्रह किया। मैंने उसको जाने से रोक न सका। जानवर

पास ही चर रहे थे। उनको पकड़कर वे तीनों व्यक्ति सवार होकर चल पड़े। नई-नई खोज के लिये सब उत्सुक हो रहे थे।

प्रारम्भिक जीवन में इधर-उधर घूम-घूमकर नये-नये अनुभव प्राप्त करना। तथा उत्साह के साथ नई-नई चीजों की खोज करना बहुत आवश्यक है।

अर्नेस्ट अंडों को काटने में लगा हुआ था। उसमें सिरका डाल-डालकर तागे की सहायता से काट डाला और अन्दर से अंडे का मुख्य भाग निकल आया। उसने कहा, अभी एक और खोल चढ़ा हुआ है। यह चाकू से ही काटा जा सकता है।

——

अध्याय ३६

थोड़े ही परिश्रम से अण्डा दो टुकड़ों में विभक्त हो गया और दो बढ़िया प्याले बन गये।

शाम को मेरी पत्नी भोजन तैयार करने में लग गई। मैं आग जलाकर लड़कों के वापस आने की प्रतीक्षा करने लगा।

दूसरे दिन मैं वह गुफा देखने गया जहाँ से मैं गीध पकड़ लाया था। अर्नेस्ट ने कहा, "इसमें तो आवश्यकता पड़ने पर रहा जा सकता है।" मैंने कहा, "पहले यहाँ के खतरे दूर कर देना चाहिये।"

अर्नेस्ट ने कहा, "इस गुफा के चारों ओर घने-घने वृक्ष लगा देंगे। जिसको पार करके कोई भी नहीं आ सकेगा और स्वयं अपने आप के लिये सीढ़ी लगा लेंगे।"

यह सब बातें हो रही थीं। इतने में शिकारी लड़के वापस आ गये। जो खुशी के साथ बातें करते चले आ रहे थे।

सवारियों से उतर कर वे लोग हम लोगों की ओर चल पड़े। फ्रैंक के पास कई नवजात बकरी के बच्चे थे।

फ्रिट्ज ने दो खरगोश पकड़े और एक छत्ते से बहुत-सा शहद ले आया था।

जैक का चेहरा कुछ उदास सा था। कारण पूछने पर फ्रैंक ने बतलाया, "आपसे विदा होकर मैं हरी घाटी की ओर चल पड़ा। उसे पार करके पहाड़ी पर से देखा तो थोड़ी दूर पर बकरों का झुण्ड दिखलाई पड़ा। मैं उन्हें हाँक कर अपने घर की ओर ले आना चाहता था। इस कार्य के लिये मैंने कुत्तों को ललकारा।"

एक तरफ 'फ्रैंक' रहा और दूसरी तरफ 'जैक' को लगा दिया मैं ओनेग्रा पर बैठकर हाँकने लगा। कुछ भाग खड़े हुये पर ये बच्चे हमारे हाथ लगे।

मैंने पूछा, "यह खरगोश कैसे पा गये ? यह तो बड़ा तेज भागने वाला जानवर है।" उसने कहा, "इसे बड़े परिश्रम से पकड़ा है। यह शार्क द्वीप पर बड़ी आसानी से रह सकता है। यहाँ इन्हें थोड़ा चारा देना पड़ेगा इनकी खाल से बड़ा अच्छा हैट तैयार होगा।"

मैंने कहा, "तुमने इसको पकड़ा किस प्रकार ?" फ्रिट्ज ने कहा, "जब मैं वापस आ रहा था रास्ते में इन खरगोशों का समूह कूद रहा था। यह सब हमारी आहट पाते ही भाग पड़े। शिकरे ने झटपट उन्हें रोक लिया। और एक को चीड़-फाड़कर खाने लगा। मैंने दोनों हाथों से दो उठा लिया।"

मैंने जैक से पूछा, "यह किस जानवर के बच्चे हैं और तुमने इन्हें किस प्रकार पकड़ा ?"

जैक बोला, "मैंने अपनी सवारी तेजी से बढ़ायी तब तक कुत्तों ने भी मदद की। परन्तु दो बच्चे पकड़ लिये।"

मैंने कहा, "मेरे विचार से तो यह दोनों बारहसिंघों के बच्चे हैं।"

फ्रिट्ज बोला, "चुपचाप वापस आ रहा था कि इतने में देखा एक अजीब चिड़िया बैठी थी मैं उसको पकड़ना चाहता था। परन्तु वह उड़ गई। मेरे विचार से वह मधु पक्षी था बिल्कुल मोर जैसा दिखाई पड़ता था। आगे चढ़कर मैंने देखा कि वह चिड़िया एक डाल पर बैठी हुई शहद खा रही थी। चारो तरफ मधु-मक्खियाँ उड़ रही थीं। फ्रैंक बहुत डर गया क्योंकि एक बार शिकारगृह में मधुमक्खियाँ सता चुकी थीं।"

अध्याय ३६

थोड़े ही परिश्रम से अण्डा दो टुकड़ों में विभक्त हो गया और दो बढ़िया प्याले बन गये।

शाम को मेरी पत्नी भोजन तैयार करने में लग गई। मैं आग जलाकर लड़कों के वापस आने की प्रतीक्षा करने लगा।

दूसरे दिन मैं वह गुफा देखने गया जहाँ से मैं गीध पकड़ लाया था। अर्नेस्ट ने कहा, "इसमें तो आवश्यकता पड़ने पर रहा जा सकता है।" मैंने कहा, "पहले यहाँ के खतरे दूर कर देना चाहिये।"

अर्नेस्ट ने कहा, "इस गुफा के चारों ओर घने-घने वृक्ष लगा देंगे। जिसको पार करके कोई भी नहीं आ सकेगा और स्वयं अपने आप के लिये सीढ़ी लगा लेंगे।"

यह सब बातें हो रही थीं। इतने में शिकारी लड़के वापस आ गये। जो खुशी के साथ बातें करते चले आ रहे थे।

सवारियों से उतर कर वे लोग हम लोगों की ओर चल पड़े। फ्रैंक के पास कई नवजात बकरी के बच्चे थे।

फ्रिट्ज ने दो खरगोश पकड़े और एक छत्ते से बहुत-सा शहद ले आया था।

जैक का चेहरा कुछ उदास सा था। कारण पूछने पर फ्रैंक ने बतलाया, "आपसे विदा होकर मैं हरी घाटी की ओर चल पड़ा। उसे पार करके पहाड़ी पर से देखा तो थोड़ी दूर पर बकरों का झुण्ड दिखलाई पड़ा। मैं उन्हें हाँक कर अपने घर की ओर ले आना चाहता था। इस कार्य के लिये मैंने कुत्तों को ललकारा।"

एक तरफ 'फ्रैंक' रहा और दूसरी तरफ 'जैक' को लगा दिया मैं ओनेग्रा पर बैठकर हाँकने लगा। कुछ भाग खड़े हुये पर ये बच्चे हमारे हाथ लगे।

मैंने पूछा, "यह खरगोश कैसे पा गये ? यह तो बड़ा तेज भागने वाला जानवर है।" उसने कहा, "इसे बड़े परिश्रम से पकड़ा है। यह शार्क द्वीप पर बड़ी आसानी से रह सकता है। यहाँ इन्हें थोड़ा चारा देना पड़ेगा इनकी खाल से बड़ा अच्छा हैट तैयार होगा।"

मैंने कहा, "तुमने इसको पकड़ा किस प्रकार ?" फ्रिट्ज ने कहा, "जब मैं वापस आ रहा था रास्ते में इन खरगोशों का समूह कूद रहा था। यह सब हमारी आहट पाते ही भाग पड़े। शिकरे ने झटपट उन्हें रोक लिया। और एक को चीड़-फाड़कर खाने लगा। मैंने दोनों हाथों से दो उठा लिया।"

मैंने जैक से पूछा, "यह किस जानवर के बच्चे हैं और तुमने इन्हें किस प्रकार पकड़ा ?"

जैक बोला, "मैंने अपनी सवारी तेजी से बढ़ायी तब तक कुत्तों ने भी मदद की। परन्तु दो बच्चे पकड़ लिये।"

मैंने कहा, "मेरे विचार से तो यह दोनों बारहसिंघों के बच्चे हैं।"

फ्रिट्ज बोला, "चुपचाप वापस आ रहा था कि इतने में देखा एक अजीब चिड़िया बैठी थी मैं उसको पकड़ना चाहता था। परन्तु वह उड़ गई। मेरे विचार से वह मधु पक्षी था बिल्कुल मोर जैसा दिखाई पड़ता था। आगे चढ़कर मैंने देखा कि वह चिड़िया एक डाल पर बैठी हुई शहद खा रही थी। चारो तरफ मधु-मक्खियाँ उड़ रही थीं। फ्रैंक बहुत डर गया क्योंकि एक बार शिकारगृह में मधुमक्खियाँ सता चुकी थीं।"

फ्रिट्ज ने कहा, "धुआँ करने से ये सब भाग जायेंगी।" मैं इस प्रबन्ध में लगा ही था कि सहस्रों मधुमक्खियों ने गड्ढे से निकलकर हमारे ऊपर वार कर दिया। मेरे माथे, आँखों, नाक तथा मुँह पर सब कहीं काट खाया फिर भी मैंने धुआँ करके उन्हें भगा दिया। और ये छत्ते निकाल लाया।

मैंने कहा, "जाओ! अपनी माँ से कहो कि वे कोई ठंढा मरहम लगा दें।"

मैंने बारहसिंघे के बच्चों को टोकरी में लिटा दिया और एक पेड़ की शाखा से बाँध दिया। ताकि खतरा न उन पर आ सके।

शाम हो गयी। ईश्वर-वंदना के बाद हम लोग अपने-अपने आसन पर सोने लगे।

अध्याय ४०

दूसरे दिन मैं हरी घाटी की ओर चल पड़ा। वहाँ से रीछ वाली चट्टान के अड़ोस-पड़ोस के क्षेत्र का भी निरीक्षण किया। साथ में लड़के भी थे। उस क्षेत्र में एक प्रकार का गोंद बहुतायत से दिखाई पड़ा। मैंने उसे इकट्ठा करने का आदेश दिया।

मैंने फ्रिट्ज को बतलाया, "यह बहुत जहरीली चीज है। उत्तमाशा अंतरीप के मूल निवासी जंगली पशुओं को मारने के लिये इसका प्रयोग करते हैं।"

वहाँ के 'हाटेनटाट' लोग तालाब में जहरीला गोंद डाल देते हैं। और जब शेर, रीछ और चीते आदि भयंकर जानवर उसे पीते हैं तो वे मर जाते हैं।

अर्नेस्ट ने पूछा, "पिताजी! यह जहरीली चीज आप क्या करेंगे ?"

मैंने कहा, "जब बन्दर हमारे खेतों को नुकसान पहुँचावेंगे तो उनको खिलाकर समाप्त कर देंगे। उसी देश में एक बड़ी खतरनाक बीमारी पैदा करने वाली मक्खी होती है जिसके पंख बिल्कुल हरे होते हैं। उसको समाप्त करने के लिये भी इसे छोड़ देंगे। इस प्रकार से बहुत सी दवाइयों के स्थान पर काम में आ जायेगी।"

कुछ बाँध इकट्ठे करके हम शुतुरमुर्ग के घोंसले की ओर बढ़ चले। लड़के आगे जा चुके थे चिड़ियाँ हाँक कर हमारी तरफ ले आये। फ्रिट्ज अबकी बार दो एक शुतुरमुर्ग जीवित ही पकड़ना चाहता था।

तब तक शुतुरमुर्ग हम लोगों की ओर आते दिखाई पड़े।

मैंने अंदाजा लगाया कि उनमें से एक नर था जो दूसरे की

अपेक्षा बड़ा और सुन्दर था। मैंने अपना फंदा फेंका परन्तु वह पैरों में पड़ने के बजाय शरीर पर ही पड़ा उसके पंख बँध गये। मादा चिड़ियाँ भाग गईं। मैं नर पकड़ना चाहता था।

तब तक फ्रिट्ज ने अपना शिकरा छोड़ दिया। कुछ देर तो वह शुतुरमुर्ग पर मँडराता रहा। और अन्त में उसने उस पर पंजे और चोंच द्वारा चोट की। शुतुरमुर्ग पृथ्वी पर गिर पड़ा।

शुतुरमुर्ग के पास जाते सभी डरते थे मैं चाहता था कि बिना घायल किये ही उसे पकड़ लिया जावे। चुपके-चुपके जाकर मैंने अपना रूमाल उसकी आँखों पर डाल दिया। तथा पैरों में ऐसा फंदा डाल दिया कि वह केवल चल सकता था तेज भाग न सकता था।

फ्रिट्ज ने कहा, "पिता जी! क्या हम इस चिड़िया को पाल सकेंगे।"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज! क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है कि भारतवासी इससे भी बड़े हाथी को पाल लेते हैं।"

फ्रिट्ज ने कहा, "हाँ ठीक है मैंने पढ़ा है कि वे एक जंगली हाथी दो सीखे हुये हाथियों के बीच फाँस लेते हैं और तब उसे पालतू बना लेते हैं।"

मैंने शुतुरमुर्ग के पैर बैल और भैंसे के सींगों में बाँध दिया पंख रस्सी में बाँध दिये। लड़के अपनी-अपनी सवारियों पर बैठ गये फिर शुतुरमुर्ग की आँखों पर की पट्टी हटा दी। पहले तो उसने भागने की कोशिश की। जब सफलता न मिली तो हताश होकर भूमि पर गिर पड़ा। जैक के कोड़े से फिर उठ बैठा। उसके बाद उसे ले चलने में विशेष कठिनाई न हुई।

वहाँ से आकर मैंने झटपट लड़कों का साथ किया और बिना हरी घाटी में रुके हुये मैं रीछों वाली गुफा के पास आ गया।

हम लोगों को वापस आते देखकर जो आश्चर्य उसकी माँ और अर्नेस्ट को हुआ वह कहा नहीं जा सकता।

वे दोनों बहुत प्रसन्न हो रहे थे। अर्नेस्ट ने कहा, "पिताजी! जब आप कोई बड़ा काम करते हैं तो मुझे साथ नहीं ले जाते।"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज और जैक इन कामों में तुमसे आगे हैं परन्तु दूसरी तरफ मानसिक कार्यों में तुम उनसे आगे हो।"

दूसरे दिन प्रातःकाल हमने घर लौटने का निश्चय किया थोड़ा सा साधारण नाश्ता करके चल पड़े। शुतुरमुर्ग दोनों पशुओं के बीच बाँध दिया। गाड़ी पर सब सामान लाद दिया। उसी पर मेरी पत्नी भी बैठ गई।

बड़ी देर में और बहुत थक कर हम घर तक पहुँच सके। वहाँ हल्का सा भोजन किया। शुतुरमुर्ग सुरक्षित स्थान पर बाँध दिया और सामान ठीक प्रकार से रख दिया। शीघ्र ही बिस्तर पर जाकर लेट गये।

सुबह देखा कि अंडे फूट गये थे छोटे-छोटे बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे थे। मैंने उनको तुर्की चिड़ियों वाली पेटारी में बंद कर दिया।

——

अध्याय ४१

शीघ्र ही मैं 'फेल्शीन' पहुँच गया। पत्नी ने चटपट खिड़कियाँ खोलकर कमरा साफकर दिया। सबसे पहले मैंने शुतुरमुर्ग को बाँध दिया। आगे चलकर धीरे-धीरे वह पालतू हो गया।

शुतुरमुर्ग के पाँच अंडे जीवित रहने योग्य थे। उन्हें रुई में लपेट कर रख दिया। इसके बाद अंशोरा खरगोश शार्क द्वीप में पहुँचा दिये वे इधर-उधर कूदने लगे। थोड़े ही दिनों में उनका वंश बढ़ा और वे द्वीप के पक्के निवासी बन गये।

बारहसिंघों को भी मैंने उसी द्वीप में छोड़ दिया। इन्हें कुत्तों ने कुछ घायल कर दिया था। बीच द्वीप में मैंने उनके लिये एक सुरक्षित स्थान बना लिया। उनके चरने के लिये तो वह उपयुक्त स्थान था ही।

जो कछुये मैं वहाँ से ले आया था उनमें से केवल दो जीवित रहे। मैंने उन्हें बतखोंवाले दलदल में छोड़ दिया।

मेरी पत्नी ने तुर्की चिड़ियों का भार अपने ऊपर ले लिया और उन्हें घर के निकट ही एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया जिसमें बन्दर और सियार उन्हें तङ्ग न कर सकें।

वृक्ष निकट ही रोप दिये गये तथा एक कागज 'जहरीला' लिखकर उन पर चिपका दिया जिसमें बच्चे उसका प्रयोग न करें।

इन सभी कामों में मुझे दो दिन लग गये। अन्त में मैंने खेत में बीज बोये। यह बड़े परिश्रम का काम था इसलिये सभी लोगों को इसमें जुटा दिया। मेरा लगभग एक एकड़ खेत कृषि के योग्य था। उसके तीन भाग कर लिये और मक्का तथा जौ बो

दिया। अन्य बीजों को मैंने जहाँ-तहाँ बो दिया। गीदड़ नदी के पार भी मैंने भिन्न-भिन्न बीज बो दिये।

शुतुरमुर्ग को मैंने लम्बी रस्सी से बाँध दिया और एक कटोरे में कुछ चावल, जौ, मक्का और अन्य वस्तुयें रख दीं। मैं जानता था कि इन्हें शुतुरमुर्ग शौक से खाता है। उसी स्थान पर मैंने कुछ पत्थर के टुकड़े भी डाल दिये। कहते हैं कि यह पक्षी हाजमें के लिये पत्थर खाता है।

पहले अनाज के दाने खाने में वह परहेज करता था। परन्तु अन्त में बड़े शौक से खाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे पालतू बन गया। धीरे-धीरे मैंने उस पर बोझ लादना शुरू कर दिया। कुछ दिनों में वह हिल गया और आज्ञाओं का भी पालन करने लगा।

उसे चलना, उठना, बैठना, तेज भागना सिखला दिये गये कभी-कभी वह अड़ियल हो जाता था। मैं तब उसके मुँह पर रूमाल डाल देता था थोड़े से तम्बाकू के धुयें से तुरन्त वह फिर रास्ते पर आ जाता था।

सारांश यह है कि लगभग एक मास के परिश्रम से चिड़ियाँ बिल्कुल ठीक रास्ते पर आ गई। उसकी आँखों पर मैंने एक ऐसा आवरण लगा दिया कि आवश्यकता पड़ने पर दोनों अथवा एक बन्द की जा सकती थी। जब एक खुली हो तो दुलकी चलता और दोनों बन्द होने पर तुरन्त ही रुक जाता। अभी तक उसको बोझ ढोने योग्य ही बना पाये थे। मैंने उस पर सवारी करने के अभिप्राय से एक काठी तैयार कर ली। धीरे-धीरे सवारी का काम भी देने लगा और हमारे सभी सवारी वाले पशुओं से यह 'फैन्शीन हाउस' से 'शिकरा-गृह' तक तिगुना तेज जाता था।

अन्त में प्रश्न हुआ कि वास्तव में इस पक्षी का अधिकारी कौन है सभी युवक आपस में झगड़ने लगे। अन्त में मैंने उस चिड़िया का अधिकारी 'जैक' और 'फ्रैंक' को ठहराया।

रीछ का चमड़ा तैयार करने में मुझे काफी समय लग गया। मैंने टोपियाँ तैयार कर लीं। क्योंकि मैं जानता था कि कभी इस खुले हुये भाग में हवा भर जायेगी तो नाव उलट जाने से वे लोग बड़े भारी खतरे में पड़ सकते थे।

इन सभी कार्यों में वर्षा ऋृतु सरलता से व्यतीत हो गयी। जब आकाश स्वच्छ हुआ। मैंने फ्रिट्ज को एक जैकेट पहनाकर समुद्र में तैरने का अभ्यास करने का आदेश दिया। वह जल में उतर पड़ा तैरने की ओर उसका स्वाभाविक झुकाव न था। तट पर आने पर मैंने उसकी पीठ ठोंकी।

वर्षा ऋृतु समाप्त हो जाने पर मैं अपने बारहसिंघे देखने गया। वे बड़े प्रसन्न घूम रहे थे। मैंने उनके चारे का उचित प्रबन्ध कर दिया।

तट के चारों ओर टहल कर मैं समुद्री मूँगे और सीपें तलाश करने लगा। जो मिले उन्हें नाव पर रख लिया। आसानी से मैं खाड़ी में पहुँच गया। वहाँ उतर कर सब सामान पत्नी को सौंप दिया। मैंने सीप और मूँगे अपने अजायबघर में रख लिये। एक दिन जब हम लोग धूप में काम करके शिकरागृह से वापस आ रहे थे तो मेरी पत्नी ने मुझे एक सुन्दर टोकरी दिखाई

मैंने उस टोकरी के निर्माण की विधि पूछी तो उसने बतलाया। जब मैं शार्क द्वीप से वापस आ रही थी मैंने कुछ समुद्र-तट पर नरकुल काट लिये थे। ये उसी के बने हुये हैं। मैंने कहा, "यह कला तुमने कहाँ से सीखी?"

उसने उत्तर दिया, "तुम पुरुष लोग यह सोचते हो कि स्त्रियाँ केवल पुरुष के संकेत से ही कार्य करती हैं। ऐसा नहीं है। पुरुष बहुत सी बातें पढ़कर और अभ्यास करके सीखता है पर स्त्री केवल उनको एक बार ध्यान से देखने मात्र से ही तैयार कर सकती है। जाली-

दार टोकरी बनाने की यह कला मैंने कैपटाउन में सीखी थी।"
मैंने उन सभी शार्क द्वीप के लोगों का हाल बताया।

मैंने रबर लगाकर बरसाती हैट बना दिये ताकि उससे होकर भी न प्रवेश कर सके।

सबसे पहली टोपी मैंने फ्रैंक को दी उसको बड़ी ठीक जँची पर उसको देखकर सभी हँसने लगे।

——

अध्याय ४२

मैं कुछ पहिये टूटे जहाज से ले आया था। उन्हें लगाकर मैं एक ऐसी गाड़ी बनाना चाहता था जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर सुगमता के साथ ले जाई जा सके।

बाद को चिकनी मिट्टी में पत्थर का कुछ चूर्ण मिलाकर बहुत से बर्तन बनाये गये। आग में पकने पर बड़े उपयोगी सिद्ध हुये।

वर्षाऋतु का मध्यकाल आ चुका था। शुतुरमुर्ग के प्रशिक्षण में ही काफी समय व्यतीत हो चुका था। लड़के बड़े आलसी हो गये थे। वे बिना किसी सवारी के चलते ही न थे। उनकी यह बुरी आदत छुड़ाने के लिये मैंने नई-नई योजनायें बनाईं।

फ्रिट्ज ने एक किश्ती तैयार करने का अनुष्ठान किया। मैंने पहले की भाँति इसमें भी सहायता देने का निश्चय किया। यह नाव ग्रीनलैण्ड जैसी नाव बनाने का तय हुआ। मेरे द्वारा सामान ढोकर शेष वर्षा के दिनों में यही काम करना निश्चय हुआ। सबसे नीचे दो ह्वेल मछलियों की हड्डियाँ लगा दीं। लोहे की हमारे पास कमी न थी। पूरी नाव के तीन भाग कर दिये गये। प्रत्येक भाग कीलों से जड़कर ठीक कर लिया गया। बैठने की सीटें भी लग गयीं।

नाव के तैयार हो जाने पर मैंने अपनी पत्नी से तैरने के जैकेट तैयार करने के लिये कहा, "बिना इस तैरनेवाली पोशाक के मैं बालकों को नाव लेकर समुद्र में जाने की आज्ञा नहीं दे सकता था।"

द्वीप पर छोड़े हुये खरगोश बड़े मजे में थे। मैंने उनको पकड़ना चाहा। परन्तु बड़ी ही जल्दी वे इधर-उधर से भागकर अपने

बिलों में छिप गये। मैंने उनके रहने का और समुचित प्रबन्ध करने का निश्चय किया। इस काम में भी चार दिन लग गये।

मैंने देखा कि खरगोशों ने नारियल के पौधे खा जाते थे और छोटे-छोटे पेड़ों की छाल खाकर भी बड़ा भारी नुकसान कर डाला था। मैंने और नये-नये पौधे लगाये और चारों तरफ से रूँध दिया जिससे खरगोश उन्हें न पा सकें।

उसी बीच में अर्नेस्ट अपने पुस्तकालय में अध्ययन में लगा हुआ था। जैक गाड़ी, शुतुरमुर्ग और कुत्ते लेकर जैकाल नदी पार कर जंगल में काम कर रहा था।

मैंने खेतों में नजदीक से जाकर देखा। जहाँ-तहाँ क्यारियाँ नष्ट की पड़ी हुई थीं और जो पैरों के निशान बने हुये थे उनसे ऐसा पता लगता था कि यहाँ सूअर आये थे। मैं उन्हीं पैरों के निशानों के सहारे आगे बढ़ा। शिकारागृह के पास पहुँचा वहाँ के खेत का भी यही हाल था।

आगे बढ़कर देखा तो कुत्ते झाड़ी की ओर गुर्रा रहे थे मैंने देखा कि वही हमारी बूढ़ी सूअरी यह कृत्य करके झाड़ी में छिपी तो नहीं बैठी है। मैंने गोली मारी। दो फायरें करके लगभग तीन बच्चे और एक सूअर मार डाली। कुछ भग गये। मैं कुत्तों के साथ कुछ नये पौधे लेकर शीघ्र ही अपने निवास-स्थान पर वापस आ गया।

———

अध्याय ४३

घर पर थोड़ी देर आराम करता रहा। बड़ी देर तक करने के बाद शाम को लड़के लौटे। सबसे पहले शुतुरमुर्ग पर सवार होकर जैक आ पहुँचा। फिर उसके बाद धीरे-धीरे फ्रिट्ज और अर्नेस्ट भी आ गये।

वे लोग शिकार में एक कंगारू और दो जानवर लाये थे।

जैक ने कहा, "पिता जी ! शुतुरमुर्ग बड़ी तेजी से दौड़ता है कभी-कभी तो मैं बहुत डर जाता हूँ। तमाम बालू मेरी आँखों में भर गई। आप एक चश्मा तैयार कर दीजिये। जो मैं ऐसे अवसर पर लगा लिया करूँ।"

मैंने कहा, "नहीं जैक। देखो माता-पिता से बात करते समय इस प्रकार आज्ञा नहीं देनी चाहिये। यही तुम्हारी भूल है। इसके अतिरिक्त तुमको यह सब काम स्वयं करना चाहिये। ताकि तुम आलसी न हो जाओ।"

फ्रिट्ज ने कहा, "मैंने आज दिन जंगली जीवन व्यतीत किया है। जड़ी-बूटी खाकर दिन काटा।"

मैंने कहा, "बच्चो ! तुम बड़ी भूल करते हो। सवार सबसे पहले अपनी सवारी की चिन्ता करता है और फिर बाद को अपनी।" -

मेरी पत्नी ने सबके लिये मेज पर भोजन की थालियाँ लगा दीं। हम लोगों ने आनन्द के साथ भोजन किया।

मैंने भोजन के बाद वह सामग्री देखी जो लड़के ले आये थे।

लड़कों ने कहा, "यह चमड़ा माँस से किस प्रकार पृथक् हो गया।"

मैंने पेड़ का एक खंड जमीन में सीधा गाड़कर, उसके ऊपरी भाग का खोखला काट लिया और उसे गहरा करके गोल बना लिया। लकड़ी का एक मूसल भी तैयार कर लिया। इस प्रकार मूसल और ओखली के सहायता से चावल, धान कूटकर तैयार करना संभव हो गया। मेरी पत्नी धान कूटकर चावल तैयार करना शुरू किया। यद्यपि यह कार्य धीरे-धीरे होता था।

मैं खेत पर गया। वहाँ देखा, कि शुतुरमुर्ग के बच्चे इधर-उधर घूम रहे थे। फसल तैयार हो रही थी। उसे बोये हुए केवल पाँच महीने ही हुए थे। इस प्रकार मैंने गणना कर ली कि साल भर में आसानी से दो फसलें तैयार कर ली जाती हैं। अन्त में मैं फसल काटने के उद्यम में लग गया। परन्तु मेरी स्त्री आलू जल्दी ही खोद लेना चाहती थी। मैंने कहा, "आलू की इतनी जल्दी नहीं है। वह बाद में भी खोदा जा सकता है। स्विट्जरलैण्ड की भाँति यहाँ का आलू उतनी गहराई पर नहीं होता। परन्तु फसल समय पर न काटने से झड़कर बड़ी हानि हो जायगी।" मैंने कहा मैं इसको काटकर इटली की विधि से साफ कर लूँगा। वही तरीका अनजान है।

घर के सामने का मैदान साफ कर तथा पानी छिड़ककर सम-तल और कड़ा कर लिया। ताकि उस पर फसलें सुखाई जा सकें और उस पर मड़ाई की जा सके।

हम लोगों ने अपने-अपने हँसिया हाथ में लिये और जानवरों को लेकर खेत की ओर चल दिये। फसल काट-काटकर मैंने बोझ बाँध दिये। फिर बतलाया कि इटली की विधि से मैं इसको तैयार कर लूँगा।

जानवरों पर लाद-लादकर सामान और फसलें लेकर घर आये। लड़कों ने जानवरों पर सवारी करके उसके ऊपर वृत्ताकार भाग से माड़ना शुरूकर दिया। मैं और मेरी पत्नी कुचली हुई फसल को

एक लकड़ी से उभारते जाते थे। जानवर मुँह भर-भरकर खाते भी जाते थे।

हफ्ते बाद हमने दाना और भूसा अलग कर लिया। फिर हवा में भर-भरकर छोड़ दिया। भूसा उड़ गया और साफ-साफ दाने भूमि पर गिर गये। लड़कों के बिन्नों पर और आँखों पर तमाम धूल और भूसा आ गया था।

सभी निवास-स्थान के पशु दाने की ओर तेजी से दौड़ पड़े। और खाने लगे। लड़के उनको अलग करने लगे। मैंने कहा, "नहीं, इन लोगों का भी इसमें कुछ भाग है।"

भविष्य में मैंने अधिक अनाज उत्पन्न करने के लिये निश्चय कर लिया। मैंने सोचा कि अन्य फसलों की अपेक्षा मक्का को भिन्न तरीके से तैयार करना पड़ेगा।

मक्का के मुँहों को डंडों से पीट-पीटकर तैयार कर लिया। इन सब क्रिया-कलाओं के बाद मैंने सोचा अगर फसल तैयार करने की चाह है तो खेत खोद जोतकर तैयार करना पड़ेगा।

मैंने भूसे को चारा के स्थान पर प्रयोग किया। और सभी पशुओं को क्रम से बाँट दिया। मक्का की पत्तियाँ पायल के रूप में बिछाने के काम में ले आये।

अबकी बार हमने इतनी प्रकार की फसल बोने का विचार किया जो वर्षा प्रारम्भ होने के पूर्व ही तैयार हो जावे। अतः राई, जौ आदि खेतों में बो दिया।

फ्रिट्ज ने नाव पर चढ़कर यात्रा करने का अनुष्ठान किया। और वह तैराक के कपड़े पहनकर चल पड़ा। कमर में नाविकों के तैरनेवाले कोट कसकर बाँध लिया। फिर नाव लेकर चल पड़ा।

उसकी माँ इस यात्रा से भयभीत थी। क्योंकि वह समझती थी कि यह खतरे से खाली नहीं है। मैं निश्चिन्त था क्योंकि मैं

समझता था कि यह लड़का तैरने में बड़ा दक्ष है। अतः इसके लिये कोई खतरा नहीं हो सकता।

नाव तेजी से आगे बढ़ी। उसकी माँ डर से चीख पड़ी। फ्रिट्ज बड़ी खुशी से नाव को एक ग्रीनलैण्ड के शिकारी की भाँति लेकर चल दिया। गीदड़ी नदी के मुहाने पर पहुँचकर वह धार में पड़कर खाड़ी से आगे बढ़कर समुद्र में पहुँच गया।

जब शीघ्र ही फ्रिट्ज दृष्टि से ओझल हो गया हमने और अर्नेस्ट ने दूसरी नाव पर सवार होकर यात्रा करने की ठानी। और बड़ी तेजी से नाव खेकर मूँगों की चट्टान के पास पहुँच गया।

वहीं जहाँ पर हम लोगों का पुराना जहाज टकराकर टूट गया था। बड़े जोर की गर्जना के साथ समुद्र की लहरें टकरा रही थीं। परन्तु फ्रिट्ज मुझे न दिखाई पड़ा। तब तक कुछ दूरी पर धुआँ दिखलाई पड़ा और एक पिस्तौल की आवाज कान में गूँज गई।

मेरी नाव पर के बच्चे चिल्ला पड़े। "कहाँ, कहाँ!" फिर मैंने भी एक आवाज की उसके उत्तर में उधर से फिर आवाज आई। मैं शीघ्र ही सन्तोष की साँस लेकर उस ओर चल पड़ा। दस मिनट में मैं उसके पास पहुँच गया। मैंने देखा कि उसने एक बड़ी भारी मार्स मछली मार डाली थी। उसने कहा, "मैं गीदड़ी नदी के बहाव में पड़कर तेजी से इधर आ पहुँचा।"

रास्ते में मुझे बाल रस का समूह मिला। मैंने उनमें से एक को बर्छी से घायल कर दिया। मैंने कहा, "फ्रिट्ज! तुमने बड़ी बहादुरी का काम किया। मार्स इतनी खतरनाक होती है कि जब यह घायल हो जाती है तो पलट कर शिकारी की या उसकी नाव को नष्ट कर देने की कोशिश करती है। यह लगभग पन्द्रह फीट लम्बी थी। यद्यपि यह डील-डौल में बहुत बड़ी नहीं है।"

इसका घर तक ले आना बड़ा ही कठिन प्रतीत हो रहा था। अतः हम लोगों ने उसका सिर काट कर लाने का निश्चय किया।

परन्तु मैंने कहा, फ्रिट्ज ! जरा जल्दी करो, क्योंकि बादल घिर रहे हैं। तूफान आ जाने का भय है।"

अर्नेस्ट ने कहा, "क्या यह मछली उत्तरी सागर में नहीं पाई जाती है ? इतनी दूर दक्खिन में यह कैसे आ गई। मैंने कहा, "बाल रस उत्तरी सागर में ही पाये जाते हैं। यहाँ से किसी तूफान में फँस कर आ गये। कुछ छोटी-छोटी मार्स मछलियाँ उत्तरीय अन्तरीप के आस-पास पाई जाती हैं और वहीं वे डूगांग कहलाती हैं। यह सभी मछलियाँ समुद्री पौदे, घोंघा, सीप आदि पर निर्वाह करती हैं।

अर्नेस्ट ने कहा, "नाव यात्रा के समय साथ में एक दूर्बीन, एक कुल्हाड़ी, एक कुतुबनुमा का होना आवश्यक रहता है।" मैंने उसके मत की पुष्टिकरण की और अपनी-अपनी नाव लेकर घर की ओर रवाना हो गये।

अध्याय ४४

हम लोग कठिनाई से तट तक पहुँचे ही थे कि भयंकर तूफान, आँधी और वर्षा आ गयी। मैं फ्रिट्ज की नाव के लिये बड़ा चिन्तित हो गया। लहरें पर्वतों से भी ऊँची-ऊँची उठने लगीं और नाव को बड़ा खतरा प्रतीत होने लगा। कभी-कभी अंधेरे बादलों से बिजली चमक कर चकाचौंध कर देती थी और कभी फिर सघन अंधकार अंधा बना रहा था। समुद्र की लहरों के आन्दोलन से हम लोग अत्यन्त भयभीत हो गये थे।

नाव में काफी जल भर गया था। मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब मृत्यु का अंक दूर नहीं है। प्राय: रक्षा का कोई भी उपाय न सूझ पड़ रहा था।

परन्तु भयंकर तूफान शीघ्र ही समाप्त हो गया। नाव के इधर-उधर के तूँबों ने उसे डूबने से बचाया। और पेंदी के वजन ने पलटने से रक्षा की।

मैं फ्रिट्ज की साँझ की प्रार्थना में व्यस्त हो गया। और छोटे-छोटे लड़कों को उत्साहित कर रहा था। धीरे-धीरे मैं सुर-क्षित खाड़ी की ओर पहुँच गया।

तट पर आते ही मैंने देखा कि फ्रिट्ज और उसकी माँ तथा बच्चे ताली पीट-पीट हमारे आगमन और फ्रिट्ज के आगमन पर हर्ष प्रकट कर रहे थे। और ईश्वर को धन्यवाद दे रहे थे।

कुछ भोजन करने के बाद नाव को घसीटकर तट पर ले आया। और जानवरों की सहायता से इसे गुफा में ले गया। आँधी के प्रभाव से सैकड़ों जहरीले जंगली फल गिरे हुए पड़े थे। हमारी अनुपस्थिति में सूअर ने घर में आकर बड़ा भारी नुकसान

अध्याय ४५

प्रात: काल अर्नेस्ट बतखों के कठहरे के पास से टहलता हुआ आता दिखाई दिया। उसके हाथ में एक कागज था। आकर माता-पिता के सामने घुटने टेककर निवेदन करने लगा, "श्रीमान् जी! सूचना बिलम्ब से आने के कारण आपका सेवक अबतक सेवा में उपस्थित न हो सका।"

हम पति-पत्नी उसकी बात पर हँस पड़े। मैंने समझ लिया कि यह एक मज़ाक करने वाला है। मैंने कहा, "शाबाश! मन्त्री जी, कहिये, राज्यपाल की सभा की क्या सूचना है? उसने कागज खोला और पढ़ने लगा।"

न्यूवेल्स के राज्यपाल की ओर से शिकरागृह और फैल्टीन के आदरणीय गवर्नर जनरल महोदय!

सेवा में,

ऐसी सूचना मिली है कि हमारे प्रान्त में लकड़बग्घों ने आक्रमण कर दिया है। और तीन आदमी शिकार पर जीवन निर्वाह के उद्देश्य से चल पड़े हैं। वे लकड़बग्घे बड़े ही भयानक और खतरनाक हैं और उन्होंने तमाम घरेलू बंदूकों को नष्ट कर दिया है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप उन शिकारियों को वापस बुला लीजिये। और स्वयं उन लकड़बग्घों को समाप्त करने के लिये चेष्टा कीजिये।

आपकी सर्वतोमुखी उन्नति का अभिलाषी
फिलिप फिलिप्सन, 'राज्यपाल'

[सिडनी पर से प्रेषित जैक्सन खाड़ी पर चौंतीसवें वर्ष का बारहवाँ महीना।]

मैंने कहा, "अर्नेस्ट ! क्या कोई पत्र फ्रिट्ज ने मेरे पास भेजा है ?"

अर्नेस्ट ने उत्तर दिया, 'नहीं पिता जी ! यह पत्र देर में आने वाले कबूतर ने दिया है। अन्धेरा हो चुका था। अन्यथा आपको हाल ही में यह सूचना मिलती। यह पत्र इस प्रकार है।"

आदरणीय पिता जी ! और पूजनीया माता जी, प्रिय अर्नेस्ट

मैंने फ्रैंक और कुत्तों की सहायता से एक बड़ा भयंकर लकड़-बग्घा मार डाला है। मेरा भोजन अब स्वादिष्ट नहीं रह गया है।

शेष आनन्द है।

आपका वात्सल्य भाजन
'फ्रिट्ज'

बालडेग १५

ठीक है। लेकिन उन लोगों ने लकड़बग्घे पर विजय कैसे प्राप्त कर ली है ?

दूसरे दिन शाम को दूसरा कबूतर अपने पंखों के नीचे एक पत्र लिये हुए आ गया। अर्नेस्ट उसे निकाला और पढ़कर सुनाया।

"रात शान्त रूप से पार हुई।
सवेरा बड़ा सुन्दर है।
हम बालडेग झील में नाव पर हैं।
हमने कुछ काले हंस पकड़ लिये हैं।
हमने एक साही ईगल पकड़ ली है।
कल हम प्रास्पेक्ट पहाड़ी पर पहुँच जायेंगे।
आशा है आप सकुशल हैं।"

आपके दयापात्र
'फ्रिट्ज, जैक और फ्रैंक'

इस प्रकार की सूचना पाकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ।

सायंकाल का भोजन हम लोग कर चुके थे कि दूसरा हरकारा आ पहुँचा। उसके पत्र में यह सूचना थी।

"गन्ने के खेत उजाड़ हो गये। लकड़ी का घर टूट गया है। मक्का का खेत बरबाद हो गया है। तीन सूराख तोप के गोले जैसे दिखलाई पड़ते हैं। पैरों का निशान बड़ी थाली जैसा प्रतीत होता है। इसलिये आप शीघ्र ही हमारी सहायता के लिये आ जाइये। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि आगे बढ़ूँ या पीछे लौटूँ अभी तक हम लोग सुरक्षित हैं। कोई खतरा नहीं सूझा है।"

मैं आश्चर्य से उछल पड़ा। झटपट ओनेग्रा पर काठी रखकर दौड़ पड़ा। पत्नी को दूसरे दिन सुबह आने को कहा।

मैं दो या ढाई घण्टे में ही उन तक पहुँच गया। मेरे लड़के इतनी जल्दी मेरा आना देखकर आश्चर्य में पड़ गये और बड़े खुश हो गये।

मैंने पैरों का निशान देखा, तुरन्त ही जान लिया कि यह हाथी के पैरों का चिह्न है। जहाँ मैं अपना दूसरा नया घर बनाना चाहता था वहाँ के वृक्ष भी तहस-नहस हो चुके थे।

गन्ने का खेत पूरी तरह नष्ट पड़ा था। बाँस की झोपड़ियाँ पृथ्वी पर टूटी पड़ी थीं। इसके अलावा भेड़ियों और कुत्तों के ढेर भी दिखलाई पड़ते थे।

नदी पर हमने अपना तम्बू लगा दिया और रात में हाथियों से सुरक्षित रहने के लिये निरन्तर आग जलाता रहा।

दूसरे दिन दोपहर को मेरी पत्नी और अर्नेस्ट भी अपनी स्लेज वाली गाड़ी पर बैठे हुए गधा और गाय को जोते आ पहुँचे।

मैंने वहाँ लगभग एक महीने तक ठहरने का निश्चय किया।

अध्याय ४६

मैंने उस स्थान पर बनाने का आयोजन किया। चार सीधे वृक्ष वर्गाकार रूप में प्रत्येक दिशा में लगभग बारह-बारह फुट घेरे हुए खड़े थे। उन्हीं पर लकड़ी के लम्बे लट्ठे रख कर मैं घर निर्माण करने का अनुष्ठान किया। छत नरकुल से ढककर ऐसी बना दी जिससे वर्षा का पानी न रुके। छोटे-छोटे तख्ते लगाकर हमने ऊपर तक चढ़ने की सीढ़ियाँ तैयार कर लीं।

उन पेड़ों के नीचे करीब-करीब छः फुट की ऊँचाई पर कुछ खजूर के लट्ठे जड़ दिये। इन पर हमारी पालतू चिड़ियाँ सुरक्षित रूप से निवास कर सकती थी। हंस दिन भर तालाब में तैरा करता था। शेष चिड़ियाँ हम लोगों से बिलकुल हिल गयीं थीं।

फ़िट्ज पूर्व की ओर से कुछ केले और नारियल ले आया। मैंने चखकर देखा केले बहुत स्वादिष्ट थे।

फ़िट्ज नावपर बैठकर अपने तीनों भाइयों के साथ शिकार करने के लिये चल दिया। सबने कुछ न कुछ शिकार किया। वापसी में फ़िट्ज एक जलमुर्गी बाँध लाया। इसे लोग 'सुल्तान मुर्ग' कहते हैं। उसके पैर लम्बे और लाल थे। सिर पर लाल धब्बा लगा हुआ था। पंख गहरे और चमकीले ही थे। गर्दन भूरी थी। बड़ी ही सुन्दर चिड़िया थी वह मेरी स्त्री इसे पाकर बहुत प्रसन्न हुई।

फ़िट्ज ने बतलाया कि नदी के उस पार की भूमि बड़ी ही उपजाऊ है। और चश्मे के आस-पास की जमीन और जंगल बड़े सुन्दर हैं। जंगल में लगभग बीस हाथी शाखायें तोड़ रहे थे। और कुछ अपनी सूँड़ से चश्मे का पानी अपनी पीठ पर फेंककर नहा रहे थे। एक तेंदुए जैसा चमकीली आँखों वाला पशु भी पानी

पी रहा था। मैं शीघ्र ही खतरे को दूर करने के अभिप्राय से लौट पड़ा। मैंने देखा काले रंग का एक बड़ा भारी जीव मुँह फैलाये हुए नाव की ओर बढ़ रहा था। मैंने डरकर बड़े जोर से नाव भगाई। मैं जान गया कि वह दरियायी घोड़ा था।

शाम के भोजन के बाद हमने दूसरे दिन सुबह चलने की तैयारी की। सब सामान बाँधकर ठीक कर लिया। फ्रिट्ज ने कहा, "मैं निराशा अन्तरीप होता हुआ शिकरागृह तक आऊँगा।"

प्रात:काल मार्ग में बड़ा सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखते हुए चल दिये। जैक एक घंटा पहले ही पहुँच गया था। फ्रिट्ज नहीं आया। वह कहीं निरस्या अन्तरीप में ही रुक गया था। हम लोगों ने घर पहुँचकर सब सामान नीचे उतारा। पत्नी ने शाम का भोजन तैयार कर दिया। और फ्रिट्ज भी प्रतीक्षा करने लगा।

शाम को हम लोग तटपर बैठे थे। तबतक दलदल की ओर से बड़े जोर की दहाड़ने की आवाज सुनाई पड़ी। कुत्ते भूँक पड़े। मैंने जैक से रायफल ले आने को कहा। सभी सतर्क हो गये। परन्तु फ्रिट्ज शान्त था। और मुस्करा रहा था। मैंने कहा यह कोई जंगली सूअर की आवाज है।

तबतक फ्रिट्ज की पैनी दृष्टि ने यह जान लिया कि यह अमेरिका के तेंदुए "जागा" की आवाज है। इसका चमड़ा बड़ा अच्छा होता है। इसलिये इसका शिकार अवश्य करना चाहिये।

फ्रिट्ज और जैक कुत्ते लेकर आगे चल पड़े। मैं जैक के साथ चल पड़ा। अर्नेस्ट और उसकी माँ घर पर शेष सामान की फिक्र में रह गये।

जैक ने अर्नेस्ट से पूछा कि यह जगुआ कैसा होता है। अर्नेस्ट ने कहा, "यह अमेरिका का चीता है।" जागा की आवाज से जैक बहुत डर गया था।

इस प्रकार इधर-उधर के कार्यों में दो दिन समाप्त हो गये। मेरी पत्नी ने कहा, "शिकारागृह नष्ट हो गया है। उसे फिर से ठीक करना चाहिये। शीघ्र ही हम इस आवश्यकता में लग गये। छत पर छाल बिछाकर तोप दिया। और इधर-उधर छज्जे लगा दिये। चारों तरफ से घने-घने पौधे लगाकर एक फाटक लगा दिया। इस प्रकार यह चिड़ियों का घोंसला न रहकर सुन्दर घर बन गया।

फ्रिट्ज शार्क लैण्ड को 'किले' के रूप में बनाना चाहता था। मैंने नाव पर रखकर तोप वहाँ पहुँचा दी। और उसे एक चट्टान पर लगा दिया। उसके कुछ पीछे एक गुम्बज बनाकर एक लाल और एक सफेद झण्डा लगा दिये। जो खतरे के और सुरक्षा के समय पर कुछ लहराया जाता था।

दो महीने के बाद हम लोगों ने खुशी का दिन मनाया। सफेद झण्डा फहराया गया तथा छः तोपों की फायरें की गईं।

अध्याय ४७

इस प्रकार मुझे इस बीच में रहते दस वर्ष व्यतीत हो गये। मेरे लड़के अब चतुर युवक हो गये थे। वे अपनी अवस्था के अन्य दीर्घ वयस्कों से अधिक होशियार हो गये थे।

जिन लोगों ने हमारे परिवार की घटनाओं को रुचि से पढ़ा है, वे ही कह सकते हैं कि कितनी घटनायें और आपत्तियाँ पार कर हम लोग इतनी सफलता पा सके।

हमारे 'फैल्टीन', और शिकरागृह बड़े सुन्दर स्वस्थ स्थान थे। प्रत्येक आवश्यक प्रबन्ध वहाँ पर हमारे लिये था।

भेड़ों और बकरियों के लिये गुप्तस्थल बना दिया था। चिड़ियों के लिये दरबा बन गया था। वृक्षों की शाखाओं पर मधु-मक्खियाँ पली हुई थीं। खेत पर आवश्यक अनाज बोया जाने लगा। मधु-मक्खियों के छत्तों पर छाया कर दी गई थी। और उपयोगी फल-फूलों के पौधे वहाँ पर उगा दिये गये थे। जिससे आसानी से मक्खी शहद एकत्रित कर सकें। इस प्रकार आकर्षक स्थान बन जाने के कारण शहद खानेवाली चिड़ियाँ इकट्ठी होने लगी थीं। वे इन मक्खियों को पकड़कर खा जाती थीं। मैंने उन चिड़ियों को पकड़कर अजायबघर के लिये रख छोड़ा। फैल्टीन हाउस की भी उन्नति हो गई थी। तरह-तरह के नये-नये घर और मार्ग बना लिये गये थे। चश्मे से बाँस के नल लगाकर अपने-अपने खेतों तक पानी पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया था। इससे सिंचाई का सुप्रबन्ध हो सकता था। दो मकान पास में बना-कर बीच का पथ पत्थरों से कूट दिया था। आस-पास फूल और बेली सजी हुई थी। चश्मा झलझलाता हुआ प्रवाहित हो रहा

था। चिड़ियाँ चहक रही थीं। पुष्प महँक रहे थे। मेरी कुटिया एक प्रकार का पृथ्वी पर बैकुण्ठ की कल्पना कर रही थी।

मैं और मेरी पत्नी स्वस्थ थे और प्रत्येक कार्य के करने की ख्वाहिश रखते थे। फ्रिट्ज अब चौबीस वर्ष का हो चुका था। बहुत लम्बा नहीं था परन्तु दृढ़ खूब था।

अर्नेस्ट बाईस वर्ष का था। शरीर से अधिक दृढ़ तो नहीं परन्तु काफी बुद्धिमान था। जैक उन्नीस वर्ष का था और बड़ा चुस्त था। जैक सत्रह वर्ष का काम-काजी लड़का था।

सारांश यह, सभी लड़के स्वस्थ, परिश्रमी, उच्च चरित्र के थे। उनमें हार्दिक भावनायें थीं। यह हमारे राबिन्सन् क्रूसो का समाज था। इन दस वर्षों में मैं अपने परिवार के लोगों को छोड़कर अन्य किसी मानव का मुख नहीं देखा था। फिर भी सभ्य जीवन में पुनः प्रवेश करने की इच्छा समाप्त नहीं हुई थी।

——

अध्याय ४८

समय के परिवर्तन के साथ-साथ लड़कों में भी परिवर्तन होता गया। वे कठिन से कठिन काम इतनी आसानी से कर सकते थे कि मैं स्वयं उनके रोब में आ जाता था।

फ्रिट्ज नाव लेकर समुद्र की यात्रा करने चला गया। उसने शाकलैण्ड पर आवास किया। एक दिन वहाँ से आकर उसने बतलाया कि कल शान्त समुद्र में मैं नाव लेकर गया था। मैंने मछलियों की अनेक हड्डियाँ और दाँत इकट्ठा किये। इन्हें मैं अजायब घर में रखने का विचार करता हूँ। खाड़ी की दूसरी ओर से कुछ घोंघे और सीपें इकट्ठी कर लाया हूँ। मैं इनमें से एक सीप खोली तो उसके मांस में लगा हुआ एक बड़ा भारी मोती पाया।

दूसरे दिन हम लोगों ने खेत देखने जाने का निश्चय किया और स्लेज गाड़ी लेकर वहाँ तक पहुँच गया।

एक दिन मैं अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ समुद्र में यात्रा कर रहा था। नीचे से एक चिड़िया आकर मेरी मस्तूल पर बैठ गयी। फ्रिट्ज ने उसे पकड़ लिया। देखा कि उसके पैर में एक कागज बँधा हुआ था। उसने उसे पढ़ा। उसमें लिखा था, "एक जहाज चट्टान से टकराकर बरबाद हो गया है। मैं निःसहाय अबला इस दुर्घटना से जान बचाकर जैसे-तैसे सीपी-घोंघे खाकर अब तक जीवित हूँ। प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरी यथासाध्य सहायता करें।"

हमने उस चिड़िया के पैर में एक पतली लकड़ी का टुकड़ा बाँध दिया। जिससे वह स्त्री यह समझ ले कि यह पक्षी किसी मनुष्य के

पास पहुँच चुका है। फिर उसे मुक्त कर दिया। वह उँचाई पर पश्चिम की ओर उड़ गया। मैंने लड़कों से कह दिया कि इस बात की सूचना अपनी माँ को न दें अन्यथा वह परेशान हो जायेंगी।

मोती की खानों से बहुत से मोती हम लोगों ने अपने-अपने झोलों में भर लिये। और घर वापस आ गये। मेरी स्त्री ने हर्ष से हम लोगों का स्वागत किया। और कुछ हँसी-मजाक के बाद हम सीप से मोती निकालने में व्यस्त हो गये।

अध्याय ४६

दूसरे दिन हम और कामों में लग गये नाव में बैठने के लिये सीटें लगा दीं।

फिर अपने साथ में दो लड़कों, बन्दर, गीदड़ और दोनों वीर कुत्तों को साथ में ले लिया।

चट्टान पार करने पर देखा कि वहाँ बहुत सी ह्वेल मछलियों के हड्डियों के ढाँचे और दाँत पड़े हुए थे। मैंने उन्हें इकट्ठा किया जिससे प्राकृतिक इतिहास के अजायबघर में रक्खे जा सकें। इसके बाद मैं उस खाई तक पहुँचे जिसमें फ्रिट्ज ने 'मोती की खाड़ी' का काम लिया था। आगे बढ़ने पर मुझे एक ऐसी चट्टान दिखलाई पड़ी जिसका अगला और ऊपर का भाग गिरजाघर की तरह था। अतः मैंने उस चट्टान का नाम 'गिरजा चट्टान' रख दिया। चपटी खाड़ी और गिरजा चट्टान के बीच में 'लिंकन खाड़ी' थी। जहाँ पर चीनी चिड़ियों के अनेक घोंसले दिखाई पड़े। तमाम चिड़ियों के झुण्ड इधर-उधर उड़ रहे थे। चट्टान पर सीढ़ी लगाकर चढ़ गया।

ये घोंसले चीन में खाने के काम आते हैं। और इनकी अच्छी कीमत मिलती है।

मैं बालूदार तट पर कुछ देर रुक कर घोंघे इकट्ठे कर लिये। कुछ देर वहीं लेट कर आराम करते रहे। कुछ समय व्यतीत हो जाने पर मैंने वहीं पर मक्का की रोटी आलू आदि खाने के लिये तैयार कर लिया। वहीं रात व्यतीत करने का विचार किया। और रात में आग जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठा कर ली नाव रोक दी। लकड़बग्घों की और अन्य पशुओं की खालें बल्ली के सहारे

से तान दी। जिससे ओस से रात में रक्षा हो सके। आराम से सो गये।

वहाँ से थोड़ी दूर तट पर मैंने घोंघा और सीप के पास एक सफेद चूर्ण फैला देखा। निरीक्षण के बाद ज्ञात हुआ कि यह सोडा है। क्षारीय गुण होने के कारण साबुन तैयार करने के लिये इकट्ठा कर लिया।

मैं अपने सांयकाल के प्रबन्ध के पश्चात् हम लोग तट पर कार्य में लग गये। फ्रिट्ज जङ्गल में शिकार करने चला गया। थोड़ी देर में फायरिंग की आवाज गूँज उठी। और फिर क्रमशः दो, तीन आवाजें सुनाई पड़ीं। अर्नेस्ट के साथ मैं भी चल पड़ा। जाकर देखा तो वह एक अफ्रीका का खतरनाक सूअर जमीन पर पड़ा बड़े जोर से चीख रहा था। फ्रिट्ज ने अपनी बन्दूक से घायल करके गिरा दिया था। और उसके द्वारा जमीन से खोये हुए आलू झोलों में इकट्ठा कर लाये थे। शाम हो गई थी। शाम का भोजन करके आराम की। कुत्ते पहरे पर रहे।

———

अध्याय ५०

दूसरे दिन सुबह ही मैं उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ वह भारी शिकार मरा हुआ पड़ा था। वह लगभग एक भैंस के बराबर था।

पेड़ों की शाखायें काटकर एक बड़ी स्लेज गाड़ी बना ली। उसी पर लाद कर सूअर को घर की ओर घसीट ले चले। बड़ी कठिनाई से हम लोग उसे तट तक ला सके। फ्रिट्ज ने बड़ी फुर्ती के साथ पूर्ण शक्ति के साथ इसमें सहयोग दिया।

सांयकाल का भोजन करने के पश्चात् हम लोगों ने अपनी रक्षा के लिये फिर लकड़ियाँ जला दी। अचानक ही एक भयंकर आवाज सुनाई पड़ी। ध्यान देकर सुना तो वह निकट की पहाड़ियों और चट्टानों से टकरा कर प्रति ध्वनित हो रही थी। मैंने सोचा यह कोई चट्टान या शिला गिरने की आवाज है। परन्तु वह एक बार फिर सुनाई दी। और निकट आती हुई प्रतीत होने लगी। सब लोग जग पड़े। आग जोरदार कर दी गयी। सब अपने-अपने नाव पर पहुँच गये। और अपनी-अपनी बन्दूकें हाथों में ले लीं। फ्रिट्ज नदी के मुहाने के पास दौड़ गया। और गायब हो गया। मैंने आग पर सारी लकड़ी डाल दी। और स्वयं शिकारी चाकू और बन्दूकें लेकर नाव पर खड़े हो गये।

कुत्ते और गीदड़ आग के पास लेटे हुए थे। उनके पास बन्दर डर से काँप रहे थे। कुत्ते भूँक रहे थे। मैंने सोचा कि शायद तेंदुआ होगा। जो मरे हुए सूअर की गन्ध से इधर चला आ रहा है। तब तक भेंड़ों के समूह में एक बड़ा भारी सिंह दिखायी पड़ा। ऐसा सिंह हमने पहले कभी नहीं देखा था। वह आग को देखकर और भी क्रोधित हो गया। और पिछले पैरों पर बैठकर खूनी

कुत्तों की ओर देख रहा था। और कभी भैंस की ओर। अचानक ही उसने मेरी ओर देखा। और तट पर से हमारी नाव तक कूदना चाहता था। पंजे उठाकर गुर्रा रहा था। और बालू पर बार-बार इधर-उधर पीछे हट कर कूदना चाहता था। तब तक फ्रिट्ज ने पेड़ों के झुण्ड से फायर कर दिया। वह जमीन पर गिर पड़ा।

लड़के शेर के शिकार से अत्यंत ही प्रसन्न हो रहे थे। और सभी जानवर खुशी से मुझे घेरे खड़े थे।

तब तक देखा एक और शेर आ रहा है। मैंने समझ लिया कि यह शेरनी होगी। तब तक फ्रिट्ज ने फायर करके उस शेरनी का पंजा तोड़ दिया। जब वह घायल हो गई तो कुत्ते उस पर दौड़ पड़े। और उस पर वार करने लगे। मैं कुत्तों के डर से फायर न कर सका। शेरनी जो बड़ी ही क्रोधित हो रही थी और बदला लेने के फेर में खड़ी थी एक पंजे से उसने बिल कुत्ते को घायल कर दिया मैं और फ्रिट्ज ने निकट जाकर देखा 'बिल' मरा पड़ा था। शेरनी भी उसे छापे हुये मृत पड़ी थी लड़के ने उनके कठोर पंजों और विशाल मुख को देखना शुरू किया। इनका डील-डौल बैल के बराबर था।

मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। मरे हुए कुत्ते को वहीं खोदकर दफन कर दिया। शाम निकट आ रही थी। सब लोग भूख से पीड़ित थे। अतः भोजन की ओर जल्दी करने लगे भोजन के बाद अर्नस्ट यह पत्तियाँ कुत्ते की कब्र पर रक्खीं।

'यहाँ दफन है'

"बिल"

"एक कुत्ता जो अपनी स्वामिभक्ति और साहस के लिये प्रसिद्ध था। एक भयंकर शेरनी के द्वारा आहत हुआ" "और विजय के क्षणों में वीर गति को प्राप्त हुआ।"

ठण्ढक पड़ रही थी। हम लोग खाँल और कपड़े लपेटकर आग के पास बैठ गये।

प्रात:काल सूर्योदय के समय हम लोग शेर और शेरनी का चमड़ा उतारने में लग गये।

इस बीच में शिकार करने के उद्देश्य से फ्रिट्ज कहीं चला गया था। मैं वहाँ से घर की ओर वापस चल पड़ा। मैं जानता था कि मेरी पत्नी मेरे अनुपस्थिति में बड़ी चिन्तित होगी। शीघ्र ही उसके पास पहुँच गया सभी सामग्री उतार कर घर पहुँचायी गई, तरह-तरह के लाये हुये बीजों को बोने में व्यस्त हो गई और शेर-शेरनी के चमड़े कमाने के लिये फैला दिये गये।

इस प्रकार से लगभग पाँच दिन व्यतीत हो गये। परन्तु फ्रिट्ज का पता न मिला। मेरे मस्तिष्क से उसकी चिन्ता कभी न हटती थी। अत: मैं उसको ढूँढ़ने के लिये चल पड़ा। मेरी स्त्री भी साथ चलने को तैयार हो गई। आगे चलने पर ऐसा जान पड़ा कि सामने एक चट्टान-सी तैर रही थी। मैं डर गया कि कहीं इससे टकरा न जाऊँ। परन्तु थोड़ी देर में फिर चट्टान समुद्र में गायब हो गई और फिर निकली। मैं समझ गया कि कोई बड़ी मछली है। अत: उसपर फायर कर दिया। वह घायल होकर बालू पर गिर पड़ी।

लड़कों से मैंने बतलाया कि यह 'कैचलाट' मछली है। लगभग चालीस फिट लम्बी थी। अकस्मात थोड़ी ही दूर पर कुछ देखकर मेरा हृदय धड़क उठा। एक जंगली आदमी चट्टान पर बैठा था। अकस्मात गायब भी हो गया।

कई जंगली भाषाओं में उसे पुकारा और इस बात का प्रयत्न किया कि उसका सहयोग प्राप्त कर सकूँ। थोड़ी ही देर में हाथ में हरा छाल लिये हुए वह मेरी ओर आता हुआ दिखाई पड़ा। निकट आने पर ज्ञात हुआ वह जंगली नहीं फ्रिट्ज था। सबने खुशी से एक दूसरे को गले से लगाया।

अध्याय ५१

लड़कों ने फ्रिट्ज से प्रश्न पर प्रश्न करने शुरू किये। कुत्ते भी अपने स्वामी को देखकर भूँकने लगे। इस अंग्रेज स्त्री से मिलने के लिये ही मैं भेष बदले हुए था। उसने कहा, "रात को इस द्वीप तक गया भी पर कुछ पता न लगा।"

कुशल पूछने के पश्चात् हम उसे लेकर एक विचित्र स्थान पर पहुँचे। एक घने जंगल में ताड़ के वृक्षों के नीचे एक झोपड़ी थी। उसके निकट ही एक आदमी पेड़ से नीचे उतर रहा था। फ्रिट्ज ने हम लोगों का उससे परिचय कराया। सब लड़कों ने एक साथ बैठकर भोजन किया। उसने अपना नाम सर एडवर्ड बतलाया। कुछ देर बात-चीत के बाद हम लोग सोने के लिये चल दिये।

फ्रिट्ज ने अपने भाइयों से सब समाचार बताने प्रारम्भ किये। अपने पिछले पाँच दिनों का हाल बताते समय वह सर एडवर्ड के स्थान पर "मिस जेनी" कह जाता था और अक्सर कह देता था कि बिचारी "अंग्रेज स्त्री बहुत परेशान हो गई।" लड़कों ने शीघ्र भेद समझ लिया।

लड़कों ने अन्त में कह ही दिया, "फ्रिट्ज! क्या सर एडवर्ड एकदम मिस जेनी में बदल गये? हम समझते हैं यह भाई साहब नहीं बहन जी हैं।"

प्रात: दूसरे ही लड़कों ने उसे बहन जी कह कर सम्बोधित करना शुरू किया। सुबह का नाश्ता तैयार हो गया। सभी बैठकर जेनी के साथ भोजन किया। मैं प्रात:काल उठकर "कैचलाट" मछली की ओर बालू के तट की ओर चला। वहाँ देखा भेड़िये खा रहे थे। मिस जेनी मेरी स्त्री के साथ काम में लग गयीं। दोपहर के

नव दिनों के पश्चात् हम लोग मिस जेनी के साथ घर चलने को तैयार हुए। उसने पड़ोस की झाड़ी से तमाम सामान लेकर दिखाया। जो कुछ उसने बर्बाद जहाज से लाकर और इधर-उधर से इतने दिनों में इकट्ठा किया था। कपड़े, घोंघे, सीपें और अन्य गृह की वस्तुएँ उसके पास थीं। बहुत से बाँधों के बीज भी थे। एक लालटेन के अन्दर कई मूल्यवान वस्तुएँ भी थीं। कपड़े, मोजे झोले हैट आदि तमाम सामान उसने तैयार कर रक्खा था। इसके पास केवल एक सोने की कंघी थी और दो मोती!

एक और सुन्दर वस्तु मिस जेनी ने दिखायी। वह था कापटैन्ट पत्ती। उसने बतलाया यह चीन की भाँति सिखलायी हुई चिड़िया है। और हमारे लिये मछली पकड़ लाती है।

अपना और मिस जेनी का सामान दोनों नावों पर लाद लिया। शाम हो जाने पर तट पर पहुँचकर वह अपना तम्बू लगा दिया। मिस जेनी ने अपनी चिड़िया की सहायता से नाव पर कुछ ही दूर चलकर तमाम मछलियाँ इकट्ठा कर ली थीं। और हम लोगों को शाम का भोजन तैयार करके दिया।

मैंने मोतियों का एक हार बनाकर "मिस जेनी" को भेंट करना चाहा, परन्तु उन्होंने इनकार कर दिया। शाम हो गई थी। सब लोग अपने-अपने बिस्तर पर पहुँच चुके थे। फ्रिट्ज ने पिछली घटनाओं का वर्णन करना शुरू किया उसने कहा—

"जब मैं यहाँ से चला तो समुद्र बिलकुल शान्त था। मैं बढ़ता चला गया। मेरे हृदय में उस अंग्रेज महिला की सहायता की आकांक्षा भरी हुई थी जिसका पत्र एक बार पत्ती ले आया था। चट्टानों भरे तट के निकट होता हुआ मैं आगे बढ़ता गया। अन्त में शाम होने पर तट पर ठहरा।

वहाँ एक चीते से मुठभेड़ हो गई। उसका गर्जन बहुत भयंकर था। मैं तो काँप उठा। इस गाढ़े समय में शिकरे ने मेरी सहायता

की। यह दौड़कर चीते के सिरपर बैठ गया। उसने चीते की आँखें फोड़ दी। उसी समय मैंने फायर किया। वह मरकर गिर पड़ा। मुझे नाव पर से बड़े-बड़े विचित्र चीज दिखलाई पड़ रहे थे। कहीं जंगलों में शेर, हाथी, गैंडा, चीता, मगर, दरियायी घोड़ा आदि इधर-उधर झील-जल में विचरण कर रहे थे। अन्त में मैं एक चट्टान के पास पहुँचा। वहाँ कुछ मनुष्यों के पद-चिह्न दिखलाई पड़े। मैं और आगे बढ़ा। धुआँ वाले पहाड़ की ओर चलते हुए मुझे ऐसा संदेह हो रहा था कि वह ज्वालामुखी पर्वत है। परन्तु आगे देखा कि आग के पास एक छोटी लड़की बैठी हुई है। मुझको देखकर वह प्रसन्न हो गई। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसने मेरा स्वागत किया। और अपनी सारी सामग्री दिखलाई।"

— —

अध्याय ५२

आधी राततक फ्रिट्ज अपनी यात्रा का वर्णन सुनाता रहा। उसके बाद मिस जेनी ने भी अपनी दुखद कहानी प्रारम्भ की—

"जब मैं सात वर्ष की थी मेरे पिता मान्ट्रोस इंगलैण्ड से भारतवर्ष को सेनापति बनाकर भेजे गये। वहीं मैं पली। मेरी माता का देहावसान उसी समय हो गया। जब मैं सात वर्ष की थी।

जब मैं सत्रह वर्ष की हुई तो मेरे पिता जी ने सेना से अवकाश ले लिया। मैं भारत से "कप्तान ग्रीन लैण्ड" जहाज पर इंगलैण्ड भेजी गयी। मार्ग में जहाज एक चट्टान से टकरा गया। मैं भाग्यवश जीवित बची। एक बालू वाले तट पर चौबीस घंटे चिड़ियों के अण्डे ही खाकर पड़ी रही। बाद में बड़ी कठिनाइयों के साथ इस स्थान पर पहुँची। मैं सोच रही थी कि किसी प्रकार किसी मनुष्य को मेरी सूचना मिले। इसी उद्देश्य को लेकर मैंने चिड़िया द्वारा यह पत्र भेजा था। मैं उस एकान्त स्थान पर दो वर्ष से रह रही थी। यही मेरी कहानी है।"

मैंने कहा, "पुत्री! कभी यह नहीं समझना चाहिये कि मैं भी कुछ हूँ। मनुष्य तभी तक यह सोचता है जब तक वह अपने आपको भाग्य का खिलौना समझता है। कालचक्र मनुष्य को उठाता-गिराता रहता है। तुम कह सकती हो कि हम लोग तुम्हारे लिये बच गये। कौन जानता है?"

मेरी पत्नी ने कहा, "बेटी! मैं तुमको पाकर बड़ी प्रसन्न हूँ। मैं समझती हूँ कि रात-काम धन्धे में मुझे जो कठिनाइयाँ पड़ती थीं अब दूर हो गईं। ईश्वर को धन्यवाद है।"

हम घर की ओर चल पड़े। घर के निकट आते ही "मिस जेनी" से लड़कों ने घर की ओर संकेत करके बताना तरह-तरह शुरू कर दिया। जेनी घर देखकर बड़ी खुशी हुई। वह पालतू जानवरों को देखकर लड़कपन के भाव से उनसे प्यार करने लगी। मैंने उसको फालटन हाउस अंतरीप, खेत और बालडेग तथा खून रूपी स्थान दिखलाये।

घर पर एक साथ रहते हुए जेनी ने मेरी पत्नी और मेरे बीच आदर का स्थान प्राप्त कर लिया था।

दूसरे दिन प्रातः काल हम लोग शिकरा गृह का निरीक्षण करने के लिये चल पड़े। जैक अपने घोड़े पर सवार हो लिया और थोड़ी ही देर बाद गायब हो गया। हम सब लोग भी धीरे-धीरे पहुँच गये। आपस में पुरानी बातों पर वार्तालाप होता रहा।

वर्षा ऋतु समीप आ रही थी। जेनी ने नरकुल इकट्ठा करके अनेक चटाइयाँ तैयार कर लीं। इनसे वर्षा और सर्दी से बड़ी रक्षा हुई। लड़के यह फिक्र कर रहे थे कि वर्षाऋतु में हम लोग मिस जेनी से अंग्रेजी भाषा का शुद्ध उच्चारण सीखेंगे।

अध्याय ५३

वर्षा ऋतु यथासमय समाप्त हुई। आकाश स्वच्छ हो गया। हम घोसलों से चिड़ियों की भाँति उड़-उड़कर अपने काम में व्यस्त हो गये। फ्रिट्ज और जैक शार्क द्वीप पर चले गये। वहाँ तोपों की सफाई करके कई फायर किये। अकस्मात् उत्तर पश्चिम से अन्य तीन तोपों की आवाज हमारे कान में गूँज उठी। सब लोग चिंतित हो गये। क्या यह किसी यातप वासी जहाज की तानों की आवाज है? रात भर हम दूसरी आवाज आने की प्रतीक्षा करते रहे। परन्तु इस बीच बड़े जोरों से आँधी आ गई। वर्षा प्रारम्भ हो गई। इस दशा में केवल समुद्र और वायु का गर्जन ही सुनाई पड़ता था। यह हाल दो दिन तक बना रहा और हम कोई दूसरा संकेत न पा सके।

तीसरे दिन हम जैक को लेकर शार्क द्वीप पर गये और वहाँ से फिर तोपें दागी गईं। एक आवाज के उत्तर में हमको उधर से साफ आवाजें सुनाई पड़ीं। हमारा हृदय प्रसन्नता से भर गया।

सब लड़के इधर-उधर दौड़ पड़े। "क्या कोई योरप का जहाज आ गया है। 'मिस जेनी' खुशी से गा उठी। उसे जान पड़ा कि शायद उसका पिता उसे ढूँढ़ने चला आ रहा है।"

मैं फ्रिट्ज को साथ लेकर उस जहाज का पता लगाने नाव द्वारा जाने की योजना बनाने लगा।

घर पर सबको सावधानी से रहने का आदेश देकर फ्रिट्ज के साथ नाव लेकर मैं चल पड़ा। साथ में हम लोग बन्दूकें भी लिए थे। जिसमें अगर कोई शत्रु भागा तो हम लोग वार करेंगे।

सुरक्षित खाड़ी की ओर हम लोग तेजी से नाव चलाते हुये गये। बतख वाले दलदल का तट पार कर आगे बढ़े। थोड़ी ही दूर पर जहाज का अंग्रेजी झण्डा दिखलाई पड़ने लगा। जहाज तट पर लंगर डाले खड़ा था उसकी मरम्मत हो रही थी उस पर खलासी दूर से ही दिखलाई पड़ रहे थे मैंने दूर्बीन से देखा तट पर तीन तम्बू लगे हुये थे।

तब फ्रिट्ज ने दूर्बीन से देखा और कहा, "वह देखो, कोई सफेद चेहरेवाला डेक खड़ा है यह योरप के ही लोग हैं। अब मेरे विचार से यह स्वयं जहाज का कप्तान है।"

मैंने एक स्विटजर लैण्ड देश का गाना गाया। जहाज के लोगों ने रूमाल के इशारे हमें पास बुलाया। इशारे से पूछा कि "तुम कौन हो ? कहाँ से आये ?" "इस देश का क्या नाम है ?" मेरा उत्तर था "अंग्रेज" कप्तान ने आलू, अंजीर और नारियल के फलों के विषय में पूछा तो मैंने इन सबकी बावत बतलाया। मैं शीघ्र ही घर वापस आया और परिवार के लोगों से सब समाचार कहा। वे सब बड़े प्रसन्न हो गये। मानों उन्हें नई जिन्दगी मिल गई।

सारी शाम प्रसन्नता भरी बातें होती रहीं। मेरी स्त्री ने कहा मैं भी अन्य लोगों से मिलूँगी और कुछ चीजों का लेन-देन करूँगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही हम लोग अपनी तैयारियाँ करने लगे। बहुत सा सामान साथ लिया गया। फ्रिट्ज ने अपने नाविक के कपड़े पहन लिये और नाव तैयार कर ली। सुरक्षित खाड़ी से होते हुये हम लोग जहाज की ओर चल पड़े। निकट पहुँचकर नाव रोक दी। उतर कर पैदल चले, जहाज पर पहुँचकर नाविक को नमस्ते किया।

उसने बड़ी नम्रता का व्यवहार किया। हम सबको अपने कमरे में ले गया और बोला, "जहाँ जंगली लोगों के मिलने की आशंका थी वहाँ आप लोग कैसे ?"

मैंने थोड़े से थोड़े शब्दों में सभी घटनाओं का क्रम बतलाया और साथ ही मैंने मिस जेनी का परिचय दिया। मैं सोचता था वह एक प्रसिद्ध सेनापति की लड़की है। अतः उसका नाम राबिन्सन के परिवार की अपेक्षा अधिक प्रसिद्ध होगा। बात ऐसी ही निकली भी। उसने जेनी का नाम सुनकर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया और कहा, "यह तो आज से तीन साल की पुरानी बात है।"

मैंने कप्तान को अपने परिवार की तरफ से घर पर आमन्त्रित किया। वह आया। हम लोगों ने उसका खाड़ी पर स्वागत किया उसके साथ जहाज के कई अफसर थे हम लोगों ने साथ बैठकर भोजन किया और रात को सब लोगों ने एक साथ रुकने का वादा किया।

मेरी स्त्री ने मुझसे कहा, "हम और तुम तथा दो लड़के इसी द्वीप पर रुकेंगे। दो लड़के योरप चले जायँ और वहाँ से कुछ सभ्य आदमियों को भेज दें वे लोग यहाँ निवास करेंगे और इस द्वीप का नाम अमर करेंगे। "न्यू स्विटजरलैण्ड"

मैंने कप्तान से उस द्वीप को अपनी सुरक्षा के अन्तर्गत लेने की प्रार्थना की। अब मैं सोच रहा था कि मुझे सभी लड़के समान ही प्रिय हैं।

मैं किन दो लड़कों को उनमें से पृथक करके योरप भेजूँ अतः मैंने स्वयं उनसे सलाह लेने का विचार किया। कप्तान ने साथियों के साथ आकर हमारे निवास स्थानों को देखा। अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य ने उसके हृदय पर गहरा प्रभाव डाल दिया था। सुबह के समय प्रातःकाल के समीरण में अँग्रेजी झण्डा

फैल्टीन द्वीप पर फहरा रहा था। तोपों की आवाजों से उसका स्वागत किया जा रहा था।

जहाज पर यात्रा करती हुई एक महिला सल्सान ने कहा, "स्वर्ग जैसा स्थान है यहाँ आप लोग बड़ी प्रसन्नता से रहते होंगे।"

उसकी एक लड़की ने कहा, "वास्तव में यह स्थान बैकुंठ है हम लोगों ने अन्य स्थान उनको क्रमशः दिखलाये। हमारे निवास-स्थान पर एक प्रकार का मेला सा लग गया। वे लोग उन सब को देखकर भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

श्रीमती वूल्सट्न ने अपने पति से कहा, "मेरा विचार है कि हम लोग इसी द्वीप पर निवास करें जहाँ की प्रत्येक वस्तु इतनी सुन्दर है।"

मैंने कहा, "अवश्य, आप लोग इस न्यूस्विटजरलैण्ड में ही वास करें। वे सबके सब चिल्ला पड़े न्यूस्विटजरलैण्ड चिर जीवी रहे।"

मैंने कहा, "फ्रिट्ज इंगलैण्ड जायगा। वह यात्रा में कुशल भी है। और जब कभी चाहेगा अपनी माता-पिता के पास फिर आ सकता है।"

"आओ मेरे बच्चे" "तुम्हारे साथ में मेरा आशीर्वाद और करुणा-कलित हृदय है" अर्नेस्ट यहाँ रहेगा जीन्यू स्विटजरलैण्ड के पुरातात्विक इतिहास का प्रोफेसर होगा।

जैक यहीं ठहरेगा। वह अच्छा सवार शिकारी है। और सतर्क लड़का है। फ्रिट्ज तो गया।

फ्रैंक ने कहा, "मैं भी इंगलैण्ड जाऊँगा और वहाँ के विद्यालयों में कुछ अध्ययन करूँगा।" मैंने हृदय से आशीर्वाद के साथ उसे भी अनुमति दे दी।

कप्तान साहब से जब बात-चीत हुई तो उसने कहा मैं बरबाद जहाज के लोगों का पता लगाने ही निकला। मेरे तीन साथी

उसी के साथ ला पता हैं। तीन आप लोगों में से पा गया हूँ। इतने ही लोगों के लिये मेरे पास भोजन सामग्री है।

जहाज के कप्तान ने सुरक्षित खाड़ी में ही रोक दिया था। जिससे हम लोग उस पर अपना सामान लाद सके। लड़कों के कपड़े मोती आदि अन्य सामान जो उन दोनों के पास था। उसी पर रख दिया गया।

मैंने कप्तान से कुछ सामग्री के बदले बंदूकें और बारूद ले लिये। बहुत सी खाद्य सामग्री जहाज पर रख दी। बहुत से ताजे फल उस पर लाद दिये।

"प्रसन्नता उदार होती है। मैंने लड़कों को आवश्यक धर्म के पथ पर चलने की शिक्षा दी, मुझे अपने बच्चों से बिछुड़ने का दुःख अवश्य था। परन्तु हर्ष यह था कि वे भविष्य में उन्नति के पथ पर जा रहे हैं।"

सायंकाल को मैंने सभी जहाज के यात्रियों को विदाई का प्रीत-भोज दिया। और उनके सामने फ्रिट्ज को अपनी डायरी दे दी। मैंने कहा, "बेटा! इसे सँभाल कर रक्खो। योरप में इसके प्रकाशन से बहुत लाभ है।"

मैंने कहा, "मुझे विश्वास है कि मेरा संसार से इतना व्यतीत किये हुए मेरे जीवन का विवरण संसार के लिये लाभदायक सिद्ध होगा।"

जब नवयुवक इसे पढ़ेंगे तो इससे स्पष्ट लाभ उठायेंगे। लघु-वयस्क बालक इससे बड़ी अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे।

मेरे चार लड़के, संसार के चारों प्रकार के लड़कों में से हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है इससे परिवार के लोगों को एक नया संदेश प्राप्त हो जायगा।

मैंने यह पुस्तक किसी शिक्षक की भाँति नहीं लिखी है। यह तो एक वर्णनात्मक लेख है। जो कुछ हुआ है यहाँ उसी का क्रमबद्ध

वर्णन मात्र है। मेरा जीवन इस द्वीप पर विशेष परिस्थिति में बीता है। मैंने बच्चों को तीन प्रकार का ज्ञान समझाया। पहली बात, "अच्छे विचारों में पूर्ण संतोष," दूसरी बात, "निरन्तर पुरुषार्थ और संलग्नता" तीसरी बात, "स्वार्थ परता का त्याग।"

अब बहुत विलम्ब हो गया।

प्रिय योरप विदाई! प्रिय स्विटजरलैण्ड विदाई!! ईश्वर हम लोगों पर कृपा रक्खे। उसके बिना हमें लाभ कुछ नहीं है।"

न्यू स्विटजरलैण्ड युगों तक आबाद रहे, और उसी प्रकार धन-धान्य से परिपूर्ण रहे जैसे कि हमारी मातृभूमि है। ईश्वर से हमारी यह प्रार्थना है कि इस देश के निवासी सदैव, प्रसन्न, पवित्र, सच्चरित्र और स्वतंत्र रहें।

——